CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनी

वाजिद अली शाह

...ालय
...णसी-५

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनी

अवध के नवाब वाजिद अली शाह 'अख़्तर' द्वारा रचित अनेक पुस्तकों में 'बनी' का विशिष्ट स्थान है। 'बनी' का शाब्दिक अर्थ है, 'दुल्हन', और इसकी रचना बादशाह ने सन् 1877 में निर्देशक अथवा गुरु की हैसियत से की। इसमें गायन, वादन, नृत्य एवं नाट्य (रहस तथा भड़ैती) पर जो सामग्री प्रस्तुत की गयी है उसका ऐतिहासिक महत्व है। उर्दू, हिन्दी, ब्रज, अवधी, बंगाली, फ़ारसी आदि अनेक भाषाओं के मोतियों को संगीत के धागे में पिरोकर लेखक ने पुस्तक को छह अध्यायों में विभाजित किया है—सुर, ताल, नृत्य, रहस, भड़ैती तथा महलात व बेगमात के ख़िताब। उपनाम 'अख़्तर' के नाम से रचित ध्रुवपद, होरी-धमार, ख़्याल, ठुमरी, दादरों की बन्दिशें, कथक तथा कहरवा नृत्यों की चित्रों सहित नृत्य-गतें तथा अवध के सांस्कृतिक वैभव की गंगा-जमुनी तहज़ीब पर आधारित कृष्ण-लीलाओं व नक़लों का विस्तृत वर्णन पुस्तक में किया गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

6.1

डा० प्रेमलता शर्मा को
सादर भेंट

अ: 1/60

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाजिद अली शाह रचित पुस्तक

बनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाजिद अली शाह रचित पुस्तक

बनी

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

रूपान्तर

रौशन तक़ी

डॉ० कृष्ण मोहन सक्सेना

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी

कैसरबाग, लखनऊ—226 001

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

BANI

Translated by Roshan Taqi & Dr. Krishna Mohan Saxena

पुस्तक सज्जा एवं आवरण : जमील अख्तर

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : रु० 130.00 मात्र

प्रथम संस्करण : 1987

प्रकाशक : उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी
कैसरबाग, लखनऊ—226 001

मुद्रक : पूनार मुद्रक
117, नजीराबाद, लखनऊ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भारतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

अनुक्रम

	पृष्ठ संख्या
अकादमी की ओर से	ix
प्राक्कथन	1-8
भूमिका	9-30
संक्षिप्त परिचय	9
व्यक्तित्व	11
शासनकाल	14
'बनी' का रचनाकाल	18
'बनी' की रचना	19
वाजिद अली शाह, ललित कलायें और कुछ भ्रान्तियां	21
कुछ भ्रान्तियां तथा निवारण	23
कुछ महानुभावों के विचार	26
भाषा	27
वाजिद अली शाह रचित पुस्तक 'बनी'	
पहला अध्याय—सुर	31-62
भूमिका	31
बाब पहला यानी सुर अध्याय	34

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरा अध्याय—ताल	63-66
भूमिका	63
बाब दूसरा यानी ताल अध्याय	65
तीसरा अध्याय—रहस	67-78
भूमिका	67
बाब तीसरा यानी अध्याय तीन	68
चौथा अध्याय—रहस विस्तृत	79-112
भूमिका	79
बाब चौथा यानी अध्याय चार	81
फ़सल पहली छत्तीस ईजादी रहसों में	81
पहला किस्सा राधा और कन्हैया का	91
दूसरा किस्सा राधा और कन्हैया का	105
पांचवां अध्याय—नक़ल	113-172
भूमिका	113
बाब पांचवां यानी अध्याय पांच	115
भँड़ैती और नक़लें मज़हक में	115
फ़सल पहली भँड़ैतियों में	116
फ़सल दूसरी	117
फ़सल तीसरी	118
फ़सल चौथी	119
फ़सल पांचवीं	121
फ़सल छठी-सातवीं चन्द नक़लों में	159
फ़सल आठवीं	164
बच्चों का खेल	168
लतीफ़ा	168
फ़सल नवीं	170

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

छठा अध्याय—ख़िताब	173-204
भूमिका	173
बाब छह यानी छठा अध्याय	175
फ़सल पहली—राधा मंजिलवालियां	175
शारदा मंजिलवालियाँ	177
सुलतानखानेवालियाँ	178
खास मंजिलवालियाँ	180
दीग़र ममतुआत	192
फ़सल दूसरी	194
क़ानूने अख्तरी	197
परिशिष्ट—एक	205
परिशिष्ट—दो	211
संदर्भ	213

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

अकादमी की ओर से

उत्तर प्रदेश में अवध, और अवध में लखनऊ गंगा-जमुनी संस्कृति का गढ़ रहा है। अवध में नवाबों के शासनकाल में नवाब आसफ़ुद्दौला के समय से ही लखनऊ कला और संस्कृति का केन्द्र बनने लगा। धीरे-धीरे संगीत और नृत्य लखनऊ में परवान चढ़ता गया और अवध के आखिरी नवाब वाजिद अली शाह का दौर आते-आते लखनऊ पूरी तरह से संगीत, नृत्य व अन्य प्रदर्श्यकारी कलाओं का केन्द्र-बिन्दु हो गया। देश भर के विख्यात कलाकार लखनऊ के कला-प्रेमी शासकों का संरक्षण प्राप्त करने के निमित्त यहां आकर बसने लगे।

वाजिद अली शाह के गद्दी पर बैठते ही लखनऊ आकण्ठ संगीत और नृत्य-कला में डूब गया। स्वयं वाजिद अली शाह एक गुणी कलाकार और गुण ग्राहक थे। वह एक उत्कृष्ट कोटि के शायर, लेखक, संगीतकार व नर्तक भी थे। उनका दरबार तो कलाकारों का अखाड़ा बन गया था। शायरी के लिए वह अपने उपनाम 'अख्तर' का प्रयोग करते थे। जब तक वह लखनऊ में रहे, शासन-कार्यों के साथ-साथ वह साहित्य-कला-साधना में जुटे रहे। तख्त से माज़ूल कर दिये जाने के बाद उन्हें मटियाबुर्ज, कलकत्ता में नज़रबन्द कर दिया गया। नज़रबन्दी समाप्त होने के बाद सन् 1858 से लेकर अपने अन्तिम समय तक वह लगातार पुस्तक-लेखन और कला-साधना में तल्लीन रहे और अपने पूरे जीवन में लगभग 100 पुस्तकों की रचना की जिनमें प्रमुख हैं— हुज्ने अख्तर, मसनवी अफ़साना-ए-इश्क़, कुल्लियात-ए-अख्तर, बह्र-ए-उल्फ़त, दरिया-ए-ताश्शुक़, सौतुल मुबारक़, नसाइहे अख्तरी, चंचल नाज़नीन, बयान अहल-ए-बैत, जौहरे-उरूज़, बनी, नाजो, दुल्हन आदि। इन पुस्तकों में उनकी आत्म-कथा है, संगीत है, शेर-ओ-शायरी है, रहस है, नाटक भी हैं।

वाजिद अली शाह रचित तमाम पुस्तकों में 'बनी' का अपना एक विशिष्ट स्थान है। 'बनी' का शाब्दिक अर्थ है, 'दुल्हन', और इसकी रचना बादशाह ने सन् 1877 में गुरू अथवा निर्देशक की हैसियत से की थी। इसमें गायन, वादन, नृत्य एवं नाट्य (रहस तथा भड़ैती) पर जो सामग्री प्रस्तुत की गयी है, उसका ऐतिहासिक महत्व है। उर्दू, हिन्दी, ब्रज, अवधी, अरबी, फ़ारसी, बंगला आदि अनेक भाषाओं के मोतियों को संगीत के धागे में पिरोकर लेखक ने पुस्तक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को छह 'बाब' यानी अध्यायों में विभाजित किया है—सुर, ताल, नृत्य, रहस, नक़ल तथा महलात व बेगमात के खिताब। उपनाम 'अख्तर' के नाम से रचित ध्रुवपद, होरी-धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरों की बन्दिशें, कथक तथा कहरवा नृत्य की चित्रों सहित नृत्य-गतें तथा अवध के सांस्कृतिक वैभव की गंगा-जमुनी तहजीब पर आधारित कृष्णलीलाओं व नक़लों का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, फलतः 'बनो' मात्र एक साहित्यिक कृति ही नहीं, ऐतिहासिक महत्व की विशिष्ट एवं दुर्लभ कृति के रूप में सामने आती है। यह अवध के सांस्कृतिक इतिहास की झलक प्रस्तुत करती है। इसका सांगीतिक वैभव अद्‌भुत है। रहस और नक़लें उस युग के लखनऊ को जीवन्त रूप में प्रस्तुत कर पाने में सक्षम हैं।

प्रस्तुत पुस्तक मूल 'बनी' के हिन्दी अनुवाद के रूप में पाठकों के समक्ष आ रही है जिसे रूपान्तरकारों ने बड़े श्रम से तैयार किया है। पाण्डुलिपि को देखकर मैं यह अवश्य कहूंगा कि यह केवल रूपान्तर ही नहीं, बल्कि मूल पुस्तक का 'हीर' निकालकर इसे एक महत्वपूर्ण संकलन में प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर प्रदेश की संगीत, नृत्य व अन्य प्रदर्शयकारी कलाओं, विशेषकर लुप्तप्राय ऐसी कलाओं का उन्नयन, प्रचार-प्रसार करना अकादमी का मूल उद्देश्य रहा है। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर अकादमी द्वारा 'बनी' का प्रकाशन अकादमी की प्रकाशन योजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। विश्वास है कि इस महत्वपूर्ण दुर्लभ कृति 'बनी' का अपेक्षित स्वागत विद्वानों एवं अध्येताओं द्वारा व्यापक स्तर पर किया जायेगा।

रामनवमी
7 अप्रैल, 1987

—विश्वनाथ वि० श्रीखण्डे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

بسم اللہ الرحمن الرحیم

بعد حمد خالق ہفت پیکر اور نعت سید خیر البشر اور منقبت حیدر
واجد علی شاہ اختر خدمت طالبین اور شائقین میں عرض
کرتا ہے۔ وادیٔ الالاع دہی میں پانوں دھرتا ہے۔ ما قبل اسکے
دو کتابیں ناجو اور ڈھنگ تصنیف ہو چکی ہیں جیش الوسیع سنگیتو دیا
مگر ان میں فقط آستائی انتری ہیں۔ یادداشت کی کبھی گرائی
ہیں۔ البتہ سیر باغ نہیں ہے عشق اور عاشقی کا داغ نہیں ہے۔

आख़िरी ताजदार-ए-अवध नवाब वाजिद अली शाह 'अख़्तर'
रचित पुस्तक 'बनी' की भूमिका का पहला पृष्ठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

اکثر ناظرین اوسی طعام بی نمک جانتی ہین نری اقسم
کی بک بک جانتی ہین البتہ اسکی مطالعہ سی لطف اوٹہی گا
جو پڑہیگا آپی ہین نرہی گا ہر چند وہ دونو جلدین بہی
میری سرکار مین رائگان نہین گئین سب وہ پڑہا اور ٹہہریان
وغیرہ باقاعدہ نہرہ جمالون نی یاد کین مگر اسکا رنگ نیا ہے
جو نقل اور قصہ ہی ایک تازہ گل کہلا ہی بال کی کہال کہینچی ہی
ہندی کی چندی کی ہی انصاف طبّاعونکی ہاتہہ ہی میرا تو
بنگالیونکا ساتہہ ہی مُقفّٰی مسجّع عبارتکا خیال نہین کیا مگر
کسی مطلب کو ہاتہہ سی جانی نہین دیا بلکہ اسی لحاظ سی ترک
منظور ہوا کہ مطلب جائی عبارت آرائی سی کسی کو سرِ مو شبہہ نہ آئی
اسکا نام بنی ہی حقیقت مین بنی ٹہنی ہی اور اس مین چہہ باب ہین

आख़िरी ताजदार-ए-अवध नवाब वाजिद अली शाह 'अख्तर'
रचित पुस्तक 'बनी' की भूमिका का दूसरा पृष्ठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राक्कथन

लगभग चार वर्ष पहले की वात है जब 'वनी' पुस्तक उर्दू में मुझे पढ़ने का अवसर मिला। वाजिदअली शाह रचित 105 पुस्तकों में बनी, नाजो, दुल्हन, चंचल नाज़नीन और सौतुल मुबारक इन पांच पुस्तकों का विशिष्ट रूप से अदब और इतिहास में अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है। मैं भी इन पुस्तकों को पढ़ने के लिये लालायित था।

संगीत और रहस से परिपूर्ण पांचों पुस्तकों के विषय ही नहीं वरन् नाम भी पर्याय हैं। संगीत की दृष्टि से पांचों पुस्तकें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं पर 'वनी' का इनमें विशिष्ट स्थान है। इन पुस्तकों से गुज़रने के वाद वाजिदअली शाह की हर क्षेत्र में विस्तृत जानकारी की छाप पाठक के मस्तिष्क पर अवश्य पड़ती है, और उनका एक दूसरा रूप पाठक के मस्तिष्क में आता है। फिर अचानक ही एक दूसरा नाम दिमाग में उभरता है—अमीर खुसरो। हज़रत अमीर खुसरो देहलवी के बाद इतिहास में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा दिखाई देता है जिसने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लगभग साढ़े पांच सौ वर्ष बाद उनकी याद को पुनः ताज़ा कर दिया । दोनों की कृतियों को ध्यान से पढ़ने पर अमीर खुसरो और वाजिदअली शाह दोनों में कुछ बातें उभयनिष्ट दिखाई देती हैं, जैसे—

1. हज़रत अमीर खुसरो पूरे हिन्दुस्तानी थे और वाजिदअली शाह भी ।
2. अमीर खुसरो ने अपनी समकालीन भाषाओं को अपनाकर अपनी बात कही और वाजिदअली शाह ने अपने समय की भाषा को अपनाकर ।
3. अमीर खुसरो ने संगीत को नया आयाम और वाद्यों को नया रूप दिया तो वाजिदअली शाह ने भी संगीत व नृत्य को नये-नये आयाम प्रदान किये ।
4. अमीर खुसरो ने अपने समय के संगीत-उस्तादों से अपना लोहा मनवा लिया तो वाजिदअली शाह ने अपने समय के संगीत और नृत्य के उस्तादों से अपना लोहा मनवा लिया ।
5. अमीर खुसरो के कलाम में अदबी गहराई के साथ-साथ सन्देश है भाइचारे और बन्धुत्व का । वाजिदअली शाह के कलाम में अदब की गहराई भी है और सन्देश भी ।

   नाक़ूस बिरहमन से सदा–ए–अज़ां सुनी
   मसजिद से मैंने क़स्द किया सोमनाथ का ।।

6. अमीर खुसरो को लोक संगीत से बहुत प्यार था, और देश की विभिन्न लोक-भाषाओं में उनके दोहे, सोरठे, विरह, बिदाई, बाबुल आदि इसके उदाहरण हैं । वाजिदअली शाह को लोक संगीत ही नहीं, लोक कलाओं से भी लगाव था और उनके समय में लोक संगीत ही नहीं, नक़ल, भड़ैती, स्वांग, भगतबाजी, बहुरूप, कठपुतली, आदि लोक कलाओं को अच्छा प्रोत्साहन प्राप्त रहा । प्रस्तुत पुस्तक 'बनी' में भी एक पूरा अध्याय नक़ल और भड़ैती के विषय में है ।
7. अमीर खुसरो राजाओं के दरबारों और जनता दोनों में समान रूप से लोकप्रिय थे । वाजिदअली शाह भी दरबार और जनता दोनों में ही अत्यधिक लोकप्रिय थे । एक बार अमीर खुसरो किसी गांव से जा रहे थे । प्यास लगी । एक कुएं पर पानी पीना चाहा । चार पनिहारिनें पानी भर रही थीं । अमीर ने उनसे पानी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मांगा। उन्होंने अमीर से नाम पूछा। अमीर ने अपना नाम बताया। पनिहारिनों ने कहा कि वे अमीर को जानती हैं। वह बहुत ज्ञानी हैं। हम कैसे जानें कि तुम खुसरो हो। अमीर खुसरो ने कहा तुम चारों एक-एक शब्द दो, मैं अभी उसका छन्द बना दूंगा। चारों ने अलग-अलग चार शब्द दिये। एक ने कहा खीर, दूसरी ने चरखा, तीसरी ने कुत्ता, और चौथी ने ढोल। चारों शब्दों का कोई ताल-मेल न था। पर अमीर ने कुछ देर सोचा और प्रत्येक शब्द पर एक पंक्ति कही और चारों को मिलाकर उन्हें सुना दिया :

खीर बनाई जतन से
चरखा दिया चलाए
कुत्ता आया खा गया
तू बैठी ढोल बजाए ।।

और इस प्रकार अमीर को पीने का पानी मिला। दूसरी ओर वाजिदअली शाह जनता के मध्य इतने लोकप्रिय थे कि कलकत्ता चले जाने के बाद लगभग सत्तर पछत्तर वर्ष तक अवध के गांव-गांव में यह गीत गाया जाता था :

तोरे बिन बरखा न सुहाय ।
कलकत्ते वाले जूया कब आओगे तुम ।।

8. अमीर खुसरो की अनेक रचनायें ऐसी हैं जिनमें एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग है जैसे यह :

शबाने हिज्रा दारज चूं जुल्फ़ व रोज़े वसलत चू उम्र कोताह ।
सखी पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अंधेरी रतियां ।।

इसमें पहली पंक्ति फारसी और दूसरी अवधी भाषा में है। वाजिदअली शाह ने भी यही तरीक़ा अपनाया है :

आस्ताई – एक रे जाने मोरा तोरा जियरा
अन्तरा – साक़िया बर ख़ेज़ों जामी वो मेरा
खाक बरसरे कुन ग़मे अय्या मेरा ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसमें आस्ताई हिन्दी और अन्तरा फारसी में है। ठीक अमीर खुसरो की लेखनी के समान ! इसी प्रकार ठुमरी, दादरा और ख्याल आदि में उर्दू, हिन्दी, ब्रजभाषा और अवधी को इस प्रकार मिश्रित किया है कि बस देखते ही बनता है।

9. अमीर खुसरो की वफ़ादारी अपनी चरम सीमा पर थी। दिल्ली-दरबार, जलालउद्दीन तुगलक के प्रति वफ़ादार रहे और 1286 में मुलतान की जंग में वे अपने अभिन्न मित्र और राजा मुलतान सुल्तान मोहम्मद कान के साथ थे। वह उस जंग में मारा गया। अमीर खुसरो पर उसकी मृत्यु ने कठोर आघात किया और उन्होंने इस शोक में एक लम्बा मरसिया लिखा। हज़रत निजामउद्दीन औलिया के प्रति वे इतने वफ़ादार थे कि जब दिल्ली लौटे और उन्हें पता चला कि हज़रत ने यह दुनिया छोड़ दी तो गहरी चोट लगी उनके मन पर। वे हज़रत निज़ामउद्दीन औलिया की मजार पर पहुंचे। केवल एक दोहा पढ़ा और वहीं सर रखकर प्राण त्याग दिये। वह अन्तिम दोहा अमीर खुसरो की वफ़ादारी की एक मिसाल है :

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुंदेस॥

वाजिदअली शाह की नसों में भी वही खून था, वही चरित्र था। अंग्रेजों के साथ हर सन्धि के प्रति वे वफ़ादार रहे, यह बात दूसरी है कि अंग्रेजों ने हमेशा बेई-मानी की। वाजिदअली शाह जनता के प्रति भी विश्वासी थे। अपनी सल्तनत छिन जाने के बाद भी जनता को खून-ख़राबे से बचाने के लिये वह अंग्रेजों से नहीं लड़े। वह स्वयं लिखते हैं :

न की जंग पर बवजूहाते चन्द
बयां मैं करूं उनको ऐ अर्जुमन्द
अगर जंग करता तो दस साल तक
मगर आख़िरश थी शिकस्तो हतक॥

यदि जंग होती तो हजारों मर जाते। सैकड़ों अपाहिज हो जाते, सैकड़ों घर लुट जाते, अवध बर्बाद हो जाता और नतीजा कुछ न होता।

10. अमीर खुसरो मुसलमान अवश्य थे, पर अन्धविश्वासी नहीं थे। उनका पहला धर्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था इन्सानियत। उनके मज़ार पर आज भी मुसलमान ही नहीं, सैकड़ों हिन्दू और दूसरे धर्म वाले भी हाज़िरी देते हैं।

दूसरी ओर वाजिदअली शाह का कथन कि 'मेरी दो आंखों में एक हिन्दू और एक मुसलमान' उनकी धार्मिकता को स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त है।

ऊपर लिखी गई कुछ बातें उभय होने के बावजूद अमीर खुसरो और वाजिदअली शाह दोनों में कहीं पर कुछ अन्तर भी था। जैसे—

1. वाजिदअली शाह सल्तनते अवध के राजा थे और अमीर खुसरो एक सूफ़ी।
2. वाजिदअली शाह का प्रारम्भिक जीवन बहुत अच्छा व्यतीत हुआ, अमीर खुसरो का जीवन चौदह वर्ष की आयु तक बहुत ख़राब गुज़रा; जब क़ि वाजिदअली शाह का अन्तिम जीवन कष्टदायक और अमीर का अन्तिम जीवन अच्छा गुजरा।
3. अमीर खुसरो को अपने जीवन में और उसके बाद भी नेकनामी मिली; जबकि वाजिदअली शाह को उनकी जिन्दगी में अंग्रेजों ने और उसके बाद स्वयं हमारे देशवासियों ने बहुत बदनाम किया।

वाजिदअली शाह की रचनाओं को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि उन्होंने हज़रत अमीर खुसरो की परम्परा को ही आगे बढ़ाया है। वे स्वयं अमीर के लिये इसी पुस्तक में लिखते हैं :

'.........फ़ने मौसीक़ी में वो वो ईजाद किये क़ि चतुरंग, तिरवट, तराना के बदले जो बतरीके हिन्दवी मुश्तमिल हैं, क़ौल, क़बाना, नक़शे-गुल बनाये। सभी को निहायत पसन्द आये। हिन्दी पोथियों की तालों में भी दस्त अन्दाजी की। जल्दतिताला, धीमा-तिताला, चौताला, आड़ा-चौताला, सूलफाख्ता, रूपक, ब्रह्मलक्ष्मी, तीवरा, पटताल, कोकिला के एवज़ में सवारी, झूमरी, फिरोदस्त, ख़म्सा, दोबहर ईजाद की। अलहक एक-एक ज़रब और उसके ख़ालियों और झूलों में मिसरी की डलियां कूट-कूटकर भर दीं। ध्रुवपदों के बदले ख्यालों की बिना डाली। शौकीनों की उमंग तीनों में खूब अच्छी तरह से निकाली .....'

अब कुछ इस पुस्तक के विषय में

सुर ताल, लय, कृष्ण की रासलीलाओं और नकल कला पर आधारित यह पुस्तक लेखक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने कुछ इस अन्दाज़ से रची है और उसमें इतना द्रव्य भर दिया है कि कोई भी संगीतज्ञ और नाट्य-प्रेमी इसके रचयिता की प्रशंसा किये बिना रह ही नहीं सकता।

पुस्तक में हज़रत अली की मनक़बत के लिये ठुमरी है तो गणेश-स्तुति के लिये दादरा। यदि उर्दू के शेर हैं तो हिन्दी के दोहे भी। कहीं पंजाबी है, कहीं बंगाली, कहीं हिन्दी, कहीं उर्दू और फ़ारसी। ठुमरी भी है, दादरा भी। सावन भी है और ख्याल भी। हर प्रकार के राग और रागनियों को गाये जाने का समय भी इनके साथ ही साथ दिया है। पूरी पुस्तक पढ़ने के बाद दो बातों का अहसास होता है :

1. पुस्तक के रचयिता ने यह पुस्तक एक गुरु की हैसियत से रची है और इसमें इतना द्रव्य भर दिया है कि कोई भी संगीत-प्रेमी इसे पढ़ने के बाद बिना प्रभावित हुये नहीं रह सकता।

2. रचयिता को न केवल उर्दू और फ़ारसी पर महारत थी वरन् अन्य देशी भाषाओं जैसे हिन्दी, अवधी, बंगाली, पंजाबी का भी अच्छा ज्ञान था। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि भाषा के माध्यम से लेखक ने एक राष्ट्रीय चरित्र (National Character) बनाने की चेष्टा की है।

मन में यह भावना जागृत हुई कि यह ख़ज़ाना ढका-छिपा अन्धेरे में पड़ा है। इसका प्रकाशन दूसरी भाषाओं में भी होना चाहिये। हिन्दी में इसका प्रकाशन होने से कम से कम दो लाभ अवश्य होंगे : पहला तो यह कि संगीत, नाट्य और ललित कलाओं के प्रति रुचि रखने वालों को यह ख़ज़ाना मिल जायेगा, और दूसरा, न केवल आलोचकों वरन् साधारण जनता के सम्मुख रचयिता का कृतित्व, सौ सवा सौ वर्ष पूर्व लखनऊ का सांस्कृतिक वातावरण, राष्ट्रीय चरित्र की उत्पत्ति तथा हिन्दुस्तानी तमद्दुन के लिये रचयिता का अगाध लगाव भी उजागर होने में सहायता मिलेगी।

इस भावना के साथ मैंने डॉ० कृष्णमोहन सक्सेना के साथ मिलकर पुस्तक का हिन्दी लिपिकरण आरम्भ किया, पर बीच में ऐसी-ऐसी अड़चनें आईं जिससे लगा कि यह कार्य पूर्ण होना मुश्किल है। पर हमने अपना साहस नहीं छोड़ा। कहावत है, 'जहां चाह वहां राह'; और इस चाह व साहस ने ही अनेक अड़चनों और बाधाओं को पार करने में सहायता की। अन्ततः लगभग एक वर्ष की लगातार मेहनत के बाद यह काम पूरा हो सका।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभार

इसी संदर्भ में डॉ० नय्यर मसूद का ज़िक्र भी आवश्यक है। 'वनी' की एकमात्र प्रति उनके पास महफ़ूज़ है और उसी प्रति से इसे हिन्दी में किया गया है। उन्होंने भी इस काम के लिये उत्साहित किया और पुस्तक का ट्रेण्ड क्या रखा जाये इस विषय पर भी मार्गदर्शन किया। हम उनके आभारी हैं। वीरेन्द्र बाथम ने इस पुस्तक के चित्र आदि लेने में सहायता की है। हम उनके भी आभारी हैं।

यह पुस्तक वास्तव में देखा जाये तो बहुत पहले ही हिन्दी में प्रकाशित हो जानी चाहिये थी, पर कुछ ऐसे कारणों से देर हो गयी, जिन्हें टाला नहीं जा सकता था।

—रौशन तक़ी

दीपावली,
1 नवम्बर, 1986

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

संक्षिप्त परिचय

जिस समय मिर्ज़ा वाजिदअली ने इस दुनियां में आंखें खोलीं, चारों ओर फिरंगी राज-नीति का जाल फैला हुआ था। अवध के तख्त पर बादशाह नसीरूद्दीन हैदर राज्य कर रहे थे पर हुक्म कम्पनी सरकार का चल रहा था। मिर्ज़ा वाजिद अली ने अपने बचपन से जवानी तक नसीरूद्दीन हैदर के राज्य का ढंग देखा और कम्पनी सरकार के आगे उन्हें मज़बूर देखा, दादा मोहम्मद अली शाह की सल्तनत देखी और उन्हें अंग्रेजी सरकार के अहदनामों में फंसे देखा, अपने पिता अमजद अली शाह का अहदे-हुकूमत देखा और उन्हें कम्पनी के साथ कभी न सुलझने वाली राजनीतिक गुत्थियों में उलझते देखा और इस तरह ज़िन्दगी के चौबीस बरस गुज़र गए (1822—1847)। इतने निकट से देखने के बाद मिर्ज़ा वाजिद अली ने राजनीति को भली प्रकार समझ लिया था। कहने और करने को कुछ नहीं बचा था। सन् 1847 में अवध की राजगद्दी सम्भालने के बाद दो साल तक रात दिन अथक परिश्रम करके मिर्ज़ा वाजिद अली ने सुधार के यत्न किए और उसमें सफ़ल भी हुए। किन्तु अंग्रेजों ने तुरन्त अपना जाल कसना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आरम्भ कर दिया। राजा को बदनाम करना शुरू कर दिया। बचपन से आज तक की सारी राजनीतिक गुत्थियां मिर्ज़ा वाजिद अली की नज़र में थीं और आगे उलझने से राजनीतिक दशा उलझती ही जा रही थी।

शारीरिक और मानसिक शक्ति से परिपूर्ण राजा ने अपना ध्यान राजनीतिक उलझाव से हटाकर कला के संरक्षण और 'अदब' की खिदमत की ओर लगा दिया। कला और अदब के ओजपूर्ण वातावरण का अवध में चारों ओर बोलवाला था। राजा का ध्यान इधर आते ही जैसे इसमें चमक आ गई। कवियों, शायरों और कलाकारों को प्रोत्साहन मिल गया।

1847 ई० से 1856 ई० तक शाही के दौरान तथा इसके बाद 1887 ई० तक जिलावतन मटिया बुर्ज़ कलकत्ते में रहकर मिर्ज़ा वाजिदअली शाह ने सौ से अधिक ग्रन्थों की रचना की। इन्हें अपने निजी शाही प्रेस से प्रकाशित कराके तत्कालीन विद्वानों, साहित्य प्रेमियों तथा अपने इष्ट मित्रों तक इन्हें सम्प्रेषित किया। इस विषय में प्रो० मसूद हसन अदीब लिखते हैं—'वाजिदअली शाह का हकीक़त से हटकर जो रूप जनता के दिमागों में बिठा दिया गया है उससे ये शक पैदा हो सकता है कि पैसे की लालच और बादशाह के सम्मुख अपने को वफ़ादार दिखाने के लिए दूसरों ने किताबें लिख-लिखकर उनको दे दी होंगी जिनको लेखक बनने के शौक़ में बादशाह ने अपना नाम दे दिया होगा। लेकिन ये शक बिलकुल ग़लत है.........वाजिद अली शाह शायरों के बड़े संरक्षक थे। जब तक वह बादशाह रहे लखनऊ में शायरों की भीड़ रही। सल्तनत समाप्त होने के बाद बीसियों शायर उनके संरक्षण में कलकत्ता में ही रह गए।'[1]

वाजिदअली शाह द्वारा रचित पुस्तकों अथवा ग्रन्थों में जीवन के हर पहलू को उजागर किया गया है। इनमें उनकी आत्मकथा भी है, संगीत भी है, शेरो-शायरी भी और रहस व नाटक भी। जहां वे अपने विषय में लिखते हैं, निर्भीकता के साथ स्पष्टतः बेलाग भाषा में। यह साफ़ प्रतीत होता है उन्होंने कुछ भी छिपाया नहीं। भारतीय संगीत को एक नया आयाम देने में वाजिदअली शाह का बहुत बड़ा हाथ है। शुद्ध संगीत पर लिखी गई उनकी चार पुस्तकों, बनी, दुल्हन, नाजो और सौतुल मुबारक का अत्यधिक महत्व है। इसी प्रकार "मरसिये" के अनेक ग्रन्थ तथा रहस व नाटक की तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें—'दरयाम-ताश्शुक़',

---

1. सुल्तान-ए-आलम वाजिद अली शाह—पृ० 95, 108, 109

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'अफ़साना-ए-इश्क़' और 'बहारे-उल्फ़त' का अपना अलग स्थान है। अमजद अली खां लिखाते हैं—'बहरहाल इसमें कोई शक नहीं कि वाजिदअली शाह हिन्दुस्तानी अदब और पूर्वी संस्कृति के संरक्षक और प्रेमी थे। उन्होंने उर्दू अदब और हिन्दुस्तानी संगीत व नाटक की महत्वपूर्ण सेवाएं की हैं।'[2]

इन पुस्तकों और ग्रन्थों में बनी को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है "दुल्हन"। इस ग्रन्थ में बादशाह ने गायन, वादन, नृत्य तथा नाट्य (रहस तथा भड़ैती) पर जो सामग्री प्रस्तुत की है वह बहुमूल्य है और उसका एक ऐतिहासिक महत्व है। 'बनी' की भूमिका एवं पूरी पुस्तक की भाषा-शैली से यह स्पष्ट है कि वाजिदअली शाह ने यह पुस्तक एक निर्देशक एवं गुरु की हैसियत से रची है।

व्यक्तित्व

वाजिदअली शाह शारीरिक रूप से शक्तिशाली और चेहरे से सुन्दर एवं रोबदार व्यक्तित्व के मालिक थे। अनेक लेखकों ने उनकी शक्ति के विषय में लिखा है कि अँगूठे और अँगुली के बीच में सिक्के को रखकर ऐसा घिसते थे कि उस पर के चिन्ह मिट जाते थे और उसे दबाकर गोली बना देते थे।[3] वह एक शक्तिशाली, कार्यकुशल और अच्छे व्यवहार के व्यक्ति थे। रेज़ीडेन्ट कर्नल सलीमन अवध का सबसे बड़ा दुश्मन और वाजिदअली शाह के चरित्र को धूमिल करने वाला था, उसने भी अनेक स्थानों पर वाजिद अली शाह के विषय में इस प्रकार लिखा है—

Oct. 11, 1849—He has never been a cruel or badly disposed man.[4]
Jan.-12, 1853-He is neither tyrannical nor cruel.[5]
June 1, 1854-There never was on the throne I believe a man more ineffensive of heart than he is.[6]

2—हुज्ने अख्तर—संकलन : अमजद अली खां [उर्दू], पृष्ठ 56
3—चमनिस्ताने मुज़फ्फ़र—वाजिद अली शाह और उनका अहद, पृष्ठ 668
4—सलीमन का पत्र, हेनरी एलियट, सेक्रेटरी ग़वर्नर जनरल के नाम
5—सर जेम्स को रेज़ीडेन्ट सलीमन द्वारा लिखा गया पत्र
6—सलीमन का पत्र कर्नल लू के नाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11 अक्टूबर, 1849—वह कभी भी निर्दयी या दुर्व्यवहार व्यक्ति नहीं रहे।
12 जनवरी, 1853—वह ज़ालिम व बेरहम नहीं हैं।
1 जून, 1854—मैं समझता हूं कि उनसे ज्यादा शरीफ़ व्यक्ति आज तक तख्त-ए-शाही पर कभी नहीं बैठा।

दबीरूल इंशा मुंशी मोहम्मद ज़हीरउद्दीन खां बहादर बिलगिरामी शाही दारूल इंशा के मीर मुंशी थे। मोहम्मद अली शाह, अमजद अली शाह और वाजिद अली शाह के समय में वह शाही दारूल इन्शा (सचिवालय) के मीर मुंशी (मुख्य सचिव) रहे। सल्तनत के दांवपेंचों के विषय से वह भली प्रकार परिचित थे। साथ ही बादशाह के विषय में भी एक एक बात जानते थे। वाज़िद अली शाह के लिए वह लिखते हैं कि वह बहुत दयालु, शरीफ़ और दूसरों का ध्यान रखने वाले बादशाह थे।

मौलवी अब्दुल हलीम शरर ने वाजिद अली शाह की ज़िन्दगी का कलकत्ते का दौर अपनी आंखों से देखा था। वह लिखते हैं—'उनमें तहज़ीब थी, देनदारी थी, कद्रदानी थी, और बहुत ज्यादा खुदफ़रामोशी थी...[7]'

परिपूर्णानन्द वर्मा लिखते हैं 'ये जो खुदा और भाग्य पर विश्वास रखते हैं। उन्हें बादशाह की ज़िन्दगी से नहीं पता चलेगा कि सभी विशेषताएं होते हुए भी अगर खुदा की मरज़ी नहीं है तो इन्सान कुछ नहीं कर सकता। वाजिदअली शाह ऐसे ही साहसी, दयालु व चरित्रवान बादशाह थे। उनमें दूरअंदेशी की कमी थी। लेकिन प्रशासन योग्यता की कमी न थी। ....जैसे-जैसे सल्तनत का काम करना असम्भव होता गया। वह साहित्य, संगीत; नाटक, पुस्तकें लिखने और ऐतिहासिक जानकारी एकत्र करने, हिन्दू मुस्लिम एकता और दूसरे सांस्कृतिक कार्यों की ओर आकृष्ट हुए। हिन्दुस्तानी कला और संस्कृति की रक्षा का उन्होंने महत्वपूर्ण काम किया। किसी शरीफ लड़की की तरफ उन्होंने कभी बुरी नज़र नहीं डाली। जबरदस्ती किसी को अपनी पत्नी बना लेना उन्होंने सीखा ही न था—— सबसे बड़ी बात ये थी कि उनमें साम्प्रदायिक भावना छू तक नहीं गई थी। वह वास्तव में सच्चे हिस्दुतानी थे।'[8]

7—हुज्ने अख्तर, पृ० 10
8—वाजिदअली शाह और अवध राज्य का पतन—डॉ० परिपूर्णानन्द वर्मा, पृष्ठ 15, 16

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ा मोहम्मद तक़ी 'आफ़तावे अवध' में उनकी इन्साफ़ पसन्दी के विषय में लिखते हैं कि "जिस मुक़द्दमें की उनको ख़बर पहुंची कभी इन्साफ़ को हाथ से जाने न दिया।" नज्मुल ग़नी ने तारीख़े अवध में लिखा है कि "यह बादशाह अपने व्यक्तित्व से इन्साफ़ पसन्द था, किसी सहपंथी या वामपंथी या अमीर या ग़रीब के इन्साफ़ में कभी पक्षपात नहीं किया।"

एक बार बादशाह की एक बेगम नवाब निशात महल के भाई मोहम्मद बाक़र के हुक्म से उनके नौकर ने किसी हिन्दू कुम्हार के सर पर तलवार की मूठ मार दी जिससे वह मर गया। इस पर कानूनी दफ़ा के अनुसार वज़ीरेआज़म अली नक़ी खां ने दीवानखाना के दारोगा को हुक्म दिया कि सारे हालात का पता लगाकर बताया जाए। बादशाह को जब इसका पता चला तो उन्होंने कहा कि वज़ीरेआज़म और दारोग़ा दीवानख़ाना निशात महल, निशातमहल की इज्ज़त के कारण इन्साफ़ न कर सकेंगे इसलिए मैं इसका फ़ैसला करूँगा। ऐसा सुनकर नवाब निशात महल ने बादशाह से मिलना चाहा पर बादशाह ने मिलने से इनकार कर दिया और हुक्म भेज दिया कि जब तक मुक़द्दमें का फ़ैसला न हो जाए आप हमसे नहीं मिल सकतीं। उस कुम्हार के घर की औरतें बहुत इज्ज़त के साथ निशात महल के पास पहुंचाई गई और निशात महल ने उनके पैरां पर सर रखकर माफ़ी माँगी। महल की अन्य औरतें यह देखकर कांप गई और उन्होंने भी उनके पैरों पर सर रख दिए। इन औरतों ने आठ सौ रुपये लेकर 'राज़ीनामा' लिख दिया कि तलवार की मूठ क़त्ल करने के इरादे से नहीं मारी गई थी और यह एक दुर्घटना थी। बादशाह ने ये राज़ीनामा पढ़ा फिर कहा कि जो कानूनी हुक्म है, जारी किया जाएगा, किसी की सिफ़ारिश नहीं सुनी जाएगी।[9]

इसके अतिरिक्त प्रो० मसूद हसन ने दो घटनाएँ उनकी इन्साफ़ पसन्दी की लिखी हैं। वह लिखते हैं कि एक दिन बादशाह बाग़ की सैर से वापस आ रहे थे कि एक ग़रीब बुढ़िया ने अपने आपको बादशाह के घोड़े के आगे गिरा दिया। बादशाह को बताया गया कि इस 'बुढ़िया की एक बहुत सुन्दर नवजवान लड़की थी। क़स्बे का ज़मींदार घर में घुसकर लड़की को उठा ले गया है और उसे अपने घर में डाल लिया है। अब वह बुढ़िया इन्साफ़ चाहती है। पूरी बात सुनकर बादशाह गुस्से से कांपने लगे और हुक्म दिया कि तुरन्त लड़की को वापस लाने का हुक्म दिया जाता है। शाही फ़ौजें तुरन्त उस क़स्बे में पहुंचीं जहाँ यह घटना घटित

9–इसरारे-वाजिदी—(सुल्ताने आलम वाजिदअली शाह–प्रो० मसूद हसन), पृष्ठ 59

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुई थी और उस ज़मींदार को गिरफ्तार करके उसके घर में आग लगा दी और लड़की को उसके घर से निकालकर उसकी मां के यहां पहुंचा दिया गया।[10]

इससे भी बढ़कर एक घटना उस समय की है जब बादशाह अपने बेटे वलीअहद की बारात लेकर दुल्हन के घर जा रहे थे कि लोहेवाले पुल के निकट एक हाथी के धक्के से एक हलवाई की दुकान का एक भाग गिर गया। बादशाह ने तुरन्त अपनी सवारी रोक दी। वज़ीरों ने तथा अन्य लोगों ने कहा कि उसका नुक़सान भर दिया जाएगा, बारात चलाई जाए, निकाह का वक्त निकला जा रहा है। पर जब तक उसका नुक़सान भर नहीं दिया गया, बादशाह ने अपना हाथी आगे नहीं बढ़ाया।[11]

शासनकाल

वाजिदअली शाह के शासनकाल के विषय में लिखने के लिए पूरी एक पुस्तक अलग से लिखी जा सकती है। किन्तु यहाँ पर इस पुस्तक 'वनी' के हमराह पाठकों की जानकारी एवं ज्ञान हेतु संक्षेप में इस विषय पर प्रकाश डाला जा रहा है।

अमजद अली शाह की मृत्यु के बाद 13 फ़रवरी, 1847 ई० को सूरज ढलने के बाद वाजिदअली शाह अवध के तख्त-ए-सल्तनत पर विराजे। उस समय उनकी आयु हिन्दुस्तानी कैलेण्डर के अनुसार लगभग चौबीस वर्ष चार महीने और अंग्रेज़ी कैलेण्डर के अनुसार लगभग तेईस वर्ष छह महीने थी। उस समय सल्तनत के पुराने उस्ताद अमीनउद्दौला वज़ीरेआज़म थे जो केवल 5 मास और 12 दिन इस पद पर रहे और 5 अगस्त, 1847 ई० को बादशाह ने नवाब अली नक़ी खां को अपना वज़ीरेआज़म बनाया। रेज़ीडेन्ट ने इस बात को अस्वीकार करना चाहा, पर बादशाह अपने फ़ैसले पर अटल थे और रेज़ीडेन्ट को झुकना पड़ा।

सल्तनत की बागडोर हाथ में आते ही सुल्ताने आलम ने कड़ी मेहनत और शाही वसूलों से राज्य आरम्भ किया। अहसनुल तवारीख़ का लेखक लिखता है कि "बादशाह सुबह सवेरे उठकर आधी रात तक एक मिनट का आराम नहीं करते थे।" सुबह परेड के मैदान पर पहुंच

---

10. वाजिदअली शाह—मसूद हसन, पृष्ठ 57-59
11. वही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाते और स्वयं परेड लेते। कड़ी धूप और धूल में दोपहर तक फ़ौज की तैयारी पर लगे रहते। अनेक नई पलटनें बादशाह ने स्वयं बनाई थीं और फ़ारसी अन्दाज़ की अनेक नई तैय्यारियां फ़ौज को शुरू करवा दी थीं। दोपहर में दीवाने ख़ास में राजकाज के विषय में मंत्रणा आदि तथा आदेश, दोपहर के खाने के बाद सल्तनत के वज़ीरों तथा ज़मींदारों से हालात का पता लगाना। शाम को हवाख़ोरी के समय ग़रीबों और जनता की फ़रियाद सुनना। रात में दीवाने आम और फिर लिखना-पढ़ना, यह थी उनकी नित्य चर्या।

दो वर्षों तक इसी प्रकार राजकाज चलता रहा, अवध फलता-फूलता रहा कि अचानक इसको किसी की नज़र लग गई। सल्तनत में चारों ओर अमन था पर कम्पनी की ओर से कहा जाने लगा कि चारों ओर हाहाकार है। जनता प्रसन्न थी, कम्पनी बहादर की ओर से इल्ज़ाम लगाया गया कि जनता बहुत परेशान व दुखी है। बादशाह की फ़ौजी शक्ति बढ़ रही थी। कम्पनी बहादर की ओर से कहा गया कि अवध की सैन्य शक्ति के लिए देशी सिपाही नहीं अंग्रेज सिपाही रखे जाएँ और उनका वेतनादि बादशाह की ओर से ही दिया जाए।

बादशाह की निरन्तर यह लगन थी कि सलतनते-अवध का शासन अच्छे से अच्छा हो जाए और फ़िरंगियों की यह राजनीति थी कि शाह को अपने बिछाए हुए जाल में अधिक से अधिक कसा जाए। केवल दो वर्ष का राजकाज और बादशाह की मेहनत को देखकर कम्पनी सरकार को शाह की बढ़ती हुई लोकप्रियता और शासन की सैन्य शक्ति से ख़तरा पैदा हो गया और गोरों ने 'लड़ाओ और राज्य करो' की राजनीति के अनुसार राज्य में घुसपैठ आरम्भ कर दी।

अली नक़ी ख़ां को अंग्रेज़ों ने बादशाह बनाने का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया और बादशाह पर दबाव डाला गया कि वह फ़ौजी सरगर्मी छोड़ दे। मिर्ज़ा मोहम्मद तक़ी लिखते हैं कि 'एक दिन नवाब अली नक़ी ख़ां बहादर वज़ीरेआज़म ने अर्ज़ किया कि ये फ़ौजी तैय्यारी रेज़ीडेन्ट बहादर को पसन्द नहीं है और क्योंकि अंग्रेजी सरकार की बात हमें हर तरह मानना चाहिए थी, इसलिए उस दिन से इस ओर से बिलकुल किनारे हो गए।[12] फ़ौजी दिलचस्पी से उनका ध्यान मोड़ दिया गया। और इस प्रकार बचपन से दबे शौक़ को शाही रूप में संरक्षण प्राप्त हुआ। उनका झुकाव अदब व साहित्य की ओर हो गया तथा अवध की विभिन्न ललित कलाओं को इस प्रकार संरक्षण प्राप्त हुआ।

---

12. आफ़ताबे अवध—मिर्ज़ा मोहम्मद तक़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाजिदअली शाह स्वयं लिखते हैं कि 'अख्तर शाहे आख़िर अवध यह फ़क़ीर हक़ीर राक़िम ओ-मुसबिफ़-ओ-मोअल्लिम सरापा तक़सीर है। पन्द्रह बरस के सिन में वालिद जन्नत मकां ने वली अहद और वज़ीर किया। बीस बरस के सिन में तख्ते अवध पर बजाए हज़रते आला क़ायम हुए। तीस बरस के सिन में बिला सुदूर ज़ुल्म और नाइन्साफी ओ वेआज़ार रय्यत वेसबब तख्त से महरूम किया गया। वीस बरस से कलकत्ता मोहल्ला मोची खोला मुलवक़ब बा मटियाबुर्ज में क़याम है। पचास बरस का सिन हुआ। छब्बीस महीने क़िला विलियम फोर्ट में नाहक़ क़ैद रहा।'[13]

राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह ने भी अपने शब्दों में वाजिदअली शाह के जीवन के घटनाक्रम को इस प्रकार संयोजित किया है—'कम उम्र थी जब वह गद्दी पर बैठे, शरीर में बल था, मन में उत्साह, अवध की ढलती हुई सल्तनत को पुनः दृढ़ करने की दिल में तमन्ना। अतः राज्य की बागडोर हाथ में आते ही उन्होंने जोश ख़रोश के साथ राज्य का संचालन शुरू किया। रिआया खुश कि अब उसके ऊपर जो राज्याधिकारियों का ज़ुल्म था, वह समाप्त हुआ। चूंकि बादशाह अब स्वयं भी उनकी बातें सुनते और उन पर फ़ैसला देते, कोई किसी पर ज्यादती नहीं कर सकता था। फ़ौज में ढीलापन आ गया था, अतः वह स्वयं घण्टों धूप में खड़े रहकर उसे ट्रेनिंग देते, परेड करवाते थे। उनकी यह कार्यपटुता और लोकप्रियता डलहौज़ी की आँखों में कांटे की तरह चुभने लगी थी। तभी नवाबे अवध बनने का स्वप्न देखता हुआ नक़ी ख़ां उनके साथ जा मिला।'

लगभग नौ वर्षों तक अवध सल्तनत पर राज्य करने और ललित कलाओं का संरक्षण करने के बाद अंग्रेजों ने बादशाह को और समय नहीं दिया और अपनी पूर्व नियोजित राजनीति के अनुसार 7 फ़रवरी, 1856 ई० को अवध सल्तनत को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। पूरे अवध में तहलका हो गया। फ़िरंगियों के ख़िलाफ़ क्रोध की एक लहर चारों ओर दौड़ गई। पर बादशाह ने लड़ना ठीक न समझा और सल्तनत की वापसी के लिए कम्पनी के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा करने की सोची। वाजिदअली शाह फ़िरंगियों के विरुद्ध संघर्ष न करने का कारण

13. बनी—वाजिदअली शाह, अध्याय पांच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वयं बताते हैं—

न की जंग पर वावजूहातेचन्द[1], बयाँ मैं करूँ उनको ऐ अर्जुमन्द[2]
थी एक वजह यह वाहमी[3] था करार[4], हलफ़ उस प थे वाहमी आशकार'[5]
अगर जंग करता तो दस साल तक, मगर आखरश थी शिकस्तो हतक[6],
लड़ाई का पहला ही फ़न है फ़रेब,[7] मै सय्यद मुझे मक्र[8] था कव नसीव
सोमे[9] ये कि हो जातीं वेवा जनां[10], वहुत कुश्तो खून होता उस दम अयां[11]
जवावे खुदा देता क्या रोज़े हश्र,[12] जो ये खून होता जहाँ भर में नश्र[13]

इस प्रकार ये वात सामने आती है कि वादशाह के अमन पसन्द स्वभाव ने दूरदर्शिता से काम लिया। जंग में सैकड़ों हज़ारों का निरपराध रक्त-स्राव होगा। सैकड़ों सुहागिनें विधवा हो जाएँगी, हज़ारों वच्चे अनाथ हो जाएँगे और फिर भी परिणाम वही होगा जो इस समय होना है। अत: यह निश्चय किया कि कम्पनी के विरुद्ध एक मुक़द्दमा करने और इंगलिस्तान की रानी से इन्साफ़ लेने के लिए लन्दन को जाया जाए। इस निश्चय के साथ वादशाह ने 12 मार्च, 1856 ई० को रात के अन्धेरे में लगभग आठ वजे इस आशय से लखनऊ छोड़ा कि शायद यहां फिर आना हो पर क़िस्मत ने हमेशा के लिए उनसे उनका वतन छुड़ा दिया। लखनऊ छोड़ते समय वादशाह की जुवान पर ये शेर था—

दरो दीवार पर हसरत से नजर करते हैं।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं ॥

वाजिद अली शाह अपने छोटे से शासनकाल में जनता में इतने लोकप्रिय हो गए थे कि जिस समय वह लखनऊ छोड़कर जा रहे थे लखनऊ के हिन्दू और मुसलमान इस प्रकार रो रहे थे कि जैसे कोई नातेदार मर गया हो। यही नहीं, एक लम्वी-चौड़ी भीड़ उनके साथ कानपुर तक गई और वाजिद अली शाह के वहुत आग्रह करने के वाद ही वे लौटे। अनेक शायरों ने अपने दर्द को अपने अपने शब्दों में व्यक्त किया है—

वाजिद अली मोरा प्यारा, आप लन्दन को सिधारा
गलियों गलियों ख़ाक़ उड़त है, गलियों में अंधियारा

1—कुछ, 2—मेरे भाई, 3—आपसी, परस्पर, 4—प्रेम सम्बन्ध, 5—खुले हुए, 6—हार व अपमान, 7—धोखा, 8—धोखा देने की कला, 9— तीसरे, 10—औरतें, 11—प्रकट, 12—क़यामत के दिन, 13—प्रचारित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आप लन्दन को सिधारा ....(लोक गीत)

लखनऊ बेकस हुआ हज़रत जो लन्दन को गए,
हम यहाँ नालां हैं, वह फ़रियादे दुश्मन को गए।
—शहीद

गांववाले एक गीत गाते थे, जिसका मुखड़ा था—

हज़रत जाते हैं लन्दन, हम पर कृपा करो रघुनन्दन।

लन्दन जाने के विचार से ही वाजिद अली शाह ने अपना सफ़र आरम्भ किया था पर कलकत्ते तक पहुंचते-पहुंचते तबियत ख़राब हो गई और उन्हें वहीं रुक जाना पड़ा। मटिया बुर्ज कलकत्ते में ही लगभग तीस वर्षों का कष्टदायक जीवन व्यतीत करने के बाद 20 सितम्बर, 1887 ई० को शाह का देहान्त हो गया। कलकत्ते के उन तीस वर्षों का अपना एक अलग इतिहास है।

'बनी' का रचनाकाल

हिन्दुतान के मुसलमान बादशाहों में ऐसा कोई बादशाह दिखाई नहीं देता जो वाजिद अली शाह जैसा कुशाग्र बुद्धिवाला, बुद्धिजीवी एवं रचनात्मक मस्तिष्क वाला हो और जो अत्यधिक साधारण और लगभग सौ पुस्तकों का लेखक हो। राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह लिखते हैं—"वाजिद अली शाह विद्वान् पुरुष थे—उर्दू, फारसी, अरबी के अलावा फ्रेंच और इंग्लिश भाषाओं के भी निपुण ज्ञाता थे। उन्होंने इनमें पुस्तकें भी लिखी थीं, जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने जब्त करके उनकी सारी उप्लब्ध प्रतियां जलवा डाली थीं।

एक गुमनाम लेखक के अनुसार, 'बादशाह में संगीत नाट्य के प्रति जन्मजात अभिरुचि थी। वे कुशल प्रशासक तथा कलाविद् दोनों रूपों में समान गति से सक्रिय रहे.........यदि वे अंग्रेज़ों की कूटनीति के जाल में न उलझते तो अवध का सांस्कृतिक वैभव कैसा होता इसकी एक अनुभूतिजन्य कल्पना ही की जा सकती हैं।'

ये सच है कि वाजिद अली शाह के शासन काल से पहले युवराजी के समय में, शासन काल में और शासन की बागडोर हाथ से छिन जाने के बाद भी मृत्यु के समय तक अवध की ललित कलाओं को उनका संरक्षण प्राप्त रहा, लखनऊ में भी और कलकत्ते में भी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

12 मार्च, 1856 ई0 को लखनऊ से चलकर कानपुर और बनारस होते हुए वाजिद अली शाह 12 मई, 1856 को कलकत्ता पहुंचे और मोहल्ला मोची खोला [मटियाबुर्ज] में ठहरे। सफ़र से बहुत थक जाने के कारण ऐसे बीमार पड़े कि खाट पकड़ ली। लन्दन जाने का इरादा छोड़ना पड़ा। अन्ततः उनकी मां मलिका किश्वर और बेटा नौशेरवां क़दर ही लन्दन को गए।

इधर अवध में क्रान्ति के समाचार कलकत्ते तक पहुंच रहे थे। कम्पनी सरकार को सन्देह हुआ कि क्रान्ति में वाजिदअली शाह का हाथ है और उन्हें फ़ोर्ट विलियम में क़ैद कर लिया गया। दो वर्ष फ़ोर्ट विलियम में बादशाह ने कठोर कारावास में व्यतीत किए।

फ़ोर्ट विलियम से आज़ाद होने के बाद बादशाह के पास एक बादशाह, एक शासक, एक सेना नायक के रूप में कुछ शेष न था। अतः वाजिद अली शाह का ध्यान फिर ललित कलाओं की ओर आकृष्ट हुआ और इस समय से देहावसान तक के समय में वाजिद अली शाह ने अपनी अधिकतर पुस्तकों की रचना की।

'बनी' की रचना

उर्दू अदब में उस समय में तरीक़ा था कि पुस्तक के लिए 'तारीख़' कही जाती थी। 'बनी' के लिए भी अनेक शायरों ने तारीख कही जिसे पुस्तक के साथ ही अन्त में प्रकाशित किया गया है। वज़ीर-उल्-सुल्तान नवाब मोहम्मद अली ख़ाँ बहादर, गुलशन-उद्दौला बहादर 'बहार', ताशउद्दौला बहादर 'ऐश', मुज़फ्फ़र अली 'हुनर', सादिक अली 'मायल' शागिद बादशाह, मालिकउद्दौला बहादर 'मुख़लिस', राजा गंगाप्रसाद बहादर 'बदर', खुलासतउद्दौला मुंशी अली नक़ी बहादर, आग़ा हज्जू 'शरफ़', नुसरतउद्दौला बहादर 'नादिर', अब्दुल हकीम 'ख़ाबिर', शागिद शाह अली गौहर, मेंहदी हसन 'अहसन', मुंशी अली बख्श 'हाशिम', शिवप्रधान महाराजा जगपाल सिंह बहादर, मीर हसन जान 'ज़िया', शायर खुशगो 'रियाज़', मीर सरवत अली 'हुमायुं', मीर क़ासिम हुसैन 'जौहर', मोहम्मद अली दारोग़ा कुतुबख़ाना शाही, रईसउद्दौला बहादर, सभी विद्वानों के कथनों से सन् 1878 ई० की पुष्टि होती है। हाशिम के अनुसार, यह पुस्तक 1877 ई० में लिखकर तैयार हुई, इसी सन् में प्रेस कापी बनी और सन् 1878 ई० में प्रकाशित होकर चर्चित हुई।

कलकत्ता में शाही छापाख़ाना के दारोग़ा [प्रबन्धक] अमीर अली ख़ाँ 'हिलाल' थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनके विषय में बादशाह लिखते हैं—"वे अहदे शाही में छापाखाना से सम्बन्धित रहे, दारोग़ा रहे, सल्तनत समाप्त होने के बाद जब मैं कलकत्ता पहुंचा मेरे साथ थे, और मेरे ही साथ क़िला विलियम फ़ोर्ट में दो साल दो महीने तक क़ैद रहे, और आज़ादी के बाद मरने तक यह शख्स मेरे सेवकों में रहा।"[14] यही हिलाल एक स्थान पर लिखते हैं—

'शह किशोरे हिन्द सुल्ताने आलम।
सुलेमाने अख्तर नगर जानेआलम ।।'

हामिदउद्दौला सैय्यद महमूद अली खां बहादर 'बरतर' ने 'बनी' और वाजिद अली शाह के विषय में लिखा है—

'कोई कामिल ऐसा जहाँ में नहीं।
किताबें हर एक फ़न में तसनीफ़ कीं ।।
हक़ीक़त में है माहिर हर जुबां
अरब से अजम तक हैं सब मदहा ख्वाँ ।।
एक अदना सी जिद्दत है यह शाह की
हुई पहले 'नाजो', 'दुल्हन' फिर 'बनी' ।।'

इन शेरों से निकलता है कि सन् 1875 में 'बनी' लिखना आरम्भ हुई[15] और 1877 ई० में पूरी हुई। अतः यह बात स्पष्ट है कि 'बनी' 1875 ई० और 1877 ई० के बीच लिखी गई, 1877 ई० में इसकी प्रेस कापी बनी और 1878 ई० में यह पुस्तक पहली बार प्रकाशित हुई।

वही 'बरतर' एक दूसरे स्थान पर लिखते हैं—

अख्तर बड़ा जुग-जुग जियो
मुख सेहरा सर मुकुट विराजे
"बनी" बनाई चंचल महने
सुन्दरी के मन मन प्यारे

---

14. बनी—अध्याय पाँच
15. परिशिष्ट देखिए—उर्दू में तारीख़ कैसे कही और कैसे निकाली जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"बरतर" ने तारीख़ विचारी रसभीनी नित वतियाँ करके
हंसमुख पाए 'बनी' रंगीली जाओ घनेरी राज दुलारी।

'बनी' के अन्य प्रकाशनों के विषय में अभी तक और कुछ पता नहीं चलता। इस एकमात्र प्रकाशन में 'बनी' छः अध्यायों में विभाजित है—सुर, ताल, नृत्य, रहस, भड़ैती, महलात और वेगमात के खिताब।

वाजिदअली शाह, ललित कलाएं और कुछ भ्रान्तियाँ

वाजिदअली शाह को बचपन से ही संगीत से लगाव था। प्रसिद्ध है कि प्रायः अपने उस्ताद अमीनउद्दौला से पढ़ते समय एक सधी थाप पर पैर की थाप दिया करते थे और इसी बात पर एक बार अमीनउद्दौला ने उन्हें मारा भी था। पर आदत नहीं गई और समय के साथ-साथ शौक़ वढ़ता ही रहा।

सन् 1842 ई० में, वलीअहद (युवराज) बनने के बाद इस शौक़ को पूरा करने का अवसर मिला। मण्डली तैयार करने के लिए मिर्ज़ा वाजिद अली ने कुछ पेशेवर नाचने-गाने-वालियों को एक स्थान (कोठी लंका) 'केसरबाग़' में एकत्र किया और उसका नाम परीख़ाना रखा। परीख़ाना में रहनेवाली विभिन्न परियों को नाम दिए गए और उन्हें रहस के नृत्यों एवं रहस के खेलों का उपयुक्त प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रकार राधा-कन्हैया की प्रेमगाथा पर आधारित पहला रहस, मिर्ज़ा वाजिद अली द्वारा रचित 'क़िस्सा राधा-कन्हैया' केसरबाग़ की एक इमारत कोठी लंका, जिसे परीख़ाना कहा जाता था, में खेला गया।

इस रहस की तैयारी, वाजिदअली शाह के अनुसार, हर कला के उस्ताद ने कराई थी। ये संख्या में सात थे और मिर्ज़ा वाजिद अली के मासिक नौकर थे। इस नाटक में सुल्तान परी ने राधा का चरित्र और माहरूख़ परी ने कन्हैया जी का चरित्र अभिनीत किया था—अन्य परियों में यासमीन परी, इज्ज़त परी, दिलरूबा परी और हूर परी ने कृष्ण जी की अन्य प्रेमिकाओं के चरित्र अभिनीत किए थे।[16]

---

16. इश्क़नामा (फ़ारसी)——वाजिद अली शाह, पृष्ठ 148-150

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुल्तान परी एक नर्तकी थी जिसका वास्तविक नाम हैदरी था। यह परीख़ाना की दारोग़ा भी थी। उसकी बड़ी बहन दिलबर नृत्य में अद्वितीय थी।[17] माहरूख़ परी एक वेश्या थी जिसका वास्तविक नाम महबूब जान था। वह सरोद बजाने और नृत्य में निपुण थी।[18] दिलरूबा परी भी एक प्रसिद्ध वेश्या फ़ैंजू चूनेवाली की लड़की थी और उसका वास्तविक नाम चुन्नी था।[19]

यासमीन परी और इज्ज़त परी का नाम न पता चल सका पर परीखाना में आने के समय वे नृत्य, संगीत आदि नहीं जानती थीं, वहीं आकर सबकी शिक्षा पाई थी। हूर परी अमीरन डोमनी की लड़की थी और उसका वास्तविक नाम नज्जा था। वह संगीत व नृत्य में निपुण थी और बाद में वेश्यावृत्ति करने लगी थी।[20]

सन् 1847 ई० में 13 फ़रवरी को वाजिदअली शाह बादशाह बने। बादशाह बनने के बाद भी ललित कलाओं को संरक्षण प्राप्त रहा। सन् 1850 ई० में वाजिदअली शाह का लिखा-रहस 'दरया-ए-ताश्शुक़', पुनः 1851 ई० में दूसरा रहस 'अफ़साना-ए-इश्क़' तथा 1852 ई० में तीसरा रहस 'बहरे-उल्फ़त' नाटक के रूप में क़ैसरबाग के विभिन्न स्थलों पर खेले गये।[21]

1860 ई० में क़िला विलियम फोर्ट से आजाद होने के बाद तथा 1887 ई० में देहावसान तक बादशाह का ललित कलाओं को संरक्षण प्राप्त रहा। प्रो० मसूद हसन के अनुसार—"1292 हिजरी (1873 ई०) तक वाजिदअली शाह ने कलकत्ते में तेईस रहस किये थे। उस समय भी मटियाबुर्ज में दो इमारतें रहस आदि के लिए प्रयुक्त होती थीं—राधा मंज़िल और सारदा मंज़िल। इसमें कुल मिलाकर 216 रहसवालियां थीं और इनकी तन्ख्वाह 9598 रु० माहवार थी। उन्हें सिखाने के लिए उस समय 134 उस्ताद (साजिन्दे) थे जिनका मासिक वेतन 3261

---

17. महलख़ाना शाही, पृष्ठ 42, 116
18. वही, पृष्ठ 41, 61
19. वही, पृष्ठ 52, 53
20. महलखाना शाही—वाजिदअली शाह, पृ० 42
21. लखनऊ का शाही स्टेज—प्रो० मसूद हसन, पृ० 121, 140, 155

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रु० माहवार था। इन रहसों की शिक्षा स्वयं बादशाह देखते थे। वह रहस जो कलकत्ते में हुए नाच गाने तक ही सीमित थे।"[22]

लखनऊ में तथा कालान्तर में कलकत्ता में इतने कलाकारों को संरक्षण देना तथा सबको नियंत्रित करना कोई आसान काम नहीं था। बादशाह ने कलाकारों के साथ उनके परिवार-जनों को भी आश्रय दिया। रहसवालियों को खिताब देकर उन्हें सामाजिक सम्मान दिया तथा उनमें से अनेक से शादियां भी कीं। इससे इन महिला कलाकारों को सम्यक् संरक्षण मिला और वे बिना किसी भ्रम अथवा हस्तक्षेप के कला-साधना में संलग्न हो सकीं। इस पद्धति के पीछे बादशाह का कला के प्रति शुद्ध लगाव था किसी प्रकार के वासनात्मक सम्बन्ध की प्रवृत्ति नहीं थी। शिक्षा के समय बादशाह पूर्ण नियंत्रण रखते थे। इसके लिए राज्यादेश बनाए गए थे। तालीम के समय वे स्वयं बिना खाए-पिए पहरों बैठे रहते थे।

ललित कलाओं में उस समय लखनऊ और अवध में नक़ल कला और भड़ैती का भी बोल-बाला था। जन मनोरंजन का यह भी एक साधन था। अतः इसे भी ललित कलाओं में जोड़ लिया गया था। इस कला को भी बादशाह का संरक्षण प्राप्त था। अनेक भांड़ शाही दरबार से मासिक वेतन पाते थे। यही नहीं, अपनी इस पुस्तक बनी में वाजिदअली शाह ने भांड़ों के करने के लिए लगभग 200 नक़लें भी लिखी हैं जिनमें कुछ नक़लें बहुत उच्चस्तरीय हैं और कुछ जन-मनोरंजन की। एक नक़ल मुशायरे की अपने आपमें साहित्यिक पुट लिए हुए अद्वितीय है। इसमें 52 प्रसिद्ध शायरों की नक़लें उतारी गई हैं जिसमें 26 उर्दू के तथा 26 फ़ारसी के हैं और इन सारे शायरों के कहे हुए कलाम का पहला शेर बादशाह ने स्वयं लिखा है। इस नक़ल को ध्यान से पढ़ने के बाद वाजिदअली शाह के अद्वितीय भाषा ज्ञान, साहित्य-परख और कला-संरक्षण-क्षमता का सरलतापूर्वक अनुमान लगाया जा सकता है।

कुछ भ्रान्तियां तथा निवारण

प्रायः ये भ्रान्ति जनता में व्याप्त है कि वाजिदअली शाह राजा इन्द्र थे और सैकड़ों व हजारों स्त्रियों के बीच रहकर नृत्य व संगीत में लीन रहते थे और इन्द्र-सभा के नाम से

---

22. लखनऊ का शाही स्टेज—प्रो० मसूद हसन, पृष्ठ 121, 140, 145

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क़ैसरबाग़ में नाटक खेला जाता था। इस संदर्भ में सीतला सहाय का एक लेख 'चाँद' मासिक पत्रिका में मार्च, 1934 ई० में प्रकाशित हुआ था। उसके मुख्य भाग यहाँ दिये जाते हैं,"........ जब तक अमजद अली शाह ज़िन्दा रहे, नृत्य कला का इनका (वाजिदअली शाह का) यह प्रेम कुछ विशेष व्यक्तियों को छोड़कर बाक़ी सब लोगों से छिपा रहा। अमजद अली शाह को वाजिदअली शाह का यह रंग ढंग पसन्द नहीं था। वे मरते समय वसीयत कर गये थे कि उनके बाद राज्य का अधिकारी न बनाया जाए.......... जाड़े की ऋतु में किसी महीने नवाब साहब एक नाटक 'इन्द्रसभा' खेला करते थे। यह नाटक शाही ढंग का होता था अर्थात् इनका नाटक......... दस दिन तक रात-दिन बराबर चलता रहता था। इस नाटक को केवल महल की स्त्रियाँ और राज परिवार वाले ही देख सकते थे। इसका रंगमंच सारा क़ैसरबाग़ होता था। क़ैसरबाग़ की सफ़ेद बारादरी में, जिसमें आजकल अनेक सभाएँ होती हैं राजा इन्द्र का दरबार लगता था।" और इसके बाद ग़िज़ाला और राजा इन्द्र की न जाने कौन सी मनगढ़ंत कहानी दी है जिस पर वह नाटक खेला जाता था। आगे वह फिर लिखते हैं, '..........क़ैसरबाग़ बारादरी तीन भागों में बांटी जाती थी। एक भाग में राजा इन्द्र का दरबार लगता था.......... दूसरे भाग में राजा का कमरा सजाया जाता था...........' और तीसरे भाग के विषय में कुछ नहीं पता। कथानक बताने के बाद लेखक ने यह दर्शाया है कि उस नाटक में नायक अर्थात् राजा की भूमिका स्वयं वाजिदअली शाह करते थे और ग़िज़ाला नायिका का चरित्र उनकी कोई एक बेगम अभिनीत करती थीं।

इस लेख से जो बातें सामने आती हैं वह इस प्रकार हैं कि—

1. अमजद अली शाह की वसीयत थी कि वाजिदअली शाह को उनके बाद अवध का बादशाह न बनाया जाए।
2. इन्द्रसभा क़ैसरबाग़ में खेली जाती थी।
3. बादशाह कभी राजा इन्द्र और कभी नायक बनते थे।
4. सफ़ेद बारादरी में इन्द्रासन लगता था।
5. इन्द्रसभा का दिया गया कथानक—ग़िज़ाला की कहानी।

वाजिदअली शाह के फूफा इक्तिदारउद्दौला ने क़ैसरबाग के सारे जलसे एवं रहस देखे थे। वह अपनी पुस्तक 'तारीखे़-इक्तिदारिया' में दरया-ए-ताश्शुक़ के विषय में लिखते हैं कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1267 हि० (1850 ई०) में पहली वार एक वर्ष की तैयारी के बाद खेला गया। कहीं किसी ने कहानी गिज़ाला महरूख़ की, हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ की। हज़रत ने उसे नज्म करके एक मसनवी कही और कई लाख रुपये व्यय करके उसका एक रहस तैयार करवाया। उसके पहले दिन के जलसे का यह बयान है कि क़ैसरबाग़ में जो फ़रहत मंज़िल थी उसमें उस जलसे की तैयारी हुई और वाजिदअली शाह ने सब शाहज़ादों को बुला भेजा। सब आकर फ़रहत मंज़िल में कुर्सियों पर बैठे और बादशाह स्वयं सबसे आगे एक ऊँची कुर्सी पर……… जब नाच समाप्त हुआ तो एक कारचोबी मसनद लाकर बिछाई गई और एक शख्स बादशाह बनकर उस पर आकर बैठा और सब औरतें ये बोल गाने लगीं "जाने आलम रहस मुबारक— जाने आलम रहस मुबारक"…………दूसरे दिन फिर इसी तरह वाजिदअली शाह आकर बैठे और सब शाहज़ादे अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे…………उस रात सारी रात इसी जलसे में कट गई और सवेरे यह रहस ख़त्म हो गया।[23]

वाजिदअली शाह स्वयं लिखते हैं कि—"हक़ीक़त में ऐसा जलसा मैंने कभी नहीं देखा, यह जलसा सुबह को नहीं होता, शाम के वक्त होता है।[24]"

अमजद अली शाह ने वाजिदअली शाह को अपना वलीअहद बनाया था और अपनी मोहर उनको दे दी थी। 'इन्द्रसभा' के लेखक अमानत लखनवी थे और 'इन्द्रसभा' न कभी क़ैसरबाग़ में खेली गई और न वाजिदअली शाह से उसका कोई सम्बन्ध था।[25] जो कथानक सीतला सहाय ने 'इन्द्रसभा' के नाम से लेख में दिया है, वह वास्तव में 'इन्द्रसभा' का नहीं, वाजिदअली शाह द्वारा रचित 'दरया-ए-ताश्शुक़ का टूटा-फूटा रूप है।

सफ़ेद बारादरी के विषय में शरर लखनवी लिखते हैं कि क़ैसरबाग़ में एक बहुत बड़ी शानदार बारादरी पत्थर की बनवाकर उसका नाम क़सरूल-अज़ा रखा। ये बारादरी भी हक़ीक़त में इमामबाड़ा थी जिसको बादशाह की जिद्दत पसन्द तबियत ने अलग रूप दिया था[26]—

---

23. तारीखे इक्तिदारिया, पृ० 265-281
24. महलखाना शाही, पृ० 110
25. लखनऊ का अवामी स्टेज, प्रो० मसूद हसन
26. सुल्तानेआलम वाजिदअली शाह, मौलाना शरर लखनवी, पृष्ठ-70

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिसकी तारीख़ मक़बूलउद्दौला मेहदी अली खां 'कुबूल' ने कही थी। अमीरउद्दौला लाइब्रेरी में एक अंग्रेजी की पुस्तक में उसका एक चित्र भी दिया है जिसमें ताज़िया रखा है और मजलिस हो रही है।

अतः सीतला सहाय के लेख का कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं रह जाता है।

कुछ महानुभावों के विचार

"मदानुल मौसीक़ी" के रचयिता हक़ीम करम इमाम लखनऊ के प्रख्यात संगीतज्ञ, संगीत-शास्त्री, चित्रकार तथा उस्ताद बादशाह के समकालीन रहे हैं। उन्होंने उक्त पुस्तक में बादशाह वाजिदअली शाह के सांस्कृतिक योगदान की चर्चा करते हुए लिखा है—"नवाब वाजिदअली शाह इस युग के श्रेष्ठ संगीत प्रेमी, कलाकारों के आश्रयदाता हैं तथा वे सभी कलाओं के पूर्णतः जानकार भी हैं……आज कलकत्ता में इस स्थिति में पड़े रहने पर भी उन्होंने अपना शौक़ कम नहीं होने दिया है…… नादिर शाह ने दिल्ली की जितनी लूट की थी उससे अंग्रेजों की लखनऊ की लूट अधिक वीभत्स रही है।"

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के अध्यक्ष मोहम्मद हसन के अनुसार, 'वाजिदअली शाह का मुक़द्दमा लन्दन में मलका विक्टोरिया और ब्रिटिश साम्राज्य के सामने पेश करने के लिए अब्दुल हलीम शरर के नाना लन्दन गए थे। इससे अन्दाज़ा हो सकता है कि उनका ख़ानदान अवध के नवाबों से कितना निकट था। अवध के अन्तिम दिनों की कहानी को जितने दर्दनाक और प्रभावशाली ढंग से शरर ने बयान किया है वह खुद अपनी जगह एक क्लासिक है।'

यही शरर लिखते हैं—'वाजिदअली शाह कालीन लखनऊ के संगीत ने चाहे उच्चकोटि के संगीत को रिवाज न दिया हो मगर उसकी सुधा से उसे आमपसन्द या लोकप्रिय बनाने का यह शहर बड़ा ज़बरदस्त स्कूल बन गया था………मटिया बुर्ज में जो साज़िन्दे और गवैये वाजिदअली शाह के दरबार में नौकर थे उन सबको मैंने खुद सुना था। अहमद ख़ाँ, ताज ख़ाँ, और गुलाम हुसैन ख़ाँ उस समय के धुरन्धर संगीतकार माने जाते थे। दुल्ली ख़ाँ, जिसने सारे कलकत्ते में अपनी धूम मचा रखी थी और अपने जादू भरे कण्ठ से हर छोटे बड़े को मोहित कर लिया था, लखनऊ का ही था।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रोफ़ेसर असद उल्ला ख़ां 'कौकब' संगीत के धुरन्धर पंडित थे और कलकत्ते में भारतीय संगीत के प्रोफ़ेसर के रूप में प्रसिद्ध थे। वे लिखते हैं—'वाजिदअली शाह के शासनकाल में लखनऊ में संगीताचार्यों का एक बहुत बड़ा समुदाय जमा हो गया था·········· संगीत के आचार थे—प्यारे ख़ाँ, जाफर ख़ाँ, हैदर ख़ाँ, बासित ख़ाँ। ये सब मियां तानसेन के ख़ानदान की यादगार थे।·········मेरे वालिद नेयमत उल्ला ख़ाँ ने बासित ख़ाँ से ही संगीत की शिक्षा ली थी। वे लगभग ग्यारह वर्षों तक मटियाबुर्ज कलकत्ते में वाजिद अली शाह के साथ रहे।'

ब्रज संस्कृति के विद्वान् रामनारायण अग्रवाल अपने ग्रन्थ 'सांगीत : एक लोकनाट्य परम्परा' में लिखते हैं—"वाजिद अली शाह स्वयं एक भावुक लेखक, सौन्दर्य के अनन्य उपासक, कला के क्षेत्र में मौलिक उद्भावनाओं के स्रष्टा तथा पूरी भारतीय नाट्य-परम्परा और लोक-धर्मी नाट्यविधा से भलीभाँति परिचित थे। इसीलिए उन्होंने मुक्त-हस्त से धन लुटाया था।"

राजा दुर्गाप्रसाद सन्देलवी 'बोस्ताने अवध' में लिखते हैं—"उनका-सा कोई बादशाह कला के इस उच्च स्तर के साथ हिन्द की ज़मीन से नहीं उठा और इन विशेषताओं के किसी बादशाह ने हिन्दुस्तान के वातावरण में बादशाही का झंडा नहीं उठाया।"

भाषा

पुस्तक छह अध्यायों में विभाजित है—सुर, ताल, लय, रहस, नक़ल और नाम व खिताब। पुस्तक का आरम्भ पुरानी तर्ज़ की उर्दू से होता है। सुर अध्याय में सुरों का बखान आम बोलचाल की भाषा में है। ध्रुवपद, ख्याल, सावन, ठुमरी, होली, दादरा की भाषा ब्रज और अवधी है। अनेक दादरे और ठुमरियों की भाषा बंगाली भी है। कुछ मुखड़े ऐसे भी हैं जिनका आस्ताई हिन्दी में है और अन्तरा किसी और भाषा में—

आस्ताई : दे दे बनी को दूध पूत नारी को
अन्तरा : भालो चौपराल तुम्हार भालो
नजरिया अख्तर असमाई को।

इसमें अन्तरा की भाषा बंगाली है। ताल और लय अध्यायों की भाषा उर्दू है। रहस अध्याय में नृत्य की मुद्राओं को समझाने के लिये रचयिता ने शुद्ध लखनवी भाषा का प्रयोग किया है पर रहस ब्रज भाषा में है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नक़ल और भड़ैती के अध्याय में फ़ारसी के भी कुछ शेर हैं पर सामान्यतः भाषा उर्दू ही है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि विभिन्न अध्यायों में हिन्दी, ब्रजभाषा, अवधी, बंगाली, फ़ारसी आदि भाषाओं का रचयिता ने खुलकर प्रयोग किया है और उन सारी भाषाओं के मोतियों को उर्दू के धागे में बांध दिया है जो पूरी पुस्तक में आरम्भ से अन्त तक दिखाई देती है। प्रस्तुत बन्दिशें पढ़ने के बाद लेखक का संगीत और विभिन्न भाषाओं के गहन अध्ययन की पुष्टि होती है। जिस प्रकार उन्होंने हिन्दुस्तान की अनेक भाषाओं को मिलाकर संगीत की एक डोर के द्वारा हर संगीत प्रेमी ही नहीं वरन् हर हिन्दुस्तानी के मन में जो भावना उत्पन्न करने की कोशिश की है उसका प्रत्यक्ष स्वरूप दीखने लगता है।

–रौशन तक़ी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाजिद अली शाह रचित पुस्तक

बनी

बऔने ख़ानकाह कौनों मकाँ वा यमने सानी ज़मीनों ज़मां नुस्ख़ा-ए-हाज़ा तस्नीफ़ बन्दगान सिकन्दरशान ।[1]

मुसम्मा-वा बनी[2]

दर दारूल अमान कलकत्ता
मोहल्ला मटिया बुर्ज
बमुतवे सुल्तानी बां एहतिंमामं
रईसुद्दौला ज़ेवरतबा पोशीद[3]

1—यह पुस्तक आलीशान उसके नाम जो ज़मीन और आसमान और सारे जहान का मालिक है ।

2—बनी नाम दिया इसका ।

3—मोहल्ला मटिया बुर्ज कलकत्ता में रईसुद्दौला ने शाही प्रेस से प्रकाशित कराया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनी

बिस्मिल्लाह-इर-रहमान-इर-रहीम।[1] बाद हम्द[2] ख़ानक़ाह-हफ्त-पैकर[3] और नात[4] सय्यद-ख़ैरुल-बशर[5] और मनक़बत-शेरे दावर[6] वाजिद अली शाह "अख़्तर" ख़िदमते तालेबीन[7] और शायक़ीन[8] में अर्ज़ करता है, वादीए-इत्तलादेही[9] में पांव धरता है। क़ब्ल[10] इसके दो किताबें "नाजो" और "दुल्हन" तक़सीम हो चुकी हैं। हत्तुलवसा[11] सबको दीं मगर उनमें फ़क़त आस्ताई-अन्तरे हैं। याददाश्त की कुम्बी गड़ी है, अलबत्ता सैरबाग[12] नहीं है। इश्क़ और आशिक़ी का दाग़ नहीं है। अक्सर नाज़रीन[13] उसे तआम[14] बे-नमक जानते हैं, निरी राक़िम[15] की बकबक जानते हैं अलबत्ता उसके मुतालेए[16] से लुत्फ़ उठेगा। जो पढ़ेगा आपे में न रहेगा। हरचन्द वो दोनों जिल्दें भी मेरी सरकार में रायंगा[17] नहीं गईं। सब ध्रुवपद और ठुमरियां वग़ैरा बाक़ायदा ज़ोहरा-जमाल ने याद कीं। मगर इसका रंग नया है। जो नक्ल और क़िस्सा है, एक ताज़ा गुंल खिला है, बाल की खाल खींची है, हिन्दी की चिन्दी की है। इन्साफ़ तब्बाओ[18] के हाथ है। मेरा तो बंगालियों का साथ है। मुक़फ्फ़ा-मुसज्जा[19] इबारत[20] का ख्याल नहीं किया। मगर किसी मतलब को हाथ से जाने नहीं दिया। बल्कि इसी लिहाज़ से तर्क[21] मंजूर हुआ कि मतलब न जाए इबारत आराई[22] से किसी को सरे मोशुवह[23] न आए।

इसका नाम बनी है, हक़ीक़त में बनी ठनी है और इसमें छः बाब[24] हैं।

1—शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बहुत दयावान और दयालु है। 2—प्रार्थना 3—अल्लाह 4—आरती 5—मोहम्मद-ए-मुस्तफ़ा 6—हज़रत अली की प्रशंसा 7—पाठकों की सेवा में 8—शौक़ीनों 9—सूचनाओं की घाटी 10—पूर्व 11—जितना हो सकता था 12—बाग़ की सैर 13—पाठक 14—खाना 15—बस लेखक 16—पढ़ने से 17—व्यर्थ 18—पाठकों 19—पद्यमयी 20—बयान 21—छोड़ना 22—ज़बरदस्ती के बयान 23—बढ़ने में बनावटी सजावट का सन्देह 24—अध्याय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहला अध्याय

सुर

वाजिद अली शाह ने संगीत की विधिवत् शिक्षा उस्ताद बासित ख़ाँ से प्राप्त की थी। प्यारे ख़ाँ, हैदर ख़ाँ और बासित ख़ाँ—इस युग में तानसेन के ख़ानदान की यादगार थे। इनमें उस्ताद बासित ख़ाँ की शिष्य-परम्परा का विशेष महत्व है। माने जाने संगीतज्ञ तथा संगीत-शास्त्री प्रोफ़ेसर असद उल्ला ख़ाँ "कौकब" के वालिद नेमत उल्ला ख़ाँ ने भी उस्ताद बासित ख़ाँ से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी। असद साहब लगभग ग्यारह वर्ष तक वाजिद अली शाह के साथ मटिया बुर्ज (कलकत्ता) में रहे। वाजिद अली शाह के मुसाहिब गवैयों में से अनीसउद्दौला और मुसाहिबउद्दौला ने उस्ताद प्यारे ख़ाँ से शिक्षा प्राप्त की थी।

वाजिद अली शाह के सम्यक् संगीत ज्ञान के कारण ही उनके युग से संगीत को पर्याप्त प्रश्रय मिला। पुस्तक में प्रस्तुत सुर-अध्याय से स्पष्ट होता है कि ध्रुवपद धमार, ख्याल, ठुमरी-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टप्पा सभी शैलियों का उन्हें ज्ञान था। उन्होंने 'अख्तर' उपनाम से पूर्वोक्त शैलियों में काव्य रचना की जिसे उनके युगीन गवैयों ने प्रस्तुत किया। किन्तु इस सामग्री का इस समय मात्र ऐतिहासिक महत्व ही रह गया है क्योंकि उन्होंने स्वरलिपि प्रस्तुत नहीं की। ललनपिया ने हज़ार से अधिक ठुमरियाँ रचीं, जो कि ललन सागर में प्रस्तुत हैं। संगीतज्ञ भारतेन्दु वाजपेयी ललनपिया की परम्परा से जुड़े, अतः उन्होंने ललनपिया की 150 ठुमरियाँ स्वरलिपि सहित प्रस्तुत कर दीं, जिससे ललनपिया की गायन शैली की आज हमें जानकारी उपलब्ध हो जाती है। वाजिद अली शाह की शिष्य-परम्परा में ऐसा न होने से आज ऐसा कोई साधन नहीं है, जिससे गायकी की जानकारी सुलभ हो सके। उन दिनों रिकार्डिंग पद्धति नहीं थी और एक अनुमान के अनुसार वाजिद अली शाह के युग में स्वरलिपि की प्राचीन भारतीय पद्धति लुप्त हो गयी थी, इसे स्वयं वाजिद अली शाह ने नया रूप दिया था जिसका पुनरुद्धार कालान्तर में संगीत के चतुर पंडित भातखण्डे ने किया था।

प्रस्तुत अध्याय में जानेआलम ने भारतीय संगीत परम्परा के तत्वों को एक आयाम प्रदान किया है। उर्दू लिपि में यह हिन्दी की रचनायें उन्हें लोकजीवन का एक सजग चितेरा सिद्ध करती हैं।

गायन में सर्वाधिक महत्व आलाप का होता है। संगीतज्ञ ध्रुवपद गायन में लयवद्धता के लिए 'ओम नारायण अनन्त हरी' का प्रयोग करते रहे हैं, जो कि आज भी प्रचलित है। इन शब्दों के प्रवाह को 'आलाप' में 'अख्तर' ने क़ायम रखा और एक प्रकार से 'आलापचारी' को धार्मिक भावना से मुक्त कर दिया। उनके आलापचारी में वस्तुतः अधिक सरसता विद्यमान है। ध्रुवपद के चार अंग रहे हैं–स्थायी, अन्तरा, संचारी और आभोग। वाजिद अली शाह ने दो अंग स्थाई तथा अन्तरा में ही ध्रुवपद गायन प्रस्तुत किया। उन्होंने पूर्व प्रचलित रागों में अपने पदों को बांधा। वे राग आज भी प्रचलित हैं।

ख्याल की परम्परा में जानेआलम ने छोटा ख्याल प्रस्तुत किया जिसे बंदिश की ठुमरी भी कहा जाता है। सदारंग तथा अनेक संगीतज्ञों की परम्परा का सुल्ताने आलम ने निर्वाह किया है।

ठुमरी के क्षेत्र में सुल्तानेआलम 'अख्तर' के योगदान की पर्याप्त चर्चा की गई है किन्तु अब इस अनुवाद कार्य के साथ ही यह प्रमाणित हो जाएगा कि संगीत की अन्य शैलियों के क्षेत्र में भी उनका विशिष्ट योगदान रहा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने स्वनिर्मित नयी रागनियों का नामकरण अपनी अभिरुचि के अनुरूप किया है। यथा कन्नड़ (श्याम), जूही, शाहपसंद हुजूरी आदि।

प्रोफ़ेसर कौकब के अनुसार, "उनकी 'आम-पसंद' रुचि ने लखनऊ में संगीत को अपने अत्यधिक उच्च स्तर से खींचकर जनसाधारण के स्तर पर ला दिया। समय की यह रीति देख कर सुरुचि रखने वाले गवय्यों ने भी राग-रागनियों की क्लिष्टता को त्याग कर छोटे-छोटे, सादे, दिलकश और आम लोगों के लिए सुगम विषयों पर संगीत रचना आरम्भ की। जनता में ग़ज़ल और ठुमरी का प्रचलन हो गया। किंतु वास्तविकता यह है कि वाजिद अली शाह की इन कृतियों के माध्यम से उस युग का सांस्कृतिक एवं सांगीतिक माहौल जीवन्त रूप में आज भी उपस्थित हो जाता है और यह प्रमाणित होता है कि लोक अभिरुचि से उन्होंने सीधा साक्षात्कार किया था। लखनऊ की मैखी की सम्पूर्ण भारत में अपनी एक पहचान इसी युग में बनी थी। मुहर्रम में "सोज़" पढ़ने वाले गायक-गायिकाओं ने शाही युग में प्रचलित आमफ़हम रागनियों का ही अवलम्बन ग्रहण किया, जो कि धर्म के माध्यम से महिलाओं के गले में प्रवह-मान हो गई। इन मर्सियों को सुनकर सुविज्ञ गायक भी आश्चर्यचकित हो जाते थे। "सोज़-ख्वानी" की परम्परा ने दीर्घकाल तक लखनवी संगीत धारा को प्रभावित किया है और यह गायकी विशिष्ट शैली के रूप में सम्मानित हुई। यहाँ की गायकी का तेवर और अन्दाज़ ही बदल गया। यह परम्परा आज भी किसी न किसी रूप में जीवित है।" प्रोफ़ेसर कौकब ने जो लिखा है उससे यह स्पष्ट होता है कि वाजिद अली शाह शुद्धतावादी थे और संगीत के शास्त्रीय रूप को अधिक मान्यता देते थे। अतः तद्युगीन संगीत की उस समय आलोचना की गई किंतु कालान्तर में उनके योगदान को सभी ने स्वीकार किया।

वाजिद अली शाह ने अपने सुर-ज्ञान का कथक नृत्य तथा रहसलीला में सार्थक उपयोग किया है। 'रहस' में प्रयुक्त विभिन्न राग-रागनियां इसका प्रमाण हैं।

इस अध्याय के विषय में

लेखक ने पूरी पुस्तक को पांच बाब अर्थात् अध्याय में विभाजित कर दिया है। और बाब एक—पहला अध्याय (सुर-अध्याय), बाब दो—दूसरा अध्याय (ताल अध्याय) आदि नाम दिए हैं। प्रत्येक बाब को फ़सल अर्थात् वर्ग में विभाजित किया है तथा प्रत्येक वर्ग में उस वर्ग से सम्बन्धित द्रव्य दिया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैसे इस अध्याय की पहली फ़सल में आलापचारी के सम्बन्ध में, दूसरी फ़सल में ध्रुवपद, तीसरी में होरी, चौथी में ख्याल आदि के विषय में बताया है। पुस्तक के ऐतिहासिक और सांगीतिक रूप को बरक़रार रखने के लिए इसमें प्रयुक्त तकनीकी शब्दों जैसे आलापचारी, आस्ताई, आदि शब्दों को ज्यों का त्यों रखा गया है।

बाब पहला यानी सुर अध्याय

इस अध्याय में दस फ़सलें हैं।

फ़सल पहली : अलफ़ाज़ आलापचारी में–सुरी[1] राग।

आस्ताई–अरी नता तदा तदाना आ आ नोम
पहली उपज रिख़ब से–री न ना ता तना तोम
दूसरी उपज गंधार से–री नना ता तना तोम
भाग के आस्ताई—री ई नना ना नान्न नाना
ता तना नान्न ना तना तोम
अन्तरा—रो रो नना नना नाना
नना आ आ नो तना तोम

फ़सल दूसरी ध्रुवपद में : ध्रुवपद, राग तिलक कामोद।

यह शवाना [2]रोज़[3] बरती जाती है।

ताल सूलफ़ाख्ता

आस्ताई—मृगनयनों की कटारी लगी अब हमका रिझना
अन्तरा—नोक चुभन लागे मोहे बाढ़ा काटन लागे
फिर अंग से उतारो "अख्तर" अबहीं ये कछना ।।

ध्रुवपद, राग तिलक कामोद, ताल सूलफ़ाख्ता

आस्ताई—चाल चलत अपनी कोऊ जोवन,
मधमा तिसल दिखाए दे

---

1. आलापचारी के सुरों को लेखक ने सुरी राग का नाम दिया था। 2. रात 3. दिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—अब रसमा मां सखियन के रंग को
अख्तर पिये दिखाए दे।

राग ऐज़न,[1] ताल तीवरा

आस्ताई—नाम् बताऊँ तोहे तालों का
पटताल, तीवरा, झूमरा, सूलफ़ाख्ता,
रूपक, व्रम, लछमी, तिताला।
अन्तरा—रच पच की माता सकून की रूध
नारि में अब मन की दीजैं
लीजैं रूप दरूस कन्दकलास रितु पर
सीधे परवन मनत खटाल।

राग ऐज़न, ताल चौताला

आस्ताई—प्यारे सुल्ताने आलम मेरी बात को मान लो तुम।
अन्तरा—विनती करत तुमसे व्याकुल, लखनऊ चलियो जरूर।

ध्रुवपद, पिन्हाड़ी झंझवटी, ताल चौताला
यह शबाना रोज़ बरती जाती है।

आस्ताई—इतना जाई कहियो हमरी ओर से
हरिसूँ कर जोर-जोर के
अन्तरा—दरस दीजै विरहन व्याकुल तरपत
सहो न जात बिछुरन को दुःख भारी।
संचारी—जब धरी गोपाल अख्तर को ई बिनत
बन अनूप ससा की मल दुखियारी।

ध्रुवपद, राग ललित, ताल चौताला
इसका वक्त सुबह से दिन चढ़े तक है।

आस्ताई—भोर भई आए मेरे द्वारे
जोगिया अलख जागे कहि जागे।

---

1. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—चैन सखी कहत राधा जी
अख्तर पत राम किसन से मन लागे

ध्रुवपद, रागिनी कौकब, ताल चौताला

पहर दिन से दोपहर दिन तक इसका वक्त है।

आस्ताई—भरन जो गई जल जमुना ठाढ़ो पनघट नागर परगास दरस गयो।

अन्तरा—कर मुरली-सीस मुकुट 'अख्तर' मन हर लीनो।

ध्रुवपद, दरबारी कान्हड़ा, ताल चौताला

दोपहर दिन से तोन पहर दिन तक इसका वक्त है।

आस्ताई—औ हैदर ए-कर्रार दुलदुल सवार मीर कौसर के वचन तिहारी।

अन्तरा—खैबर कुसाए मार मरहब को 'अख्तर' जुल्फिकार कर निकारी।

ध्रुवपद, रागिनी मुजीर, ताल चौताला

पहर दिन रहे से चार घड़ी दिन रहे तक इसका वक्त है।

आस्ताई—मुजीर रागिनी नेक तान उपज स्वर मोरे मन में आई।

अन्तरा—'अख्तर' दोऊ कोमल धैवत की मिलन बात है ज्ञान की।

ध्रुवपद, श्रीराग, ताल चौताला

इसका वक्त दो घड़ी दिन रहे से चिराग़ जले तक है।

आस्ताई—वंशीधर नटनागर गिरिधर गोपाल स्वरूप को
ई विनत बन अनुप ससा के मलमार पिछाड़ी।

अन्तरा—बाम बावनी मन खपचे दांत लहर फूंके
फूंक देवन के दो दाता 'अख्तर' डंड मार लताड़े।

ध्रुवपद, श्रीराग, ताल चौताला

आस्ताई—तरनी तेरो मन में आयो स्याम ग्यान
जोवन बजत मन में रंग विहार प्यादे।
अन्तरा—बाजी लगे चौसर की प्यारे 'अख्तर',
मोहे चाल याद दिला दे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुवपद, रागिनी खमाज, ताल सूलफाख्ता
यह तमाम शब बरती जाती है।

आस्ताई—माता ममता मधुवारी दवाई दीजै दवाली।

अन्तरा—मृगनैन लमछुई तीखी नजर 'अख्तर' मतवाली।

रागिनी खमाच, ताल लक्ष्मी

आस्ताई—करना नाथ गजपत हरी हरपत गजपत पद्पाल गोपाल।

अन्तरा—"अख्तर" जान दिल के चैन तुमसे सच मान लगा है हरि लाल।

ध्रुवपद, राग मालकोस, ताल चौताला
इसका वक्त आधी रात से पहर रात रहे तक है।

आस्ताई—पीत पछोरा और कटसीर्ली ई कांधी कामरी धरे
बिरह रूप आ आ रागे।

अन्तरा—मोहिनी मूरत देखी जो स्याम की
'अख्तर' दुख दर्द सब भागे।

ध्रुवपद, रागिनी सोरठ, सिंदूरा, ताल सूलफ़ाख्ता
यह फ़सल बरसात की तावे है।

आस्ताई—तेन रे माथे तिलकम् अतबोला पूरी पूरी आही आही आही।

अन्तरा—जब कानन कुन्दल त्रिसूल भवतरानी तेरे
नयनन विधिया 'अख्तर' नायक कहात आही आही आही।

फ़सल तीसरी होरी में : होरी धमार, रागिनी पीलू

इसका वक्त दोपहर ढले दिन से चार घड़ी दिन रहे तक है।

आस्ताई—मेरी मुरली अधर बिराजे मैं तुम्हें प्यार करती हूं।

अन्तरा—कान्हा मोरी लाज गयी 'अख्तर' अपनी विपत मन पे धरती हूं।

दूसरी होरी धमार, राग परज
इसका पिछली पहर रात का वक्त है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—अलसाने को आई तेरी माँ रे वजन तिहारी पहचाने
अन्तरा—सप्त सुरन को गाओ बजाओ 'अख्तर' तान की लय जाने।

फ़सल चौथी ख्याल में : ख्याल, रागिनी लोम ताल, जल्द तिताला
यह रात-दिन गायी जाती है।

आस्ताई—सांवरा मोरे मन भावा देखो
सइंया ने चेरे वाला यार आंख लगावां जावां।
अन्तरा—दाग जिगर के भमरे रूप के 'अख्तर' नजरिया लावां।

ख्याल, रागिनी रामकली, ताल धीमा तिताला
इसका वक्त सुबह से पहर दिन चढ़े तक है।

आस्ताई—हाजिरी दीजिए जनावे हज़रते अब्वास
अलेहिस सलाम की हुस्न जवानी ठानी।
अन्तरा—शेर-ए-खुदा के पुत्र बीर हुसैन के
"अख्तर" नज्र उन्हीं की मानी।

ख्याल, तोड़ी, ताल धीमा तिताला
इसका भी वक्त सुबह से पहर दिन चढ़े तक है।

आस्ताई—माई रे यह जोबन मदमातियाँ।
अन्तरा—'अख्तर' के संग पीत करूँगी
धकधक होत मोरी छतियां।

ख्याल, रागिनी गौड़ सारंग, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त बाद भैरवी के दोपहर दिन तक है।

आस्ताई—बाबू का छोरा वीन वजावे गावे नीकी तानन सुर से।
अन्तरा—वाजत मन्दल लुभावत मन को 'अख्तर' हमरे द्वारे आवे।

ख्याल, रागिनी पीलू, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त दोपहर ढले दिन से चार घड़ी दिन रहे तक है।

आस्ताई—लडीला हमार खम्भड़ लाडला यार।
अन्तरा—भवें कमान सी आंखें नशीली "अख्तर" रसीला हमार।

ख्याल, दरबारी कान्हणा, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त बाद दोपहर दिन के पहर दिन रहे तक है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—आप ही करीम रहीम पाक परवरदिगार
धरती क़ो कर वजूद अपनी दुनिया को निरंकार।

अन्तरा–जो तेरा रूप उन दाता "अख्तर" नारायन करतारा।

ख्याल, राग मुलतानी, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त पहर दिन रहे से चार घड़ी दिन रहे तक है।

आस्ताई—उई घुड़दे रे अरी प्यारे वैर
सुन रे मदरियाँ मोरी रे

अन्तरा—पायल पग की झनन झनन बाजे
हट न सहूंगी "अख्तर" तोरी रे।

ख्याल, पहाड़ी झिंझौटी, ताल जल्द तिताला

इसको हर वक्त बरता जाता है।

आस्ताई—ऐ सजन उन बिन कोई नहीं अपना।

अन्तरा—रामानुद्धी मुखड़ा "अख्तर" सा।

ख्याल, रागिनी भटियार, ताल जल्द तिताला

इसको भी हर वक्त बरता जाता है।

आस्ताई—आज मोरे घर काज, मंदीला बाजे माई रे।

अन्तरा—गलियों-गलियों हुस्न बरसत है धलकत है नगारा
'अख्तर' प्यारा मुल्क अवध पर राजे माई रे।

ख्याल, रागिनी भटियार की मांझ, ताल जल्द तिताला

यह तमाम रात बरता जाता है।

आस्ताई—बंगला खूब छवायो जामे नारायन बोले।

अन्तरा—कोठो ऊपर दरजवा "अख्तर" बंद खोले।

ख्याल, खमाच, ताल धीमा तिताला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसका वक्त तमाम रात है।

आस्ताई—कहीं होवत बिजली चमक-चमक।

अन्तरा—"अख्तर" धक-धक छातियां बाजत
चौंध-चौंध मन लपक-लपक।

ख्याल, खमाच, ताल सवारी

आस्ताई—अब मैं कैसे आऊँ रे ए री तिहारे पास।

अन्तरा—"अख्तर" क्योंकर पाऊँ रे मैं तुम्हारी लाज,
नाचत प्यारी जाऊँ रे एहि तिहारे पास।

ख्याल खमाच, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—सूर बजरिया रोहू महासेर,
मियां मछली पाली हमने।

अन्तरा—पड़आ नैन भगती सुनारन "अख्तर"
देखो कटिया निकाली हमने।

रागिनी व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—कल कुछ जो हो गया कहूं क्या
दस्ते शफ़कत फ़ेर फ़ेर कर यों ही रखा दिल थाम थाम कर।

अन्तरा—भिचक रहा मन में "अख्तर"
उस पिया के मुख का नाम नाम कर।

ख्याल, राग भोपाली, ताल धीमा तिताला

इसका वक्त चार घड़ी रात गये से आधी रात तक है।

आस्ताई—जानी प्यारी आओ कलेजा
आशिक तुझको प्यार करेगा।

---

1. ऐज़न—पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—"अख्तर" लाओ हाथों को अपने
दोनों उंगली में हार क़रेगा।

ख्याल, जुवान टोन अंग्रेज़ी मार्च, रागिनी व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—मज़े तुज़म सिज़े किज़ा कज़हज़ा हज़ै (मैंने तुमसे क्या कहा है ?)

अन्तरा—तुज़ुम नज़े मुझुज़ सेज़े कुछुज़ सुज़ नज़ा हज़ै
(तुमने मुझसे कुछ सुना है ?)

ख्याल, रागिनी शहाना, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त भी चार घड़ी रात गये से आधी रात तक है।

आस्ताई—सागर मोरा खटोलना अरे सैंयाँ बोलो क्यूँ न रे।

अन्तरा—जिया मस्कत मोरा बार-बार "अख्तर"
बंद अंगिया के खोलो क्यों न रे।

रागिनी व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—अलवेली जच्चा तारें देखन चली।

अन्तरा— ए री जच्चा तेरा बच्चा सलामत
"अख्तर" नाज़ों पले।

ख्याल, रागिनी सोरठ लम्बी ताल ईजादी

यह फ़सल बरसात और तावे[3] अब्र[4] की है।

आस्ताई—मोरा मन धरम अँखियाँ सुख धन लगन वतियाँ।

अन्तरा—वदन तन चमन हस्तियाँ तुम "अख्तर" लिखो खतिया।

रागिनी ऐज़न, ताल धीमा तिताला

1-2. पूर्वोक्तानुसार, 3. पावन्द, 4. वादल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—मेल पे धारो मारो राज महारी सुख मानड़ी राजा हो।

अन्तरा—भूली अकासमुखी देखत जौवन "अख्तर" हुड़ी तिहारी राजा हो।

ख्याल, रागिनी नट मल्हारी, ताल जल्द तिताला
यह भी फ़सल बरसात की ताबे अन्न की है।

आस्ताई—लागी लागी "अख्तर" प्यारे से नजरिया माँ।

अन्तरा—करक-करक बिजली चौंध-चौंध गई
भीज गई अंगना में लहरिया माँ।

रागिनी व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—मध घटोर कमचा बिहारी मध कर गई पायनात
पर सुधनी ताको अजात सैंया दु:ख मदारा सायनात।

अन्तरा—लाख जतन किये दिल ने बहुतेरे
"अख्तर" न पूंछे मेरी बात।

राग, ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—इन सांवरिया की लटक चाल आज
मोरे जिया में बस गई रे।

अन्तरा—रोवत-रोवत जी निकस गयो
"अख्तर" बैरनियाँ हंस गई रे।

राग, ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—इस धुलबुलिया की बांकी नोख
आज मोरे मन में चुभ गई रे।

अन्तरा—"अख्तर" पायल बाजत मोरी
हाथड़ डोंख में खप गई रे।

रागिनी ऐज़न[4], ताल धीमा तिताला

1-4. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—कुछ कह बैठूंगी प्यारे
फिर अपना सा मुंह ले रह जाओगे हां।

अन्तरा —खट्टी-मीठी बतियां जो कुछ मन की होंगी "अख्तर"
प्यारे सच-सच बोलो दिल से तुम सब सह जाओगे हां।

फ़सल पाँचवीं सावन में : सावन, तिलक कामोद, ताल रूपक
यह शबाना रोज़ बरता जाता है।

आस्ताई—सैंया बिन लागत बूंद कटारी।

अन्तरा—सपने में आयो मेरा मन लगियो
"अख्तर" बिन जिया भारी।

सावन, राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—पदमनियाँ बूंदन बरसे रे
लखमनियाँ बूंदन बरसे।

अन्तरा—ताल तलैया सागर नदिया हैं भरे
कैसे निकसूं "अख्तर" मैं घर से।

सावन, राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—अरी घटा ओ बैरी घुंधरू
मेरा रे सिपाही राकिब आवे।

अन्तरा—गरजत बादर "अख्तर" बरसत मेघा
चुनरी रंगीली कैसे लावे।

सावन, राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—सैंया मोरी बहियाँ पकर लीनो हो
येह दुःख सहो न जाए।

अन्तरा—चुड़ियाँ मोरी करकी बाजू लाल भये
"अख्तर" मोहे हाथ न लगाए।

1-3. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सावन, राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—सैंया मोहका चुनरी रंगा दे हो
मन मोरा होवत है उदास ।

अन्तरा—ऐसा रंग रंगियो कवहुँ न छूटे
धोबिया धोवे रे पचास ।

सावन, राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—कहीं कूकत वैरी मुरली री

अन्तरा—कोयल कूके बोले पपीहरा
'अख्तर' प्यारे चिढ़ाकर सुर गारी ।

सावन, राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—ऐ मधुवर वा रात बुरी ।

अन्तरा—भीजूँगा क्योंकर "अख्तर" प्यारे
बूंद कटारी धार छुरी

फ़सल छठी ठुमरी में : ठुमरी, झंझौटी, ताल जल्द तिताला ।
यह हर वक्त गाई जाती है ।

आस्ताई—मुखड़ा दिखा जा मेरी सीमतन प्यारी ।

अन्तरा—"अख्तर" तुम घूँघट तो खोलो
पायल बजा जा मेरी दुल्हन प्यारी ।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—सीली मेर व रात चूड़ा वल खा गयो ।

अन्तरा—करवट लेते-लेते भोर भयी सजनी,
"अख्तर" पर मन आ गयो ।

1-4. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—गोरी लट खोल दे लट में काला नाग।

अन्तरा—छती की तू वनी वज्झी "अख्तर" सुनाओ राग।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—तोहे तड़पहियों सारी रात।

अन्तरा—सगरी रैन मोहे तरपत बीती व्याकुल भई
मैं तुम विन "अख्तर" मुख क्यूँ सारी रात।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—कलकती वाकी चूड़ियां सैंया लै दे पिया रे।

अन्तरा—लाही की अंगिया वनारस की साड़ी,
"अख्तर" प्यारे मोरा चाहे जिया रे।

तिलक कामोद की मांझ, ताल जल्द तिताला
इसको भी हर वक्त गाते हैं।

आस्ताई—संग अजब वनी रे वनी की वनी।

अन्तरा—तुम हो छत्रपति राजा "अख्तर" मैं हूँ राजमनी।

रागिनी भैरवी, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त सुबह से पहर दिन चढ़े तक है।

आस्ताई—मन मोरा तूने लगाया प्यारे।

अन्तरा—रैन दिनन मोहे कल न परत है
"अख्तर" जप गिरधारी।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—मोहका वार-बार भर दे अरी ओ मधुवरवा।

अन्तरा—आप छकी वारे मोहका छका दे भर-भर मधवा

1-4. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहका पिला दे "अख्तर" कुलखा ।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—राजा मेड़े राझड़ियां दे राजा जी
मैं वा मड़ चलियां ।
अन्तरा—सूक लगा है दरसन करन को
"अख्तर" प्यारे गिर पड़ चलियां ।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—ए मन लाडली बनी का बना ब्याहन आया ।
अन्तरा—हीरा मोती दास हर अव राजी लपपट झूमर लाया ।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—मैं बारी लोगों साँवर में नहीं जां दियाँ ।
अन्तरा—राह तकत हूँ प्यारे के मिलन की
'अख्तर' जानी आज आंदियाँ ।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—वन सारी की निंदिया खोई रे ।
अन्तरा—ना मैं बोली "अख्तर" ना मैं चाली
ठंडी नींद ना सोई रे ।

ठुमरी, राग व ताल ऐज़न[5] ताल अद्धा

आस्ताई—राजा की गलियाँ में ना जाऊँगी
मोरी सारी मर्छालियां लुटा देना रे ।
अन्तरा—गिरती पड़ती आई हूँ "अख्तर"
मधु से छका देना रे ।

ठुमरी, राग पीलू, ताल जल्द तिताला

यह दोपहर ढले दिन से चार घड़ी दिन रहे तक बरती जाती है ।

आस्ताई—बलम सगरी रैन मोहे तरपत बीती करवटिया लेने दे ।

1-5. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—बिनती करत "अख्तर" कर जोरत मुख चूम लेने दे।

ठुमरी, पीलू, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—बिरह का दाग सहो नाहिं जाए हो।

अन्तरा—लाम्बा खटोलना दोऊ जने

"अख्तर" बिन देखे यह रहो नहिं जाए हो।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—तोरा रे बैरन महका भारे ननदिया हो।

अन्तरा—रास न आए सांझ बहाने "अख्तर" बहनिया हो।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—क्या समझते थे नैना लग जाएँगे।

अन्तरा—पहले तो सुख देखेंगे अख्तर फिर पाछे पछिताएँगे।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—अरी आली लाद चला बनजारा।

अन्तरा—खेप उतारे आज पुखा में

लाडला मोरा अख्तर प्यारा।

राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—पाने कैसे जाऊँ अब रे कीच।

अन्तरा—चूनर मोरी भीज गई "अख्तर" जमुना बीच।

ठुमरी, राग पीलू जंगला ठेका सितारखानी

आस्ताई—ऐ साजन उन बिन नाहीं परत मोहे चैन।

अन्तरा—"अख्तर" नगर अख्तर का है रे

गंवायो कैसे कटे दिन रैन।

राग व ताल ऐज़न[5]

आस्ताई—तू कैसे चली धोबनिया धोबिया बारह बारह बाट।

1-5. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—"अख़्तर" चोली मैली मोरी क्योंकर उतरूँ घाट।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—रात महका निंदणिया जगाए रे।
अन्तरा—तन मन धन सब प्रेम पिया को
अच्छे रंग नीकी एक बतियां सुनाए रे।

रागिनी जंगला, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—संवलिया तोरे कारन जिया जाए रे।
अन्तरा—कल न परत मोहे पल भर "अख़्तर"
कैसे मन सुख पाए रे।

ठुमरी, रागिनी गौरी, ताल जल्द तिताला
इसको दो घड़ी दिन रहे से चिराग़ जले तक गाते हैं।

आस्ताई—सुधि आई प्यारी आज रे,
गोरी चली कदम की वाड़ी।
अन्तरा—सुनो साझने मैं आज करूँगी,
"अख़्तर" के संग यारी।

ठुमरी, गौरी की मांझ, ताल जल्द तिताला
यह तमाम रात बरती जाती है।

आस्ताई—रे सांवरिया हम पर गौना, अरे ले है आयो।
अन्तरा—सुकन के "अख़्तर" पायल बाजत, दाग़ दिए है आयो।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—मजानन रे रात क्यों नहिं आए।
अन्तरा—सांझ न आए अकेले जनिया "अख़्तर" को संग लाए।

राग व ताल ऐज़न[2]

1-2. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—तेरे गुर ये रे चंद्रवदन दे जोत।

अन्तरा—ना लगे है मधु की माती, "अख्तर" संग क्या होत।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—छैल मोरे नाजुक मइया रे

अन्तरा—"अख्तर मोरा प्यारा कलेजा, क्योंकर छोड़ूँ सइयाँ रे।

ठुमरी, रागिनी खमाच, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त तमाम रात है।

आस्ताई—मोहन स्याम हमारा रे कुवड़ी ने जादू डाला।

अन्तरा—घूँघट खोलो मुख से बोलो "अख्तर" नजरौंदा गुजारा रे।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—ननदिया को मैं पररासन पन्हइयाँ जाऊँ।

अन्तरा—जोगी नहीं यह तो कामनहारा
'अख्तर' कर ये वैरन करवाऊँ।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—जान चली जाए बहियाँ मरोरी से।

अन्तरा—छाँड़ न महका 'अख्तर' प्यारे
छतियाँ लगा के जोरी से।

राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—चलो सखी मिल कैखड़ चलिए
झमकता आया रे बनरा।

अन्तरा—"अख्तर" बाजू झम-झम होवत,
मोतियन कंगन लाया रे बनरा।

राग व ताल ऐज़न[5]

आस्ताई—शिवशंकर बम-बल बोला रे, सगरी रैन मोहे
तरपत बीती, तन भयो जलकर होला रे।

1-5. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—"अख्तर" वतियां दु:ख की कब तक
मन तोरा कम-कम बोला रे ।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—तेरी चाल ऐ दुपट्टे वाली लटपट भाई ।
अन्तरा— पिस-पिस गयो पिया जियरा हमरा "अख्तर" लाई ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—जाके कारन मै वारी जइयां,
बारूंगी तन मन धन सभी ।
अन्तरा—आह से मोरी सुलगत जियरा,
"अख्तर" प्यारे बन-बन सभी ।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—उलझ रहेगी दोउ नयना नथ पर ।
अन्तरा—बूढ़ा भी हो राम-राम जपो,
पीत करन तुम छोड़ो "अख्तर" ।

राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—ऐ गुइयाँ मैहका जीना न भावे रे ।
अन्तरा—गाए बजाए भाव दिखाए "अख्तर" लुभावे रे ।

राग व ताल ऐज़न[5]

आस्ताई—मोरी नीहड़-नीहड़ भीजी चुनरी,
जमुना फिरी जमुना फिरी
अन्तरा—इश्क लगा "अख्तर" पनिहारिन से,
इधर आम्हरी इधर आम्हरी ।

राग व ताल ऐज़न[6]

आस्ताई—चांदगंज में लगी मोरी यारी ।

1-6. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—जोबन सवारो चलो पानी भरने
"अख्तर" की मैं बलि-बलिहारी ।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—फुलवा बीनन जाऊँ ऐ मैं
देखो री गंवार तोरी बगिया में ।
अन्तरा—माली दिखत "अख्तर" बार-बार मोहे
तोड़-तोड़ धरूँ अगियां में ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—कलारे महका दारोरा मद से छका दे ।
अन्तरा—"अख्तर" नैनन मोरे अलसाने
भर-भर प्याला पिला दे ।

ठुमरी, सोर, ताल जल्द तिताला

यह फ़सल बरसात और तावे[3]– अब्र[4] की है ।

आस्ताई—मेरे नैना अरे वह तो रूप जौवन में लालची भए ।
अन्तरा—जिया को संभालू "अख्तर" कैसे मंगता रहे ।

फ़सल सातवीं होली चाचर में : होरी, रागिनी झंझवटी, ताल चाचर यह हर वक्त बरती जाती है ।

आस्ताई—मैं भोली न लाया रे न लगाया ।
अन्तरा—अख्तर पिया की कदर न जानी
आशिक नाम दोहराया ।

राग काफ़ी

यह भी हर वक्त बरती जाती है ।

आस्ताई—तुम तो होरी खेल आए सौतन से
फिर मोहसे कहत घूंघट खोलो ।

1-2. पूर्वोक्तानुसार, 3. पावन्द, 4. बादल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—भीज गई चूनर मोरी सारी
"अख्तर" पिया मुख वोलो ।

रागिनी व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—भाई रे मैं केसर घोलूं
केसर घोलूं मैं रंग बनाऊँ ।
अन्तरा—काजर दे मुँह देखत बोलूँ
"अख्तर" पिया को मैं संग वनाऊँ ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—झूमर घाघर ले गइयां रे,
नयी रे नैल मेरी जोबनहारी रे ।
अन्तरा—छलक छलक गयी मटकी "अख्तर"
तोरा बिछरना जिया पर भारी रे ।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—जाओ रे सइयां को ले आओ रे ।
अन्तरा—मेरी ओर से "अख्तर" को बुलाओ
साजन उन्हें लाओ रे ।

राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—कौसर का जाम भर दे ऐ नजफ़ के बसइया ।
अन्तरा—अली ओ बलो संग रंग मचा है
"अख्तर" होरी के खिलइया ।

राग व ताल ऐज़न[5]

आस्ताई—यह व्रजबाला ख्याल पड़ो रे
मैं किसी के नक्स पाऊँ रे ।
अन्तरा—आओ सखी मोह से रंग तो खेलो
"अख्तर" पिया को मनाऊँ रे ।

1-5. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—होरी खेलन की सौ-सौ घातें
ऐसे खिलारी से डरिए रे।
अन्तरा—अबीर गुलाल को फेंकत पल-पल
"अख्तर" को मुख न करिए रे।

राग पीलू जंगला

आस्ताई—अंगिया बेंजी चटकीली सुन्दर नार।
अन्तरा—इस अंगिया में लाल लगे हैं,
मोती लगे हैं हजार।

राग वहार

आस्ताई—तू कह रे भौंरा पिया को
पिया की बात मोरे जिया के साथ।
अन्तरा—चंदा सा मुखड़ा कंवल ऐसे गात
तरप-तरप बीती सिगरी रात।

राग वहार की मांझ, जल्द तिताला
यह तमाम रात बरती जाती है।

आस्ताई—एक रे जाने मोरा तोरा जियरा।
अन्तरा—साक़िया बरख़ेजो जामी वो मेरा
ख़ाक बरसरेकुन ग़मे अय्याम रा।

राग लोम, ताल ऐज़न[2]
यह शवाना रोज बरती जाती है।

आस्ताई—जाओ रे "अख्तर" को मनाओ रे।
अन्तरा—मेरा उठता जोबनवा दिखाओ सखी यहीं आओ रे।

1–2. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होरी, कौकब, ताल ऐज़न[1]

इसका वक्त पहर दिन चढ़े से दोपहर तक है।

आस्ताई—डूबते दिल के पार लगइया
"अख्तर" सांई नाव खिवइया।
अन्तरा—पार करो मझधार से नइया
जिया धरकत मोरा सांझ से दइया।

राग जंगला

यह दोपहर ढले दिन से चार घड़ी दिन रहे तक गाया जाता है।

आस्ताई—चिलम भरत मोरी जल गई चुटकिया
सइयां निरमोहिया राज ऐ रामा।
अन्तरा—जियरा मोरा सुलगत 'अख्तर'
होरी खेलत तोह से आज ऐ रामा।

टेसू रागिनी झिंझवटी, ताल चाचर

इसका वक्त तमाम रात है।

आस्ताई—टेसू टको न ले हैं चले हैं।
अन्तरा—एक हाथ रुपया दूजे हाथ सुनवा
साल-दोसाले देहैं चले हैं।

झंझिया, रागिनी खमाच

इसका वक्त तमाम रात है।

आस्ताई—झंझिया मांगन आए रे मेरी बाली रे भोली।
अन्तरा—इस झंझिया में लाल लगे हैं, मोती लगे अनमोल रे।
मोरी बाली रे भोली।

नौबत, रागिनी ऐज़न[2]

1-2. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—नौबत चुनी गाम्वरा
हरियाले बनो का बनरा।
अन्तरा—देखा "अख्तर" सोहाना मुखड़ा
प्यारी राजदुलारी का बनरा।

फ़सल आठवीं दादरा में : दादरा, रागिनी जिला, मुताल्लिक़[1] झिंझवटी, ताल जल्द तिताला इसको दिन और रात वरतते हैं।

आस्ताई—बिरजवा के मद पियो
पियो मेरी जान।
अन्तरा—लाए कलारे भर-भर प्याले अख्तर सुल्तान।

दादरा, रागिनी काफ़ी, ताल अद्धा
यह हर वक्त वरती जाती है।

आस्ताई—आवत हैं "अख्तर" प्यारे गलन में धूम डाले।
अन्तरा—चेरी वाले कह दो कोई आकर
अब मोरे मन से कँटवा निकाले।

राग व ताल ऐज़न[2]।

आस्ताई—बाबू कलवा कलवा को पुकारे
अरे हो जमादार।
अन्तरा—मेज लगत है आओ 'अख्तर' पिया
चलो ख़ानसामां[3] कहा।

दादरा, रागिनी लोम, ताल अद्धा।
इसका वक्त शवाना रोज है।

आस्ताई—वाह जी वाह यह ठठ्ठा नहीं अच्छा
राह चलतो का दामन पकड़ लेते हो।

---

1. पूर्वोक्तानुसार, 2. सम्बन्धित, 3. बावर्ची

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा—जाने नहीं देते हो मुझको बाहर
हाथों से नाहक जकड़ लेते हो ।

दादरा, रागिनी सारंग वृन्दावनी, ताल अद्धा
इसका वक्त पहर दिन चढ़े से दोपहर दिन तक है ।

आस्ताई—हमारे बनो कुछ न जाने ।
अन्तरा—वो मुरग़ा बना, बनी को कुँकडूं बुलावे ।
वो बकरा बना, बनी को में-में बुलावे ।

दादरा, रागिनी पीलू, ताल अद्धा
यह दोपहर ढले दिन से चार घड़ी दिन रहे तक बरती जाती है ।

आस्ताई—आजा निंदिया मेरे बलम को ।
अन्तरा—दुःख न होवे सपने में "अख़्तर"
मौला रक्खे तेरे धरम को ।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—बाँके बाँके रे सिपहिया तोरी नजर बुरी ।
अन्तरा—भाल लगाए "अख़्तर" मन ले जाए
हाथ सरोही कमर छुरी ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—कोई गर या डूबे मंझधार जोबन दोऊ तेरे ।
अन्तरा—रोवत-रोवत कल न परत है,
"अख़्तर" अंखियाँ हैं न हेरे ।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—नैना झमकाए जाए बननिया ।
अन्तरा—"अख़्तर" प्यारे रंग मचाओ,
सेहरा गूंध लायी मोरी मालनिया ।

1-3. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—जा वेदरदी मैं तोहसे नहीं बोलती ।
अन्तरा—"अख्तर" प्यारा आली हमारा
वंद अंगिया के अभी तो नहीं खोलती ।

दादरा, रागिनी पीलू बिखा, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त तीन पहर दिन से दो घड़ी दिन रहे तक है।

आस्ताई—कीली डालो लाल गोजरिया में ।
अन्तरा—लहंगा मोरा भीजत "अख्तर"
दाग लगा मोरे पहरिया में ।

दादरा, रागिनी धानी, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त पहर दिन रहे से दो घड़ी दिन रहे तक है।

आस्ताई—दे दे बनी को दूध पूत नारी को ।
अन्तरा—भालो चौपराल तुम्हार भालो
नजरिया "अख्तर" अम्रमाई को ।

दादरा, रागिनी गौरी, ताल कहरवा
इसका वक्त दो घड़ी दिन रहे से चिराग़ जले तक है ।

आस्ताई—सुल्तान जाने आलम ने दी हमको वर्दियाँ ।
अन्तरा—घनन घनन घुंघरू बाजे "अख्तर"
पल-पल वाजे-वाजे इक दो, इक दो थिरके महरियाँ ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—रे बटोहिया बैरा जाए रे बटोहिया बैरा ।
अन्तरा—इधर "अख्तर" आए रे इधर 'अख्तर'
परख हीरा लाए रे परख हीरा ।

1-2. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दादरा, रागिनी गौरी मांझ, ताल अद्धा
इसका वक्त भी तमाम रात है।

आस्ताई—सरा राधिका चली जा हमारा देख चली जा।
अन्तरा—अरे वो उल्टे तीतर मेरे लहँगे के भीतर।

दादरा, रागिनी खमाच
ये भी तमाम रात गायी जाती है।

आस्ताई—बाली ननद रे कुएँ पानी न जाओ
नैंना लगाए कोई ले जाएगा।
अन्तरा—"अख्तर" प्यारा नजर पड़ा है
मन को दाग दे जाएगा।

रागिनी गौरी, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—बम्हना रे मैं नाहीं तोरे राजी।
अन्तरा—"अख्तर" से मैं पीत करूँगी
संग चलूँगी बाके आजी।

रागिनी गौरी, ताल अद्धा

आस्ताई—राम कैसे उतरूँ पड़ाकर नदैया।
अन्तरा—मोरे नोड़िया यू है पड़े हैं
पार लंघ गए "अख्तर" बेल बिछइया।

रागिनी व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—आचम बीती ऐलम उठी धूम रोया चा चौकी।
अन्तरा—गाजपा सुगनावाड़ी में वागे "अख्तर" हरे-हरे सखी।

राग व ताल ऐज़न[2]

1-2. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्थाई—भाई रे दे दे रहवोना घोरी।
अन्तरा—बाड़ी में तोरी रहियो "अख्तर"
जइयों सांझ न भोरी।

दादरा, जवानी जिन्नाती

आस्ताई—ए जी मुमीना सलीचा करे बीबी
शीशे की शीशी के पोतरे।
अन्तरा—कच के तुच के लाचके पचचके,
'अख्तर' कचक हर बहुत रे।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—प्रीत के कहीं फंदे पड़े हैं
नाहक सैंया मोह से लड़े हैं।
अन्तरा—तन ने पाया मन ने पाया
'अख्तर' प्यारे दर पर अड़े हैं।

रागिनी व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—जालिम से नैना लगो
कोई दिन याद करोगे।
अन्तरा—बलि-बलि जाऊँ छछड़े तुम्हारे,
उल्टी तोहमत 'अख्तर' धरोगे।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—गूदो गोरे बदन पर गुदना।
अन्तरा—नाक की कील झलक गई 'अख्तर'
मुठिया का लटक आया फुंदना।

दादरा, रागिनी भोपाली, ताल कहरवा
इसका वक्त चार घड़ी रात गए से आधी रात तक है।

1-3. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्ताई—पूछो तो प्यारी किधर गई।
अन्तरा—बलि-बलि जाऊँ रैन दिनन में
'अख्तर' के संग नजर गई।

राग व ताल ऐज़न[1]

आस्ताई—तेरे बसीर में गधा लटके
तेरा झुंझवा से पेट जुदा लटके।
अन्तरा—मदभरी अंखियां देखत 'अख्तर'
जट में जोगिया बिला लटके।

रागिनी ऐज़न[2], ताल अद्धा

आस्ताई—गेंदवे की आई रे बहार
सइयां मेहका गेंदवा मंगा दे।
अन्तरा—'अख्तर' तोरे पइयां मैं लागूं
फूलों के बिरवन का बाग लगा दे।

राग व ताल ऐज़न[3]

आस्ताई—मुझे खुम्मू की जान की सौ हाँ-हाँ
मुझे और मदान की सौ क्या-क्या दिया है जहेज़।
अन्तरा--दो छहरियां हैं, दो पहरे हैं
'अख्तर' पुकारा बरेज़।

राग व ताल ऐज़न[4]

आस्ताई—कल मारकीमी में हम भी होंगे
तुम भी होगे वाह-वाह।
अन्तरा—नाचें गायें भाव बताएँ तिस पर हमसे रूठे हो
"अख्तर" प्यारे घर की झिड़की हमको दोगे वाह-वाह।

1-4. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फ़सल नवीं–सरगम में : सरगम भैरों, मिज़ाज तीन लय के ठह, दगुन तिगुन

आस्ताई—सा रे गा मा पा धा नी सा
सा नी धा पा मा गा रे सा ।

अन्तरा—सा नी धा पा मा गा रे सा ।

सरगम कल्याण, ताल सूलफाखता

आस्ताई—धा मा धा मा गिरि धा मा
गिरि सा धा नी रे सा नी ।

अन्तरा—पा पा धा पा पा धा मा गा
मा गा सा नी धा पा मा गा
रे सा रे गा पा रे गा मा
गा रे सा नी ।

फ़सल दसवीं टप्पा में और मुतफ़र्रिकात[1] में : टप्पा, रागिनी खमाच, ताल धीमा तिताला

इसका वक्त तमाम रात है ।

आस्ताई—यार बदनाम मेड़ी मुल्क जहाँ दे ।

अन्तरा—तारे अकास पर "अख़्तर" सांझ भी है
चन्द्रमुखी में भवें दोऊ धनक कमान दे ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—रब नूं मैं तो तेरी बांदिया छोहरिया बी
मैं तो तोरी बादियां मिला दे रब नूं ।

अन्तरा—तरक तरक गयी अंगिया मोरी
"अख़्तर" देखो अब नूं ।

---

1. विभिन्न, 2. पूर्वोक्तानुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनी

मुतफ़र्रिक़ात[1] मतले :

आस्ताई—आया सावन का महीना पहनो जानी चूड़ियाँ ।
अन्तरा—सुर्ख़ जोड़ा बरमी होय और धांनी चूड़ियाँ ।

आस्ताई—छल्ला जड़ाऊं दावरी हाथ यमनी छल्ला ।
अन्तरा—जरूर रहता है, 'अख्तर' के साथ यमनी छंल्ला ।

दूसरा आस्ताई—मेरा हरियाला बना आ बैठा दालान के बीच ।
अन्तरा—गोया जान आ गयी मुझ ग़मज़दा जान के बीच ।

1. विभिन्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरा अध्याय

ताल

ताल अध्याय इस ग्रंथ का सबसे छोटा अध्याय है। यह मात्र तीन पृष्ठ का है। ऐसा इस-लिए भी है कि ताल विषयक् जानकारी लेखक ने अपनी दो अन्य पुस्तकों 'नाजो' और 'दुल्हन' में भी प्रस्तुत की है।

सुर के साथ लेखक को ताल का सम्यक् ज्ञान था। उन्होंने ताल का ज्ञान नृत्य के अनुकूल प्रयुक्त किया है। प्राचीन काल में विलम्बित, मध्य और द्रुत तीन लय रही हैं—यही ठह, दुगुन और चौगुन कही गईं। लेखक ने ठह, दुगुन और तिगुन लय को अपनाया कदाचित् इसका सीधा सम्बंध गायन वादन के स्थान पर नृत्य से अधिक जुड़ा। ऐसा मालूम पड़ता है कि शिष्य वर्ग को सिखाने की उनकी यह निजी तरकीब रही है। अब नौ तरह की लय प्रचलित हैं जिनमें अतिद्रुत का विशेष स्थान है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक टुकड़ा नाम "अख्तर" पसन्द लेखक की खोज हैं, जिसका कदाचित् अधिक प्रचलन रहा होगा। अब्दुल हलीम "शरर" के अनुसार 'ढोल-ताशा बजाने की कला कितनी महत्वपूर्ण और नियमबद्ध थी, इसका सबूत इससे बढ़कर क्या होगा कि अवध के आख़िरी शासक वाजिद अली शाह को, जो संगीत के माने हुए आचार्य थे, मैंने कलकत्ता में अपनी आंख से देखा कि मुहर्रम की सातवीं तारीख को जब मेंहदी का जुलूस उनकी आसमानी कोठी से रवाना होता तो वे खुद गले में ताशा डाल कर बजाते थे। यह प्रथा आज से कुछ वर्ष पूर्व तक अवध और कलकत्ता में प्रचलित थी कि मोहर्रम की सातवीं तारीख को बड़े-बड़े राजा, और नवाब हिन्दोस्तानी रीति और मोहर्रम से श्रद्धा के कारण मेंहदी के जुलूस में कम से कम एक बार ताशा में हाथ जरूर लगाते थे।'

इस बाब यानी अध्याय में भी लेखक ने तालों को दो फ़सलों अर्थात् संवर्गों में बांटा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाब दूसरा यानी अध्याय दो

यह बाब ताल के सम्बन्ध में है।

इसमें एक मुक़द्दमा[1] और दो फ़सलें हैं।

मुक़द्दमा—जानना चाहिए कि नाच और गाने में तीन तरह की लय दुरुस्त हैं और इससे सिनततबई है।

पहली ठह, दूसरी दुगुन और तीसरी तिगुन।

ठह—इसके यह माने हैं कि एक मिज़ाज सौलियत का साहवे लय मुक़र्रर[2] करें।

दुगुन—इसके यह माने हैं कि उसी मिज़ाजे मुक़र्रिर-ए-ऊला[3] में वही अल्फ़ाज़[4] सहल मुज़ाफ़ हो जायें।

तिगुन—इसके यह माने हैं कि उसी मिज़ाज पर एक हिस्सा और बढ़ाया इस तरह कि जैसे एक (शख्स) ने एक राह को दस क़दम पर तय किया और फिर उसी राह को बीस क़दम पर तय किया—उसका नाम दुगुन है। फिर उसी राह को तीस क़दम पर तय किया, उसका नाम तिगुन है।

फ़सल पहली, टुकड़ों के बयान में—यह टुकड़े अल्फ़ाज़ से अदा होते हैं।

पहला टुकड़ा, मोहरा इत्तदा, पहले की खाली से धा कट धी धी गन्हा कह धत ता धा धी धत ता धा धी धत ता धा धी धत ता धा धी धत ता धा।

दूसरा, परन नाम इत्तदा, सम से धा ता धी धत ता धा करढ़ा करढ़ा करढ़ा करढ़ा करढ़ा करढ़ा करढ़ा करढ़ा करढ़ा।

तीसरा, लवनाम, इत्तदा तीसरे की ख़ाली से धा कड़धत ता ता करढ़ा करढ़ा करढ़ा।

चौथा, अकीक नाम, इत्तदा सम से ततकत धी दे धना धना धा ता धा ता धा कत तधा तधा तधा।

---

1. बहस 2. निश्चित 3. पहले कहे गए स्वभाव 4. शब्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पांचवां, मोती नाम, इत्तदा तीसरे की ख़ाली से तट कत धी धी धना धा तट कत खी कहना धा तट कत खी कहना धा तट कत धी धी धना ।

फ़सल दूसरी, टुकड़ों के फेरियों के बयान में—टुकड़ों की ये फेरियां गिनती से अदा होती हैं। टुकड़ा तीन का इकहरा दो तरफ़ी फेरी इत्तदा सम से सम तक ।

एक दो तीन और फिर सम से सम तक और फिर सम से सम तक । इस हिसाब से तीन मर्तबा में आता है और फिर तीसरे से सम तक एक बार में। टुकड़ा तीन का सवाया दो तरफ़ी फेरे, सम से सम तक आता है । तफसील उसकी यह है—एक दो, एक दो, एक दो तीन । तीन बार में आता है ।

टुकड़ा चार का सवाया दो तरफ़ी फेरी सम से सम तक तीन मर्तबा में यह भी आता है। तफ़सील इसकी ये है—

एक दो, एक दो, एक दो तीन चार ।

टुकड़ा पांच का—ठह, दुगुन, दोतरफ़ी, फेरी इत्तदा ख़ाली से बीच में एक आवर्द जाती है । तफ़सील उसकी यह है—एक, दो, तीन, चार ।

पांच नाम लच्छा दो तरफ़ी फेरी सम से शुरू सम तक । एक दो तीन-तीन मर्तबा फिर सम से सम तक । एक, दो, तीन, चार, पांच—फिर सम से ख़ाली तक । एक, दो, तीन, एक दो तीन, एक दो फिर खाली से सम तक । दुगुन में—एक, दो, तीन चार, पांच—तीन बार फिर सम से ख़ाली तक । एक दो तीन, चार, पांच, छह । फिर ख़ाली से सम तक—एक दो तीन, एक दो तीन, एक दो ।

नाम सोहराठा दुगुन एकतरफ़ी फेरी दाहिनी तरफ़ से इत्तदा ख़ाली से तीन आवर्दों में आता है और दुगुन मिलाकर चार आवर्दों में आता है। तफ़सील उसकी यह है कि एक, दो, तीन, चार पांच । टुकड़ा नाम अख्तर पसंद—दो तरफ़ी फेरी वायें से सम्पूर्ण है । तफ़सील उसकी यह है कि एक दो तीन, एक दो, एक दो पर सम है और छक्के जवाहर लच्छे छौंहो टुकड़े कब्ल-अज़ीं[1] नाजो और दुल्हन में हवाला-ए-क़लम कर चुका हूँ, लिहाज़ा तकरार मुनासिब न जानी । वो टुकड़े भी मेरी तालीम[2] यापतगान[3] ज़बान से और गिनती से और फेरियों से और हाथों से और पांवों से ठह, दोवन ततकार में विठाकर बराबर अमल में लाते हैं ।

---

1. इससे पूर्व, 2. शिक्षा, 3. पाने वाली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरा अध्याय

रहस

इस अध्याय में लेखक ने चित्रों सहित इक्कीस नृत्य गतों का वर्णन किया है। वाजिद अली शाह द्वारा उपजित रहस के नृत्यों में इन गतों का अत्यधिक महत्व था। कालान्तर में इन गतों ने नृत्य-संसार, मुख्यत: कथक, में स्थान प्राप्त कर लिया। यह सारी गतें लेखक ही द्वारा उपजित हैं। गतों को भली प्रकार समझाने के लिए 'हाथस्केच' भी दिए गए हैं।

इन इक्कीस नृत्य गतों में से सोलह कथक गत तथा पांच कहरवा नृत्य की गतें हैं। कहरवा के चार तोड़ों के विषय में भी संक्षेप में बताया गया है। अपनी युवराजी के समय से ही वाजिद अली शाह ने रहस आरम्भ कर दिए थे, किन्तु राजा बनते ही यह सारी व्यस्तताएँ समाप्त हो गई थीं और राजकाज में अधिक लीन हो जाने के कारण इस प्रकार के सारे रहस आदि समाप्त हो गए थे। सल्तनत समाप्त होने के बाद जब वाजिद शाह को कलकत्ते जाना पड़ा और वहाँ पहुंचकर उन्हें आभास हुआ कि अब सल्तनत वापस नहीं मिलनी है तो वे फिर अपने पुराने शौक़ की ओर लौट आए और उस समय जो कुछ नयी नृत्य-गतों की स्थापना, नए रहस तैयार किए, उनमें यह गतें प्रयुक्त कीं और इस पुस्तक में भी उन्हें स्थान दे दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाब तीसरा यानी अध्याय तीन

इसमें दो फ़सलें हैं—पहली फ़सल में नाच की गतों की गिनती और उनके नाम हैं। यह सोलह गतें हैं। मुझसे जो तालीम हासिल कर रहे हैं वे उन्हीं गतों की बिना पर सीख रहे हैं। मेरा दिल चाहता है कि इन गतों का मैं विस्तृत वर्णन करूँ, जिससे हर इच्छुक नृत्य-प्रेमी इसे अपना सके।

फ़सल पहली :

पहली सलामी गत :

वह यह है कि नर्तक दर्शक की ओर मुंह करके खड़ा हो और दाहिने हाथ की पहली उंगली से सारी उंगलियां मिली हों और माथे पर हों, अँगूठा अलग हो, बायां हाथ मुट्ठी बांधकर कूल्हे पर रखकर सारा हाथ कंधे तक आधे चांद के रूप में रहे। ऐसा करने के बाद सामने दर्शक के नाचे। इस वक्त नर्तक का दाहिना पहलू नाच देखनेवालों के सामने हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरी दाहिना हत्था गत :

दाहिना हाथ लम्बा करे—न ज़मीन की ओर न आसमान की ओर, बल्कि नाच देखनेवालों की ओर हो। हाथ की सभी उंगलियां मिली रहें और बायां हाथ पहली गत के अनुसार ही रहे। नाचे जाने के वक्त की भी सूरत पहली गत की तरह ही हो।

तीसरी बायाँ हत्था गत :

दाहिना हत्था गत की तरह हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौथी फरियाद गत :

इसमें दोनों हाथ फैले रहें यहां तक कि बग़ल के अंदर तक दिखाई पड़े, नर्तक का चेहरा दर्शक की ओर हो और पीछे होते वक्त दाहिना हाथ नाच देखनेवालों की तरफ रहे ।

पांचवीं मोअद्दब गत :

दाहिने हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर दोनों हाथों को नाभि से मिलाकर नाचे और पीछे होते वक्त दाहिना पहलू नाच देखनेवालों की ओर रहे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छठी नाज़ गत :

दाहिने हाथ की उंगलियां मिलाकर उसी हाथ के बीच की उंगली को ठुड्डी के ऊपर इस प्रकार रखे कि उस हाथ की हथेली नज़र आए और बाएँ हाथ की सूरत मोअद्दब गत के बाएँ हाथ की सूरत की तरह हो। नाच में पीछे होते वक्त दाहिना पहलू दर्शक की तरफ हो।

सातवीं ग़मज़ा गत :

दाहिने हाथ की मुट्ठी बांधकर सीने पर रखे और बायां हाथ नाज़ गत के हाथ की तरह हो। नाच में पीछे होते वक्त दाहिना पहलू दर्शक की तरफ रहे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आठवीं पेशवाज गत :

पेशवाज के सिरे को दाहिने हाथ से दाहिनी तरफ़ खींचे और बाएँ हाथ की सूरत नाज़ गत की तरह सामने कमर पर रखकर नाचे। पीछे होते वक्त भी नाज़ गत की तरह हो।

नवीं मुकुट गत :

दोनों हाथों की उंगलियां इस तरह की जायें कि हर उंगली दूसरी उंगली के अन्दर खाइयों में बैठ जाए। दोनों कोहनियां और बाजू कंधों तक चौदहवीं रात के चाँद की तरह चार अंगुल सर से ऊँचा करके सर पर लाए और नाचे। पीछे होते वक्त पहली गतों की तरह हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दसवीं, लखनव्वा घूंघट गत :

बाएँ हाथ से घूँघट को नाभि तक इस तरह खींचे कि आधा दाहिना चेहरा घूंघट से बंद हो जाए। दाहिना हाथ दाहिनी तरफ सिर पर उलटा इस तरह से रहे कि हथेली नज़र आए। नाच में पीछे जाते वक़्त इससे पहली गत की तरह रहे।

ग्यारहवीं घूंघट गत :

घूंघट के दो सिरे बनाकर दोनों हाथों से इस तरह खोले कि दोनों बाहों के बीच में दो बालिश्त से कम फ़ासला न हो। सिर के पीछे से सिर के ऊपर लाकर घूंघट को इस तरह चौड़ा करे कि हाथ से एक बालिश्त घूंघट की चौड़ान हो और नाचे। पीछे हटने का तरीक़ा पहले जैसा ही हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

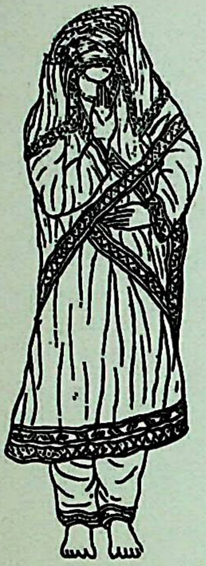

बारहवीं, बंगाली घूंघट गत :

घूंघट निकालकर नाज़ गत की तरह नाचे ।

तेरहवीं बंधी सलामी गत :

दाहिना हाथ सलामी गत की तरह रहे । बाएँ हाथ की मुट्ठी बांधकर सीने पर रखे और नाचे । पीछे जाने का तरीक़ा पहले जैसा अपनाए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौदहवीं दाहिनी बांकी गत :

इस गत में दाहिना हाथ दाहिना हत्था गत की सूरत की तरह हो, मगर बायाँ हाथ कोहनी तक खुला हो और सीने पर रखकर नाचे। इस तरह से कि दोनों हाथों के बीच की उंगलियाँ हाज़रीन की तरफ हों। पीछे जाने का तरीका पहले जैसा ही हो।

पन्द्रहवीं बायीं बांकी गत :

दाहिनी बांकी गत का उलटा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोलहवीं प्यारी गत :

दोनों हाथों की हथेली दोनों बाजुओं के नीचे रखकर नाचे और पीछे जाने का तरीका पहले की तरह अपनाए ।

फ़सल दूसरी कहरवा नाच में—इसमें सिर्फ पांच गते हैं ।

पहली मछहरा गत :

दाहिने हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर दोनों अँगूठों को लय में हरकत दे और एक दो की गिनती पर नाचे । दाहिने पांव से एक और बाएँ पांव से दो कहरवे का सम एक ही पर होता है। दाहिनी तरफ़ से घूमना एक तरफ़ का तरीक़ा पहले की तरह है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरी भैंगा गत :

दाहिने हाथ का अंगूठा दाहिने कंधे पर रखे और बाएं हाथ का अंगूठा बाईं कमर पर और उंगलियाँ खुली रहें।

तीसरी ठगा गत :

दाहिने हाथ का अंगूठा खड़ा रख के और सभी उंगलियाँ बंद करके सीने पर रखे और बाईं बांह की मुट्ठी बांधकर बांए पहलू पर रख कर नाचे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौथी लहंगा गत :

लहँगे को दोनों हाथों में नेफ़े[1] के पास से उठाकर नाचे ।

पांचवीं पंखा गत :

दोनों हाथों के अंगूठों की उंगलियां खुली हुई दोनों कंधों पर रखकर नाचे । जानना चाहिये कि कहरवा में सिर्फ चार तोड़े हैं । पहला बाएँ नितम्ब पर, दूसरा दाहिने पर, तीसरा दोनों जानू[2] पर, चौथा खड़े होकर ।

---

1. जिसमें कमर बन्द डाला जाता है ।
2. घुटने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौथा अध्याय

रहस विस्तृत

इस अध्याय में रहस का विस्तृत वर्णन किया गया है। रहस शब्द, रहस खेल, रहस नृत्य वाजिद अली शाह के ही मस्तिष्क की उपज है। रहस वास्तव में रास शब्द का अपभ्रंश है। श्रीकृष्ण की रासलीलाओं पर आधारित कुछ लीलाओं को सामयिक रूप देकर वाजिद अली शाह ने नई लीलायें बनाईं। इसके अतिरिक्त लखनऊ के वातावरण और हिन्दू मुसलमानों की मिश्रित संस्कृति ने कुछ नई रासलीलाओं को भी जन्म दिया जिन्हें उन्होंने रहस का नाम दिया।

इन रहसों में 'दरया-ए-ताश्शुक़' और 'अफ़साना-ए-इश्क़' लेखक ने स्वयं लिखे हैं तथा 'क़िस्सा राधा-कन्हैया' का कथानक उन्होंने राधा और कृष्ण की प्रेम-गाथा से उद्धृत किया है। इन रहसों में होने वाले नृत्य पर उनका विशेष ध्यान रहा और रहस के नृत्यों को, जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनकी स्वयं की उपज हैं, उन्होंने छत्तीस-ईजादी रहसों में विभाजित कर दिया जिसका बखान इस अध्याय में मिलता है। अध्याय के दूसरे भाग में राधा और कृष्ण के दो रहस दिए गए हैं जो संक्षिप्त भी हैं और सारी रात खेले जाने योग्य भी।

अन्त में इन रहसों के कलाकारों के विषय में और उनके वेश-विन्यास के विषय में भी बताया गया है।

रहस मंजिल के बारे में मेहताब-उद्-दौला बहादर दरवशां ने सन् 1294 हि० में लिखा था—

रहस मंज़िल है परियों का अखाड़ा,
अजब कमरा सुलेमानी बना है।
दरवशां जलवागर है, साले तामीर,
मकाने जश्न खाकानी बना है।

रहस की परम्परा में ही अमानत ने इन्दरसभा की रचना की जिसे पर्याप्त लोकप्रियता मिली। इन दोनों नाट्य-रूपों में अन्तर यह था कि रहस शाही स्टेज था तो 'इन्दरसभा' अवामी स्टेज। इसी 'इन्दरसभा' से पारसी रंगमंच तथा फिल्म जगत ने प्रेरणा ग्रहण की। इस प्रकार वाजिद अली शाह की रासलीला अवलम्बित "रहस" परम्परा आज भी जीवित है। कालान्तर में भ्रमवश यह प्रचार हो गया कि बादशाह वाजिद अली शाह ने 'इन्दरसभा' की रचना की थी जब कि ऐसा कहना नितान्त अप्रासंगिक है। सन् 1934, मार्च की हिन्दी पत्रिका 'चांद' में "वाजिद अली शाह और उनका नाटक 'इन्दरसभा'" के नाम से प्रकाशित लेख से कदाचित हिन्दी जगत में यह भ्रम फैल गया था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाब चौथा यानी अध्याय चार

रहस के बयान वाले इस बाब में दो फ़सलें हैं ।

फ़सल पहली छत्तीस ईजादी रहसों में

सखियां पेशवाज़ वगैरा से आरासता[1] होकर आएं और ख़ामोश होकर आएं। उनके हमराह साज़िन्दे यह तसनीफ़-राक़िम[2] गाएं।

आस्ताई—चलो चलो सखी अब रहस करें
'अख्तर पिया' के मन को रिझाएं।

जिस वक्त राक़िम का तख़ल्लुस लवों[3] पर आए फ़ौरन सब सखियां खड़ी हो जाएँ और जिस मुक़ाम[4] पर रहस के वास्ते सफ़[5] बांधकर जहाँ खड़ा होना मुक़र्रर[6] हो चुका है, वहाँ पर सफ़वस्ता[7] हमवार[8] उस्ताद हो और रहस के वक्त लाज़िम[9] है कि हर गूना अवल ओ शुएब[10] और शोरगुल से महफ़ूज़[11] रहे और न मुक़ामे रक्स[12] से ताइख़तेमाम[13] बाहर जाएँ और दो जोड़े छोटे-छोटे झांझों के जावीं सफ़ के बजाए जाएँ। कुमकुम हर रहस के माक़ब्ल[14] ज़रूर है कि राक़िम की तसनीफ़ात[15] गाएँ। वादहू[16] पखावजी के टुकड़े के हमराह वो नग़मा सम पर तमाम किया करें और हर रहस के खत्म के वाद 'चिरंजीव रहो जानेआलम' या 'जानेआलम की जय' सुर में कहा करें और एक टुकड़ा दाहिनी जानिब और दूसरा वायीं जानिब और तीसरा वालाए नाफ़[17] तमाम[18] करें। उसकी शक्ल यह है कि पहले दाहिने जानिब[19] दोनों हाथ लय में वढ़ाएँ और दूसरी दफ़ा वाएँ जानिव भी इसी तरह से और तीसरी मर्तवा नाफ़ पर वाएँ हाथ की अंगुश्तेकलमा[20] और अंगुश्तेनर[21] मिलाकर चुटकी की सूरत बनाकर रखें और दाहिने हाथ की चुटकी वंधी होवे। पेशानियों पर और एक दो तीन पर कमर को हिलाएँ। एक

---

1. सजधज कर, बन-संवरकर, 2. लेखक द्वारा लिखी गई, तसनीफ़—लेखक के द्वारा लिखी गई चीज, राक़िम—लेखक, 3. होठों, 4. स्थान, 5. पंक्ति, 6. निश्चित, 7. एक पंक्ति में, 8. साथ में, 9. ज़रूरी है, 10. खाने-पीने, 11. दूर, 12. नृत्य का स्थान, 13. समाप्ति तक, 14. पहले, 15. लिखित चीज़ें, 16. इसके वाद, 17. नाभि पर, 18. समाप्त, 19. ओर, 20. तर्जनी, 21. अँगूठा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दाहिने कूल्हे पर और दो बाएँ कूल्हे पर और तीन फिर दाहिने कूल्हे पर तमाम करें। इसके बाद लय-ताल में गुलदस्ते उठाया और धरा करें। चक्करों में एक दो के क़दम लिए जाते हैं। टुकड़े पखावजी बोलता है।

पहला रहस सलाम नाम

साहिबानेसफ़[1] पहले तसनीफ़ेराक़िम[2] गाएँ और दाहिना हाथ मुनक़लिब[3] पेशानी पर रखें और एक बाजू के अन्दर दूसरी अपना बाजू डालकर ज़ंजीराबंदी करके दस्तेचप[4] बाएं पहलू पर रखें फिर सलाम। अब "नाचो सखी रे" गाती हुई आगे आएँ और हल्क़ा[5] बांधे यानी मुदव्विर[6] हों। तब एक दो, एक दो के पांव से रक्स करें। मनबाद[7] हाथ जोड़कर वही चीज़ गाती हुई पस्पा[8] होकर जाएं मामुली[9] पर ताल में एक दो, एक दो पांव से निकालती हुई जाएँ और 'चिरंजीव रहें जानेआलम' कहें।

दूसरा रहस सीधी गुलमाल नाम

बालाए कमर ज़ंजीराबंदी[10] करें। इस तरह से कि एक दूसरे अपना पंजाएदस्त[11] मिला-मिलाकर कमर पर धरें और मिली रहें। फिर सीधे 'गुलमाल नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आयें और हल्क़ा[12] बांधें और रक्स करें और बतरीक़े अव्वल[13] अमल[14] में लाएँ।

तीसरा रहस ताउस-पंखी[15] नाम

इसमें अपने-अपने दाहिने हाथों को बाएं हाथों पर रखकर बुलंद करके पेशानियों[16] के ऊपर रखें और एक के बाजू के अंदर से दूसरी का बाजू निकला हुआ हो और ज़ंजीराबंदी करें। फिर 'ताउसपंखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे बढ़ें और हल्क़ा करें और रक्स के बाद तरीक़े अव्वल अमल में लाएँ।

---

1. पंक्ति में खड़े नर्तक, 2. लेखक की कृति, 3. उल्टा, 4. हाथ बायां, 5. वृत्त, 6. एकत्र, 7. इसके बाद, 8. पीछे को जाना, 9. पुराने स्थान पर, गुलमाल नाम रहस का। मकान बनाने वाला मिस्त्री एक औजार प्रयोग करता है जिसे करनी या कन्नी कहते हैं, उसे गुलमाल भी कहते हैं। 10. ज़ंजीर के समान बंधना, 11. हाथ का पंजा, 12. गोला, 13. पहले के समान, 14. प्रयुक्त, 15. मोरपंखी नाम रहस का, 16. माथा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौथा रहस मरूहा[1] नाम

अपने-अपने दाहिने हाथों से एक-एक कोना दाहिने तरफ़ के दुपट्टे का पकड़कर सीधा दराज़[2] करें और दूसरा आंचल पसेगर्दन[3] से अटकाए रखें और मुट्ठी वांधकर अंगुष्तेनर[4] और अंगुष्तकलमा[5] से तना हुआ सिरा दुपट्टे का पकड़ें और बायां हाथ एक दूसरे की कमर पर रखकर ज़ंजीराबंदी करके 'मरूहा नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्क़ा करें और नाचें और बतरीक़े-अव्वल अमल में लाएँ।

पांचवा रहस शिनाई[6] नाम

दुपट्टे का एक कोना दस्तेचप से और दूसरा दस्तेरास्त[7] से पकड़ें। फिर लय-ताल में ज़ेर-ओ-बाला[8] करती हुई नाव खेने की तरह से और 'शिनाई नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ। अम्माबाद[9] यही गाती हुई मशरिक़रूह[10] बरपुश्त[11] होकर एक के पीछे दूसरी एक-दो, एक-दो पांव से निकालती हुई पुरानी जगह पर जाएं और 'चिरंजीव रहो जानेआलम' सुर में कहें। नाव खेने की यह शक्ल है कि लय में पहले दस्तेचप नीचे लाएँ इस क़द्र कि दस्तेरास्त कमर तक आए और फिर दस्तेरास्त बुलंद करें मयपायचा[12] इस क़द्र की दस्तेचप कमर तक पहुंचे।

छठा रहस 'मेहताबमुखी[13] नाम

दोनों हाथों की कलमे[14] की उंगलियां जोड़कर मिस्लहिलाल[15] पेशानी पर रखें और एक के बाज़ू से दूसरी अपना बाज़ू निकाल लाए और ज़ंजीराबंदी करें और 'मेहताबमुखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्क़ा करें यानी मुदव्विर हों और रक्स करें। अम्माबाद[16] हाथ छोड़कर यही गाती हुई एक दो, एक दो ताल में पांव से निकालती हुई पस्पा[17] होकर जाएं— मामूली[18] पर जाएँ और 'चिरंजीव रहो जानेआलम' सुर में कहें।

---

1. नाम रहस, अच्छा कार्यकर्ता, 2. लम्बा करें, 3. गर्दन के पीछे, 4. अंगूठा, 5. तर्जनी 6. नाव खेने का अन्दाज, 7. दाहिना हाथ, 8. ऊपर नीचे, 9. इसके बाद, 10. पश्चिम की ओर, 11. पीठ करके, 12. लहँगे का सिरा, 13. नाम रहस, चन्द्रमुखी, 14. तर्जनी, 15. चांद के समान, 16. इसके बाद, 17. पीछे, 18. पूर्वस्थान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सातवां रहस आफ़ताबमुखी[1] नाम

दोनों हाथों की उंगलियों को आपस में मिलाकर उसके बाद दोनों हाथों की अंगुष्तानेमियाना[2] को मुहाजी[3] एक दूसरे का करके इस तरह से कि अंगूठा अलाहिदा रहे अपनी-अपनी पेशानियों[4] पर रखें और एक की बाज़ू से दूसरी अपना बाज़ू निकालकर ज़ंजीराबंदी करें। फिर 'आफ़ताबमुखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्क़ा करें और रक्स करें और बतरीक़े अव्वल अमल में लाएँ।

आठवां रहस आसमानमुखी नाम

अपना-अपना दाहिना हाथ मुनक़लिब[5] सरों पर रखें और बाएँ हाथों को एक दूसरे के बाज़ू से निकालकर ज़ंजीराबंदी करें और आंखों से आसमान देखती जाएँ। फिर 'आसमानमुखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्क़ा करें और नाचें और बतरीके मरक़ूमाबाला[6] अमल में लाएँ।

नवां रहस चौतरफ़ा नाम

चार-चार सखी सफ़[7] से निकलकर सामने आएँ। दो सखियां मुक़ाबिल[8] खड़ी हों। एक सखी दाहिने हाथ से अपने दस्तेचप[9] की कोहनी पकड़े और बाएँ हाथ से मुक़ाबिल वाली[10] के दाहिने हाथ की कोहिनी पकड़े और मुक़ाबिल वाली भी इसी तरह बजालाए[11] और दोनों हाथों को ताने रहे। अम्माबाद[12] दो सखियाँ रास्त ओ चप[13] से मुक़ाबिल होकर एक एक हाथ उन दोनों का अपने-अपने दोनों हाथों से पकड़ें और चेहरे अंदर की तरफ़ हों और जिस क़द्र[14] हों अच्छा है। इसी तरह चार सखियाँ चौतरफ़ा बन जाएँ। इस तरह से कि बाद की दोनों सखियों के दोनों हाथ पहली वाली दोनों सखियों के बंदेदस्त[15] और बंदे मुराफ़िक़[16] पर क़ायम[17] हों। फिर 'चौतरफ़ा नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और रक्स करें, यानी एक

---

1. नाम रहस सूरजमुखी, 2. बीच की अंगुलियां, 3. सामने आमने, 4. माथा, 5. उल्टे, 6. पूर्वानुसार, 7. पंक्ति, 8. सामने, 9. बायां हाथ, 10. सामने वाली, 11. वैसा ही करें, 12. इसके बाद, 13. दाहिने-बायें, 14. अधिक, 15. कलाई, 16. कोहनी, 17. स्थिर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो, एक-दो के पांव से घूमती जाएँ और चक्कर करती जाएँ और टुकड़ा बोलने के बाद हाथों को छोड़कर यह गाती हुई पस्पा[1] होकर एक-दो, एक-दो ताल में कहती हुई जाए-मामूली[2] पर जाएँ और 'चिरंजीव रहो जानेआलम' कहें।

दसवां रहस चौरुखा नाम

चार सखियां सफ़[3] से निकलकर आपस में हाथ से हाथ का पंजा गांठकर हल्क़ा करें और चेहरे बाहर हों और हाथों को तानें और खींचे रहें और जितनी हों उसी हिसाब से बन जाएँ और 'चौरुखा नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और रक्स करें। अम्मावाद हाथ जोड़ कर यही गाती हुई और ताल में एक-दो, एक-दो पांव से कहती हुई जाए-मामूली पर जाएँ और 'चिरंजीव रहें जानेआलम' कहें।

ग्यारहवां रहस अफ़सर मुबारक नाम

अपने-अपने दाहिने हाथों के पंजों को मुदब्बिर[4] करें और सीधा खड़ा करें और बाएँ हाथों से अपने-अपने दाहिने हाथों की कोहनियों को पकड़ें फिर 'अफ़सर मुबारक नाचो सखी रे' कहती हुई आगे आएँ और इसी तरह ता जाए-मामूल पिछले क़दम ताल में गाती हुई जाएँ। पुश्त[5] न होने पाए। मनवाद 'चिरंजीव रहो जानेआलम' कहें।

बारहवाँ रहस आदाब नाम

दाहिने हाथ मुनक़लिब पेशानियों पर रखें और बायां हाथ एक-दूसरे की कमर पर रखें फिर 'जानेआलम रहस मुबारक' गाती हुई आगे आएँ और हल्क़ा करें यानी मुदब्बिर हों और रक्स करें। मनवाद एक-दो पांव से निकालती हुई जाए-मामूल पर जायें ओर 'चिरंजीव रहो जानेआलम' कहें।

तेरहवाँ रहस छत्र नाम

एक दूसरे के बाजू से बाजू निकालकर ज़ंजीराबंदी करें और अपने-अपने दोनों हाथ के

1. पीछे जाना, 2. पूर्वस्थान, 3. पंक्ति, 4. मिलावें, 5. पीठ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंजे गांठकर यानी मिलाकर पेशानियों पर मुनक़लिब रखें और बतरीके-मरक़ोमावाला[1] अमल करें ।

चौदहवां रहस खुशबुनियाद नाम

अपने-अपने दोनों हाथों को सीधा बुलंद करें और ह्रेक अपने-अपने हाथ और बाज़ू को दूसरे के हाथ और बाज़ू से पेचीदा[2] रखें और बतरीके-मामूल-मरकमा[3] व मकतूबावाला[4] अमल करें ।

पन्द्रहवाँ रहस बुरक़ा नाम

अपने-अपने सिरों पर अपने-अपने दुपट्टों को बतरीके बंगाली घूंघट गत के छोड़ दें और एक दूसरे के बाज़ू से बाज़ू निकालकर एक दूसरे का पंजा गांठकर कमरों पर धरें और ज़ंजीरा-बंदी करें और बतरीके-मामूल अमल करें ।

सोलहवाँ रहस भला नाम

दाहिना हाथ खुला हुआ अपने-अपने सीने पर रखें और बायां हाथ एक दूसरे की कमर पर धर के बतरीक़े अव्वल बजा लाएँ ।

सत्रहवाँ रहस प्यारा नाम

अपने-अपने दाहिने हाथ की कलमें[5] की अंगुली अपनी-अपनी ठुड्डियों पर रखें और बायां हाथ एक दूसरे की कमर पर धर के बतरीक़े-साबिक[6] अमल में लाएँ ।

अट्ठारहवाँ रहस जाने-सखी नाम

बीच की सखी दोनों बगलें जावी[7] की सखियों की दोनों हाथों से पकड़े और जावी की

---

1. जैसा कि ऊपर बताया गया है, 2. बांधें, 3. जैसा कि ऊपर कहा गया है, 4. पूर्वोक्तानुसार, 5. तर्जनी, 6. पहले तरीक़े के समान, 7. साथ वाली ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोनों सखियाँ दाहिने हाथ के आपस में पंजे गांठ के बीच वाली के सिर पर रखें और मिस्ले एह्कामे-साबिक़[1] बजा लाएँ ।

उन्नीसवाँ रहस ह्यिा सखी नाम

एक सखी दाहिने हाथ से दूसरी सखी का दाहिना हाथ पकड़कर पंजे से पंजा गांठकर खींचकर अपनी नाफ़ पर धरे और अपने-अपने बायें हाथ एक-दूसरे की कमरों पर धरें और मिस्ले-साबिक बजा लाएँ ।

वीसवाँ रहस चैन सखी नाम

एक दूसरे के हाथ का पंजा गांठकर दर्मियान[2] वाली के सिर पर रखे । इस हिसाब से दाहिने बाएँ हाथ दोनों पड़ते हैं और बीच वाली एक दूसरे के हाथ का पंजा बखूबी[3] गांठकर कमरों पर रखकर ज़ंजीराबंदी करें और मिस्ले-अव्वल[4] बजा लाएँ ।

इक्कीसवाँ रहस रास्तदस्त नाम

अपना-अपना दाहिना हाथ एक दूसरे के सिर पर सीधा मिस्ल दाहिना हत्था गत के बुलंद करें और बायाँ हाथ एक दूसरे की कमर पर रखें और मुताबिक़ मक्तूबाए-अव्वल बजा लाएँ ।

बाईसवाँ रहस चपस्त नाम

तरकीब रास्तदस्त[5] के गरअक्स[6] बजा लाएँ ।

तेईसवाँ रहस राधा नाम

घूंघट बतरीके लखनव्वा घूंघट गत के निकाले और बतरीके एह्काम-साबिक[7] अमल करें ।

---

1. इससे पहले हुक्म के अनुसार, 2. बीच में, 3. ठीक से, 4. पहले के अनुसार, 5. दाहिना हाथ, 6. उल्टा, 7. पूर्व ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौबीसवाँ रहस तसलीम नाम

दाहिना हाथ बालाए-पेशानी[1] रखकर आगे आएँ और उसी हाथ से ताल में गुलदस्ता उठाएँ और पस्पा[2] होकर पांव से एक-दो, एक-दो निकालती हुई मुक़ामे सफ़[3] पर आकर इस्तादा[4] हों और गुलदस्ते पेशानियों पर धरकर दस्तेचप[5] से दूसरे का बाजू पकड़े और जंजीराबंदी करें और 'तसलीम नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आयें और हल्क़ा बांधें यानी मुदव्विर हों और नाचें। मनवाद हाथ जोड़कर यह गाती हुई पस्पा होकर जाए-मामूल पर ताल में एक-दो, एक-दो पांव से निकालती हुई जाएँ और फिर 'चिरंजीव रहो जानेआलम' सुर में कहें।

पच्चीसवाँ रहस हूर नाम

बाजू से बाजू निकालकर गुलदस्ते हाथों में क़ायम करके सिरों पर रखें और मुताबिक एहकामे बाला बजा लाएँ।

छब्बीसवाँ रहस शमशाद नाम

दो सखियाँ मुक़ाबिल खड़ी होकर दस्तरास्त मयगुलदस्ता[6] बुलन्द करें और बाएँ हाथों के पंजे से पंजा मिलाकर आपस में तानकर गांठ लें और एक-दो, एक-दो पांव से निकालती हुई घूमें और बादेरक्स[7] गुलदस्ते ताल में रखकर मशरिक़-रोया-रू-बरपुश्त[8] करके जाएँ और दुआए-मामूल[9] दें सुर में।

सत्ताईसवाँ रहस हुमायूँ नाम

दो सखियाँ मुकाबिल होकर दाहिने हाथों को मयगुलदस्ता पेशानियों पर रखें और बाएँ हाथों के पंजों को आपस में आमेख्ता[10] करें, तानें और मुताबिके हुक्म-बाला[11] अमल करें।

---

1. माथे के ऊपर, 2. पीछे, 3. पंक्ति के स्थान पर, 4. एकत्रित हो, खड़े हों, 5. बायाँ हाथ, 6. गुलदस्ता सहित, 7. नृत्य के बाद, 8. पश्चिम की ओर पीछे किए, 9. पुरानी दुआ "चिरंजीव रहो जानेआलम", 10. मिलाकर, 11. ऊपर दिए गए हुक्म के अनुसार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अट्ठाइसवाँ रहस खन्दा नाम

दो सखियाँ मुक़ाबिल होकर अंगुष्ताने कलमा[1] दस्तेरास्त[2] को जेरेलब[3] रखें और दस्त-हाएचप[4] से आपस में पंजे से पंजा गाँठे और मुताबिक[5] एहकामे मरकूमावाला[6] बजा लायें।

उन्तीसवाँ रहस बाअदब नाम

एक-दूसरे के बाजू से बाजू निकाल कर बालाएनाफ़[7] दोनों हाथों से गुलदस्ते रखकर हल्क़ा करके रक्स करें और मुताबिक एहकामे मरकूमावाला रक्स हाय मुदव्विर अमल करें।

तीसवाँ रहस खूब नाम

दो सखियाँ मुक़ाबिल होकर दाहिने हाथ खुले हुए सीनों पर रखें और बाएँ हाथों को पंजों से गाँठकर तानें और वक्ते रक्स[8] नज़रें सीनों पर रखें और वक्तपसरुई[9] सीनों पर हाथ रखे जाएँ और मुताबिक एहकाम मरकूमाबाला बजा लायें।

इकतीसवाँ रहस मुसफ्फी नाम

बाज़ू के अंदर से बाजू निकालकर ज़ंजीरा करें और बाएँ हाथों को अपनी-अपनी नाफ़ों पर खुला हुआ कफेचपीदा[10] धरें और दाहिने हाथों से गुलदस्ते सरों पर धरें और बंगाली घूंघट निकाले रहें और सीने के ऊपर नज़रें रखें। बादेरक्स[11] मुताबिक़[12] एहकामे-मरकोमाबाला[13] बजा लायें।

बत्तीसवाँ रहस मतलब नाम

बंगाली घूंघट निकालें और दोनों हाथ पंजे से पंजे मिलाकर लटकाए रहें और बाहम[14] मिले रहें और बादेरक्स बतरीके एहकाम मरकोमाबाला अमल करें।

---

1. तर्जनी, 2. दाहिना हाथ, 3. होंठों के नीचे, 4. बायें हाथ, 5. अनुसार, 6. जैसा कि पहले कहा गया है, 7. नाभि पर, 8. नृत्य, 9. पीछे जाते समय, 10. हाथ का पंजा, 11. नृत्य के बाद, 12. अनुसार, 13. पिछले हुक्म के, 14. नाभि के ऊपर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तैंतीसवाँ रहस हमराज नाम

बाज़ू से बाज़ू निकालकर ज़ंजीरा करें और दाहिने हाथ की कलमे की उंगली ठोढ़ी पर रखें और बायाँ हाथ मयगुलदस्ता बालाएनाफ[1] रखें और बादेरक्स[2] बतर्ज़ीके एहकाम[3] मक्तूबे-बाला[4] बजा लायें।

चौंतीसवाँ रहस तोहफा नाम

बाज़ू के अंदर से बाज़ू निकालकर ज़ंजीरा करें और दाहिने हाथ मयगुलदस्ता सिरों पर रखें और बाएँ हाथ खुली हुई नाफ़ों पर धरें और बादेरक्स मुआफ़िक़-अवामिर[5] मसतूराए-सुतूरवाला[6] बजा लाएँ।

पैंतीसवाँ रहस मनसुखी नाम

तीन सखियाँ पंजे से पंजा मिलायें। दो के चेहरे मुक़ाबिल[7] रहें, एक की पुश्त[8] हो। तीनों गुलदस्ता-बदस्त[9] हों और बादेरक्स[10] मुआफ़िक़-अहवाल-मुहर्रिर वाला[11] बजा लाएँ।

छत्तीसवाँ रहस माशूक नाम

बाज़ू से बाज़ू निकालकर ज़ंजीरा करें और कफ़ेदस्तरास्त[12] कफ़ेदस्तचप[13] पर धरकर बाला ए नाफ़[14] रखें। बादे पाकोबी[15] मुताबिक़ हिदायत मरकूमावाला[16] बजा लाएँ।

फसल दूसरी राधा कन्हैया के दो तरह के किस्सों में

पहला क़िस्सा राधा और कन्हैया के इज़हारे-हालात[17] और ताश्शुक़[18] में।

---

1. नृत्य के बाद, 2. हुक्म के अनुसार, 3. पहले के, 4. पहले किए गए कृत के अनुसार, 5. पूर्वोक्त आज्ञानुसार, 6. पंक्ति में खड़ी हुई नर्तकियाँ, 7. सामने, 8. पीठ, 9. गुलदस्ता लिए हुए, 10. नृत्य के बाद, 11. पहले किए गए कृत के अनुसार, 12. दाहिने हाथ का पंजा, 13. बायें हाथ का पंजा, 14. नाभि पर, 15. नृत्य, 16. पूर्वोक्त निर्देशानुसार, 17. हालात के विषय में, 18. इश्क।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहला किस्सा राधा और कन्हैया का

दो सखियाँ कारचोवी[1] पर लगाकर भारी जामाए-हुस्न[2] पहनें। एक का नाम अरग़वान परी, दूसरी का नाम ज़ाफ़रान परी है। एक मर्द बशकल देव क्रियाए मंज़र बने, इसका नाम अफ़रियत है। एक सखी जोगन बने, इसका नाम सैहरा है और एक मर्द ख़ादिम जोगन का बने, उसका नाम गुरबत है। बाद ख़त्म रहस सब सखियाँ बैठ जाएँ और एक जानिब दोनों परियाँ कुर्सियों पर बैठें और एक तरफ़ जोगन कुर्सी पर इजलास[3] करे और देव परियों के सामने गुर्ज़[4] लिए हाथ बांधे खड़ा हो और गुरबत जोगन के सामने दस्तबस्ता[5] इस्तादा[6] हो और एक जानिब राधा कन्हैया बामुकुट[7] और नथ वगैरा लगाए हुए घूंघट बंगाली निकाले हुए कुर्सियों पर इजलास करें और रामचीरा दोनों की ख़िदमत में दस्तबस्ता[8] हाज़िर हो। चार सखियाँ एक नाम ललिता, दूसरी का साखा, तीसरी चीना, चौथी लड़वा ज़ीग़ा कलग़ी लगाए हुए झुरमुट किए हुए अलाहिदा खड़ी हों। चार पनिहारिन मसनवी[9] कुएँ से ठुमरी गाती हुई राक़िम[10] की तसनीफ़[11] पानी भरती हुई हों और एक मर्द मुसाफ़िर की सूरत बना हुआ मय गठरी और असाबदस्त[12] हाज़िर हो। चार मक्खनवालियाँ होरी राक़िम की तसनीफ़ गाती हुई और मक्खन निकालती हुई हों। जोगन को चाहिए गमज़दा बैठना।

सवाल गुरबत का और अर्ज़ सैहरा से।

गुरबत— जुगजुग जियो आनन्द रहो जोगन साहब क्यों मुलूल[13] हो, काहे जिया मलीन है।

सैहरा— (गुरबत से) चौबीस बरस हुए एक रंज है।

गुरबत— वो क्या रंज है। हमसे कहने का हो तो कहिए।

---

1. कारचोब एक लकड़ी का यन्त्र होता है जिस पर कपड़ा बांधकर कढ़ाई की जाती है। उस कढ़ाई को कारचोबी कहते हैं, 2. सुन्दर कपड़े, 3. सभा, 4. गदा, 5. हत्था बांधकर, 6. खड़े हो, 7. मुकुट सहित, 8. हाथ बांधकर, 9. बनावटी, 10. लेखक, 11. कृति, 12. लकड़ी लिए हुए, 13. दुखी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सैहरा— चौबीस वरस हुए महका इस ग़म में कि राधा कन्हैया का नाच नहीं देखा।

गुरबत— बस आपको इसी का ग़म है। जाता हूँ। तदवीर[1] करने को।

गुरबत का तजस्सुस[2] करना। गुरबत चला और अफ़रियत से अलाहिदा[3] मुलाक़ात की और कहा—सलाम वालेकुम मियाँ अफ़रियत।

अफ़रियत—वालेकुम अस सलामुसैन वल्लामुतताम वलकलाम अलकशमश वलवादाम मियाँ गुरवत अली खाँ वहादुर बहादुरान खटपट जंगनामर्दी धवड़चोद।

फिर दोनों बग़लगीर[4] हुए। अफ़रियत इस तरह से हंसा काँव-काँव, खिल-खिल-खिल।

गुरबत— (अफ़रियत से) मियाँ अफ़रियत। हमारा-तुम्हारा मुद्दत से भाई-चारा है। हमको तुमसे एक अम्रे[5] ज़रूरी कहना है। अगर तुमसे हो सके।

अफ़रियत—क्या काम है?

गुरबत— एक जोगन है। उसको एक ग़म है।

अफ़रियत—वह कौन सा ग़म है।

गुरबत— जोगन साहिवा कहती हैं कि मुझे राधा-कन्हैया के नाच न देखने का ग़म है। मैं वायदा कर आया हूं कि कोशिश करता हूँ। अगर तुमसे हो सके तो मेरे वायदे को पूरा करो।

अफ़रियत—तैनती मैंनती दुम ख़बीशी लोटकलाटा झोंटकझांटा संदूक़ मुअल्लक़ सुरा गांव की दुम और बच्चों की क़सम जो मेरे किए बरामद मतलव होगा हरगिज दरेग़ न करूँगा। लो मैं सई करता हूँ।

बस उसी वक्त अफ़रियत गुरवत को हमराह लेकर रवाना हुआ और कहने लगा 'वाह-वाह सातूरवाजी, हम्मालबाज़ी, नैज़ावाज़ी, ख़लालबाज़ी, शमशीरवाज़ी, रास्तवाज़ी चल मेरे साथ और ब-हुजूर ज़ाफ़रानपरी और अरगवान परी हाज़िर हो अर्ज़ की।

---

1. यत्न, 2. चेष्टा, 3. अलग, 4. आलिंगन, 5. काम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोनों—एक जोगन राधा-कन्हैया का नाच देखने के ग़म में जोगन हुई है और चाहती है कि वो नाच देखे ।

परियाँ— जोगन को ले आओ ।

अफ़रियत गुरबत के हमराह जोगन के पास आया और कहा ।

गुरबत— (सैंहरा से) जोगन साहिबा चलो । परियों ने बुलाया है ।

जोगन साहिबा मय गुरबत और अफ़रियत परियों की ख़िदमत में हाज़िर हुई ।

अफ़रियत—(परियों से) जोगन हाज़िर है ।

परी— बुला लाओ ।

जब जोगन आई तो दोनों परियाँ उठकर बग़लगीर[1] हुईं ।

परियाँ— (सैंहरा से) क्या तुमको हुआ ? क्यों जोग लिया ?

सैंहरा— चौबीस बरस से यह ग़म दामनगीर है कि किसी तरह से राधा-कन्हैया का नाच देखूं ।

परियां— अरे अफ़रियत, राधा कन्हैया का नाच जोगन को दिखा दे ।

अफ़रियत—(चिल्लाकर) नहीं वे अफ़रियत ।

(राधा कन्हैया और सखियों पर) नाचो हिंडोले का नाच, नाचो हिन्डोले का नाच, नाचो हिन्डोले का नाच ।

उस वक्त सब सखियाँ बराबर इस्तादा[2] हों और एक सिरा दुपट्टे का कन्हैया थामें । दूसरा सिरा राधा जी बसते-सफ़[3] में थामें और वह हिंडोला गाती जायें और एक-दो पांव के ताल में लगाती जायं और सब सफ़[4] के पिछले क़दम और पसती पर रस्सी को ढीला किया करें । रहसवालियाँ रूपक ताल नाचें और तीन मर्तबा से कम आमदो-रफ्त[5] न करें और यह सावन फ़क़ीर[6] का बनाया हुआ गाती जायें ।

आस्ताई—सैंया रे झकोरा दे गयो यह ऋतु सावन बहार,
सीस घूम गयो झूले प 'अख्तर' पेंग बढ़ाए ।

1. खड़े, 2. एकत्र हो, 3. पंक्ति के बीच, 4. पंक्ति, 5. आना-जाना, 6. लेखक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनो

सब सखियाँ, मुताबिक़[1] राधा जी के करती जायें और कन्हैया जी पेशक़दमी[2] पर मुक़ाबिल[3] राधा के होकर दुपट्टा खींच लिया करें और पसक़दमी[4] पर ढील दिया करें।

आस्ताई—हिंडोला झूले श्यामा श्याम घने से घन
चलत पवन सन न न, स न न न, स न न न।

पहला अंतरा–सब सखियाँ मिल पेंग बढ़ाओ
लेके तान त न न न, त न न न, त न न न।

दूसरा अंतरा—मोर मुकुट कर राख रध कुंडर
पाएल बाजे झ न न न, झ न न न, झ न न न।

बाद इख़्तिताम[5] हिंडोला सब सखियां राजा रामचन्द्र की जै कहें। मनबाद राधा कन्हैया मुक़ाबिल इस्तादा[6] हों और निसफ़[7] सखियाँ कन्हैया की जानिब और आधी राधा की तरफ़ खड़ी होंकर और राधा कन्हैया से सवाल और जवाब शुरू हों और अर्थ भाव होता जाए और अर्काने बह्र[8] चक्करों में दाहिनी जानिब[9] से दोनों के पांव से हर बैत[10] और हर दोहरे के बाद अदा होते जाएँ।

राधा—(अल मुसन्निफ़[11]) मजमए ग़ैर में ऐसा सितम ईजाद किया
क़ातिला भूल के हमको न कभी याद किया।

दोहरा— मैं विरहिनी संजोग संग न कोउ साथ,
नारी छुवत वेद के फफला हो गए हाथ।

कन्हैया— (अल मुसन्निफ़) नाम मेरा है कन्हैया मैं तुझे जानता हूँ।
राधा जी जान से मैं तुमको यहाँ मानता हूँ।

दोहरा— राधा जी अंग पर विंदिया इति छवि देत,
मानों फ़ूली केतकी भोर बासन लेत।

राधा— (अल मुसन्निफ़) मैं तेरे इश्क़ में दीवानी हुई ऐ काना,
मैने जी जान से तुझको तो यहां पहचाना।

---

1. अनुसार, 2. आगे बढ़ने पर, 3. सामने, 4. पिछले क़दमों, 5. समाप्ति के बाद, 6. स्थापित, 7. आधी, 8. पहले के अनुसार, 9. ओर, 10. शेर, 11. लेखक द्वारा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहरा—आओ प्यारे मोहन पलक ढांक तोहे लेऊँ,
न मैं देखूं औरन को न तोहे देखन देऊँ।

कन्हैया—(अल मुसन्निफ) इश्क़ में तेरे राधा जी जंगल-जंगल छाना,
देवपरी ने मुझको कहीं नहीं पहचाना।

राधा— मोर मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल,
इहि मानक मों मन बसे सदा बिहारी लाल।

कन्हैया—राधा द्वारा दूर है जैसे पेड़ खजूर,
चढ़ा तो चाखा प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर।

दोहरा—साईं झरोखे बैठ के सबका मुजरा लेय,
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देय।

इस दोहरे के बाद कन्हैया हाजरीन[1] और नाजरीन[2] सबको जर-चाकरी[3] तकसीम[4] करें और सब हाथों में ले सर से और आंखों से लगायें और चूमें।

राधा—नदी किनारे धुआँ उठे रे मैं जानूँ कछु होय,
जाके कारन जोग रमाया, वह्न न जरत होय।
मुँह मेहताब दा गुलाबी चश्मा दे हाथ विच सोडा दे हथकड़ियाँ,
दिल भी देखा परदेस भी जांदा रहा दे वे ख़ड़ कहड़ियाँ।
खोल तवीबां पाटियां तैन मेड़े अल्हड़ी घाव न पेड़,
जेतू दर्द बरावन मेर बिछड़े जानी मेर।
तुम दाता दोऊ जग के तुम लग हमरी दौर
जैसे काग जहाज को सूझत ओर छोर।
कान्हा तुम मत जानियो तुम बिछड़न पीत गई,
जैसे बेल पोई की दिन-दिन होवत हरी।
कागा सब तन खाईयो और चुन-चुन खाइयो मांस,
दो नयनन मत खाइयो कि पिया मिलन की आस।

---

1. दर्शकों, 2. सुननेवालों, 3. प्रसाद, 4. बांटे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वंसी वाले मोहन हमरी ओर तो देख,
मैं तोहे राखूं नैनन में काजर की सी रेख।

कन्हैया--राधा काहे का दूर हो घर अंगना न सुहाय,
ज्यों मेंहदी के पातन माँ लाली लिखी न जाए।

राधा— राजन के राज अधिराज जुग-जुग जियो
आनन्द रहो वो मुरली जामें छह राग छत्तीस
रागनियाँ बाजत थीं वो मुरली कहां ये छोड़ आए, वही बजाओ।

कन्हैया—(गोद फैलाकर) राजन की रानी अधिरानी महरानी कान्हा
सीस देत है जुग-जुग जियो आनन्द रहो।
राम दुहाई वह मुरली खोय गई।

राधा—महाराज मैं तुमका खूब चीन्हत हूं। तुम कुबरी को दे आय हो।

यह कहकर राधा जी ख़फ़ा हो गईं और रूठकर अलाहिदा[1] बैठ गईं। उस वक्त कन्हैया जी यह ठुमरी गाकर अर्थ भाव करने लगे और पांव पर गिरने लगे और हाथ बांधकर मनाने लगे—

आस्ताई—मेरी महारानी राधा रानी।

अन्तरा—क्या मोसे कुछ चूक पड़ी,
मेरी रानी 'अख्तर' कदर न जानी।

फिर मजबूर होकर कन्हैया जी रामचीरा अपने मुलाज़िम[2] को पुकारें।

रामचीरा—हाज़िर महाराज हाज़िर (अर्ज़ रामचीरा) राजन के राज अधिराज महाराज शिवप्रधान छत्रपति बताओ तो क्या हुआ ?

कन्हैया—राधिके ख़फ़ा हो गईं। जानत हैं कि मैं मुरली कुबरी को दे आया हूं।

रामचीरा—महाराज फिर मनाओ।

इसी तरह तीन मर्तबा रामचीरा तलब हो और वह यही अर्ज़ करे। चौथी मर्तबा रामचीरा

---

1. अलग, 2. सेवक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्ज़ करे कि महाराज अब किसी सखी को बीच में डाल कर सफ़ाई कर लो। उस वक्त कन्हैया जी पुकारें, 'अरे ललिता !' ललिता जवाब दे—'आई महाराज' और ताल में लहरों के साथ एक-दो, एक-दो, नाचती हुई हाज़िर हो और बैठ जाये।

कन्हैया—ऐ ललिता। हमरी राधा हमसे नाहीं मानत हैं। क्या करूँ।

ललिता—विनती करो। नाक रगड़ो। पइयां पड़ो। मूड़ घिसो। चिरौरी करो, जब तौ मनिहैं।

कन्हैया—मैंने सब जतन किया वो नाहीं मानत हैं और तेरे कहने से मैं फिर मनाता हूं।

दोबारा कन्हैया फिर मनायें और यह ठुमरी गायें और बतरीक़े अव्वल मिन्नत समाजत से अर्थभाव अदा करें—

आस्ताई—राधा जी मोहसे बोलो क्यों न रे ?

अन्तरा—क्या मोंसे कुछ चूक पड़ी मोरी रानी
हँस-हँस घूँघट खोलो क्यों न रे ?

इसी तरह से चार दफ़ा रामचीरा से शिकवा करें और बमुजिब अर्ज़ रामचीरा तीनों बाकी सखियों को भी उसी तरह ताल में बुलायें और वो सखियाँ वही कलमाद-मरकोमाबाला[1] अर्ज़ करें। जब चौथी सखी के आने की बारी हो, उस वक्त कन्हैया जी यह ठुमरी गाएँ और आह-ओ ज़ारी[2] व बेकरारी मिस्ल दफ़ाते अव्वल अमल में लायें।

आस्ताई—मेरी तो जीवन राधा।

अन्तरा—पैंया परूं मैं तोरे ललिता, तोरे साखा, तोरे चीना,
तोरे लड़वा ओके बिन देखे नहिं चैन।

इस अंतरा के गाने में जिस सखी का नाम आए उसकी मिन्नत करें और पांव पर गिरें। फिर सब सखियां खड़ी हो जाएं और राधा बैठी रहें। ताल सुर में यह कहें—

सब सखियां--दे दी अता ता ता ता थई दै दी अता ता ता ता थई।

अन्तरा—थई, थई थई थई, दै दी अता ता ता ता थई दै दी अता ता ता ता थई।

---

1. पहले कहे गए कथन, 2. रोना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कन्हैया—(उठ खड़े हों और ताल-सुर में कहें) राधा राधा राधा राधा
कुंजगलिन में राधा-राधा कुंजभवन में राधा-राधा।
यह गाते हुए नाचते जाएं और टुकड़े-तोड़े पांव से लेते जाएं।

उस वक्त रामचीरा अर्ज करे कि महाराज राधा को दाता से मांगो और तपस्या करो शायद मिल जायें। उस वक्त कन्हैया जी आसन मारकर दाहिने हाथ से नाक पकड़कर सांस रोकें। फ़ौरन राधा जी उठकर गले से चिपट जाएँ। फिर सखियां लड्डू पूजा करें।

लड्डू पूजा की तरकीब यह है—

कन्हैया जी गाल फुलाकर ऐसी आंखें बनायें कि पुतलियों की हरकत न हो और वाएं पांव के भल खड़े हों। दाहिने पांव की एड़ी बांयें पांव के घुटने पर रखें और चार सखियां दाहिने घुटने ज़मीन पर टेक के वायें पांव ज़मीन पर धरकर दोनों हाथों को मुदब्बिर करके गोल शक्ल पंजों की मिस्ले निशान वताने लड्डू की गोलाई और दूर के मानिंद वनायें और उन वने हुए हाथों को ताल से नचाती जायें और हरकत देती जायें। वक्ते गरदिशहाए दस्ती[1] हर मर्तवा लय-ताल में कन्हैया जी के फूले हुए गालों पर गुचका यानी टहोका और जश्व जैसा हलका घूंसा मारती रहें। मुट्ठी बांधकर देती जायें और यह अलफ़ाज़ गातीं जायें—

ले ले लाला लड़वा ले।

लड्डू पूजा के वाद सब सखियां बराबर इस्तादा[2] हों और यह दोहरा गायें।

पहला तुक—एक नार व्याकुल भई बरछी लगी जग वाके।

दूसरा तुक—ऐ बिदाता[3] तू मोहे पंख तो दे मैं जाए करूँ दरसन पिया के।

तीसरा तुक—समझायें सखियां मत सोक करो बिन ऊधो वूझे जमी पर वाके।

चौथा तुक—और जो पंखन ही से पीउ मिले तो या ले क्या पंख नहीं चकवी चकवा के।

जब सखियां चारों तुक गा चुकें तो बराबर-बराबर वैठ जायें और कन्हैया जी खड़े होकर यह दोहरा गायें—

---

1. हाथ को देते समय, 2. एकत्रित, 3. विधाता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कन्हैया—पहला तुक—मुरली हमरी खोय गई मथुरा-वृन्दावन की रेत।
दूसरा तुक—ना मोहे सूझत ओर-छोर न मोहे सूझत खेत।

राधा—महाराजा जब ही खुश होंगी जब मुरली ढूंढकर ला दोगे।

कन्हैया—अच्छा मुरली ढूंढे ही लाता हूं।

फ़ौरन कन्हैया जी उसी वक्त मुरली ढूँढते हैं। वे हरेक से यूं दरयाफ्त करते हैं :

कन्हैया—हमरी मुरली किसी ने देखी है।

रामचीरा—(इज़हारे-एन्फुगां[1] में जवाब दे) हमरी मुरगी किसी ने देखी है।

कन्हैयाजी उसे घूंसा मार के और गर्दनी दे के वहाँ से निकाल दें और हँसकर कहें—

कन्हैया—हम मुरली ढूंढत हैं कि मुरगी।

रामचीरा—(दोबारा कहे)—महाराज तोहार मुरली के दो सींग भी हैं और दुम भी है?

फिर बांसुरी की तफ़ह-हुस[2] और तजस्सुस[3] में मसरूफ़[4] हों और कलमाए-अव्वल[5] कहें फिर रामचीरा कहे—

रामचीरा—हमारी भैंस किसी ने देखी है—

फिर कन्हैया जो हरकत-मसूबून्कुल ज़िक्र[6] बजा लायें। इस दर्मियान में चारों पनिहारिन चाह[7] मसनवी[8] से यह ठुमरी राक़िम[9] की गा-गाकर पानी भरने लगें।

आस्ताई—सब राह बाट में ढूंढ फिरी वृन्दावन में हो सांवरिया
जंगल-जंगल सुनसान भयो सुन पाई न वैसी बांसुरिया।

अंतरा—पग धरत-धरत लट पलट गयो,
पनघटवा घाघर उलट गयो,
कर पकरत कंगन उचट गयो,
चल छाँड़ दे अख्तर बांगरिया।

---

1. दर्द दिखाने के लिए (मजाक उड़ाने वाले भाव में) 2. तलाश, 3. बेचैनी, 4. व्यस्त, 5. पहले वाक्यानुसार, 6. पहले कहे गए कथन, 7. कुआँ, 8. बनावटी, 9. लेखक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसी वक्त एक मुसाफ़िर का दाख्ला। कन्हैया जी लाचार होकर मुसाफ़िर से पूँछें—

कन्हैया—मियां मुसाफिर कहाँ से आते हो।

मुसाफिर—मथुरा-वृन्दावन से आवत हूं।

कन्हैया—हमरी मुरली भी किसी के पास देखी है।

मुसाफिर—हाँ देखी है। वो चार पनिहारिनें कुएँ पर पानी भर रही हैं। उनमें जो एक गोरी ठुमकी नाटी-नाटी सी है वही लेन है। माँग लेओ।

कन्हैया जी चारों पनिहारिनों से ब-मिन्नत हाथ बाँध-बाँधकर कहने लगें—

कन्हैया—हम तुम्हें लड्डू खिलाएँगे। हमरी मुरली दे दो।

पनिहारिनें—जाओ-जाओ, हटो-हटो। यहां मुरली नहीं है।

कन्हैया जी हरेक की मिन्नत और समाजत करें और वे चारों वारी-वारी हल्के-हल्के गुलचे यानी घूंसे कन्हैया जी के गालों पर लगाएँ और धक्के दे-दे के हटा दिया करें। आख़ीर में कहें—

पनिहारिनें—राजन के राज महाराज अधिराज शिव प्रधान जुग-जुग जियो आनन्द रहो, ताजा-ताजा माखन ला दो तो हम मुरली दे दें।

कन्हैया जी माखन लाने का इक़रार करके उसके तजस्सुख[1] में रवां-दवां[2] हों और चारों पनिहारिनें कुएँ पर वही ठुमरी गाती रहें। कन्हैया जी माखन की तलाश में माखनवालियों के पास जायें—

कन्हैया—जुग-जुग जियो आनन्द रहो थोड़ा सा माखन दो।

माखनवालियाँ सीनी पर मटकी धरे मथानी से दही मथती जायें और यह होली तसनीफ़[3] राक़िम[4] गाती जायें—

आस्ताई—ऐ देई में माखन वेचन जात।

अंतरा—ना लो कान्हा तुम माखन मोरा वेचूं 'अख़्तर' हाथ।

---

1. पीने के लिए, 2. चल दें, 3. कृति, 4. लेखक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब कन्हैया जी माखन तलब करें तो माखनवालियाँ उसी होली का अंतरा गा दिया करें। आख़िर एक माखन की सीनी माखनवालियों की आँखें बचाकर चुरा लायें और पनि-हारिनों को दें और उनसे मुरली लें और बजाएँ। राधा जी मुरली की आवाज सुनते ही दौड़कर कन्हैया जी के गले से चिपट जायें और बदिल राज़ी हो जायें।

राधा —महाराज का बोलबाला रहे, अब मोर मन खुस भया। तुम गद्दी पर विराजो, मैं तुम्हरे आगे गावत-नाचत हूं।

उसी वक्त साज़िन्दों के बीच में जाकर यह ठुमरी गायें और खूब दिल से अर्थ भाव मुख प्लास समेत अदा करें—

आस्ताई—बजन लागी स्याम की बांसुरी रे।

अंतरा —नदिया किनारे अख्तर बाँसुरी बजावत।
निकल जात जिया से सांसरी रे।

क़िस्सा ख़त्म हुआ। अगर शब्बेदारी मंजूर हो तो हर हर सखी अलाहिदा अलाहिदा नाच-नाच और गा-गा के रात काट सकती है। मगर ये क़िस्से और रहस वक्ते शब मुजइयब और बेहतर मालूम होते हैं। दिन को अच्छे नहीं लगते। उस वास्ते इस क़िस्से और रहसों की कैफ़ियत देखें वक्ते शब आरास्ता करें। अल्लाह तौफ़ीक़ दे।

तफ़सील पोशाक कन्हैया जी

1. घुटन्ना मय जांघिया
2. घाघरा
3. गुलूबन्द कारचोबी
4. मुकुट कारचोबी

चार अदद हों।

तफ़सील पोशाक की और राधा जी के ज़ेवर की

1. नथ
2. बीना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3. तमाम हिन्दुस्तानी ज़ेवर
4. पहरिया
5. लहंगा
6. पेशवाज़
7. बुन्दे यानी सरासरी
8. नुकरई बाँसुरी मय मुरली

आठ अदद हुए ।

सखियों की पोशाक

1. ज़ीग़ा
2. कलगी
3. सुलतानबंद
4. जुमला ज़ेवर
5. पेशवाज़
6. दुपट्टा
7. पायजामा

सात अदद हुए ।

परियों की पोशाक

1. कारचोबी दुपट्टा
2. जामाए हुस्न पुरज़र
3. पायजामा पुरज़र
4. जुमला ज़ेवर

मुताबिक़ लियाक़त चार जरूरतें हुईं ।

देव की पोशाक

1. जाकेट सियाह
2. पतलून सियाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3. दास्ताने सियाह
4. मोज़ा (यानी जुर्राव) सियाह
5. चेहरा मुकव्वह
6. गुर्ज़ चोबी सियाह
7. परकलां कागजी

सात अदद हुए ।

जोगन की पोशाक

1. तहमतपारचा शानज़रफ़ी
2. कफ़नी
3. जटाकलाँ मसनवी
4. साप कपड़े का कलाँ
5. झोली पारचा
6. तोम्वा
7. बैरागी चोबी
8. भभूत

आठ चीज़ें हुईं ।

आलातब पोशाक माखनवालियों की

1—साड़ी
2—मटकी
3—बिरजी गिलट नुक़रई सीनी बिरंजी गिलट नुक़रई
4—मथानी चोबी
5—खुरिया गिलट नुक़रई
6—कुलिही गिलट नुक़रई
7—ज़ेवर हिन्दुस्तानी

हस्वेलियाक़त साहवेक़िस्सा सात चीज़ें हुईं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पोशाक और ज़ेवर पनिहारिनों के

1—साड़ी
2—घड़ा मिस्सी
3—डोल
4—रेशम
5—चाह मसनवी मय गरारी
6—ज़ेवर

हस्वेलियाक़त वानिए किस्सा छह चीज़ें हुईं।

पोशाक मुसाफ़िर की

1—अंगरखा
2—पायजामा
3—पगड़ी
4—गठरी
5—लाठी
6—लोटा
7—तोशा
8—बस्तादरी खुर्द

आठ अदद हुए।

पोशाक गुरबत

1—अंगरखा
2—पायजामा
3—चपकन सफ़ेद
4—कमरबन्द
5—दस्तार सफ़ेद

पाँच अदद हुए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पोशाक रामचीरा

1—धोती
2—मिरज़ाई
3—फेंटा
4—जनेऊ
5—कड़ादस्त नुकरा
6—अंगौछा

छह अदद हुए।

रहसवालियों की पोशाक

1—पायजामा पुरज़र
2—पेशवाज़ मसालेहदार पुरज़र
3—दुपट्टा पुरज़र
4—ज़ेवर

हस्बे लियाक़त तमबवुले वानिए जलसा चार चीज़ें हुईं।

दूसरा क़िस्सा राधा और कन्हैया का

इस क़िस्से में बारह रहसवालियों से कम न हों और सबकी पोशाक और ज़ेवर मिस्ल[1] तफ़सील[2] मरकूमा-बाला[3] हों। पाँच सखियाँ बनें मिसले पोशाक और ज़ेवरात मरकूमा-बाला ललिता, चैंना, साख, लड़वा, कुबड़ी और रहसवालियां गारा भी बनें। कन्हैया मिसल पोशाक और राधा अल-हाज़ल क़यास[4] और रामचीरा मुताबिक़ नक़शा मरकूमाबाला[5] और खमटी-वालियां साड़ियां और ज़ेवर बंगाली पहनकर दो इस्म[6] बनें। एक रामचीरा मुलाज़िम[7] कन्हैया

---

1. समान, 2. विवरण, 3. पूर्वोक्त अनुसार, 4. क्रमागत, 5. पूर्वोक्तानुसार, 6. नग, 7. सेवक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुताबिक़[1] नक्शा-ए-अव्वल और लोधी धोती बांधे हुए मिर्ज़ाई पहने हुए हाथ की बंधी हुई पगड़ी, लाठी हाथ में, जनेऊ पहने हुए, अंगोछा लिए हो। रहसवालियाँ सफ़[2] बाँधकर-खड़ी हों और बायां हाथ बाएँ पहलुओ[3] पर अपनी-अपनी मुट्ठियाँ बाँध-बाँधकर करें। दाहिने हाथों की कलमे[4] की अंगुलियाँ होठों के नीचे रखकर दाहिने बाएँ घूमती हुई आगे आवें और 'ता थई थई तत थई थई तत' लहरों के साथ नाचती जाएँ। कन्हैया एक साफा सर पर रखकर और लकड़ी हाथ में गायों के मुक़ाबिल[5] खड़े हों। वे यूं गायों को बुलाएँ—'दुर दुर दुर, आओ आओ आओ, ऐसी आओ, ऐसी आओ, ऐसी आओ।' जब गायें क़रीब आया करें, कन्हैया जी देखकर और लकड़ी हिला दिया करें। इसी तरह तीन मरतबा बुलाएँ और हांकें और सब गायें बुलाने के वक्त चली आया करें और हांकने पर चली जाया करें।

चौथी मरतबा कन्हैया जी कहें—'ठाड़ रहो बजरदास कलमी की।' एक गाय वहीं ठहर जाए। राधा जी कुर्सी पर से उठकर कन्हैया जी के मुक़ाबिल हों और यह सवाल करें।

राधा—अस मईयों, अस मईयों अस कलेजा दैहो।

तसनीफ़े-राक़िम[6] मुनासिब[7] है। इस कलमे के साथ राधा जी कन्हैया जी के दोनों गालों पर हल्के-हल्के घूंसे लगाती जाएँ। फिर सवाल राधा का मशमूल।[8] सवाले अव्वल–

राधा—जयना के हेरे तेरे गवइय्यें चरावत हो महाराज राजन के राज अधिराज शिवप्रधान, वह मुरली जाये में छह राग छत्तीस रागिनियाँ बाजत हैं। वह मुरली क्या की, क्यों गवय्यें चरावत हो।

उस वक्त कन्हैया जी हाथ बांधकर गोद फैलाकर कहें।

कन्हैया—कान्हा असीस देत है। जुग जुग जियो आनन्द रहो राम दोहाई वह मुरली खोय गई।

राधा – राजन के राज महाराज अधिराज शिवप्रधान मैं तुमका खूब चीन्हत हूं कूवरी को दै आये हो।

कन्हैया—नहीं महारानी भगवान कसम खोय गई।

---

1. अनुसार, 2. पंक्ति, 3. कमर, 4. पहली, 5. सामने, 6. लेखक की कृति, 7. ठीक, 8. सम्मिलित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कन्हैया का खड़े होकर दोहरा पढ़ना और गाना। कन्हैया उसी वक्त वह दोहरा ज़बान पर लायें—

कन्हैया—मुरली हमारी खोय गई मथुरा वृन्दावन की रेत
ना मोहें सूझत और छोर न मोहे सूझत खेत।

दोहरा गाने के बाद कन्हैया जी लकड़ी कांधे पर रखकर ताल में सारी महफ़िल में तीन गर्दिश करें। चौथी गर्दिश में रामचीरा अर्ज़ करे—

रामचीरा—महाराज, बांसुरी का चोर एक लोधी है, उसको मैं पकड़ लाया हूं।

कन्हैया—हाज़िर कर।

जब वो सामने आये तो कन्हैया फरमाएँ।

कन्हैया—इसी ने हमारी मुरली चुराई है ?

रामचीरा—हाँ महाराज—

फिर कन्हैया जी तपस्या करें। राधा जी फ़ौरन बज़रूरत तपस्या कुर्सी पर से उठकर कन्हैया जी के गले से चिमट जायें। मनबाद कन्हैया जी राधा जी से कहें—

कन्हैया—राजन् की राज महारानी अधिरानी जुग जुग जियो आनन्द रहो कान्हा असीस देत हैं वो मुरली जिसे तुम चीन्हत थीं कि कुबरी को दै आया हूं—वह मिली।

राधा—महाराज किसने चुरायी थी।

कन्हैया—महारानी। यह लोधी का छोकरा जो खड़ा है—इसी दाढ़ीजार ने चुरायी थी।

राधा—महाराज ! इस मुए की नाक कटवा डालूं।

अलमुख्तसर[1] बामुजिब[2] हुक्म कन्हैया उसकी नाक तराश डाली गयी और राधा जी ने कहा—

राधा—अब मोर मन खुस और राजी भवा।

---

1. संक्षेप में, 2. अनुसार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहने को राधा जी खुश हो गयीं मगर बाक़ेयतन[1] सौतापे की झत[2] से कुवरी बहुत ख़लिश[3] रखती थी। ज़ाहिरा[4] कन्हैया जी उसके पास जाने से इन्कार करते थे मगर वाक़ेयतन कुवरी पर हज़ार जान से फ़रेफ्ता[5] थे।

खड़ा होना कन्हैया जी, राधा जी, सभी सखियों और रहसवालियों का दो सफ़ बनकर और अशार[6] आशिक़ाना पढ़ना।

कन्हैया जी राधा जी के मुक़ाबिल[7] खड़े हों और चार-चार सखियाँ दोनों तरफ़ मुक़ाबिल में हों। पहले कन्हैया जी यह मतला[8] पढ़ें और गाएँ और राधा जी की तरफ़ अर्थभाव बतायें—

मतला—सताया दिल न किसी का सताया जाएगा,
यह दिल जो रूठेगा क्योंकर मनाया जाएगा।

इस तख्ती पर रक्स करते जाएँ मफ़ाएलुन-फ़ायलतुन फिर मफ़ायलन-फ़ायलन[9]।

राधा जी—एक दिल हमने दिया,
तुमने वो वर्बाद किया।
एक तुमने दिया,
हमने खुदा को याद किया।

इस तख्ती पर राधा जी रक्स करें।

फ़ायलतन फ़ायलतन फ़ायलतन फ़ायलन[10]

सवाल और जवाब के बाद सब रहसवालियाँ-मय राधा-कन्हैया बैठ जाएँ। चूंकि राधा जी वेसबब अदावत[11] रक़ाबत[12] कुवड़ी से रखती थीं, वेतावाना[13] कन्हैया जी से यह सवाल करे—

राधा—महाराज रोज झगड़ा नांघते हो तुम जरूर कुवड़ी के पास जाया करते हो।

कन्हैया—भगवान कसम हम नाहीं जात।

---

1. वास्तव में, 2. गुस्सा, क्रोध, 3. जलना, 4. प्रत्यक्ष रूप में, 5. न्योछावर, 6. शेर का बहुवचन, 7. सामने, 8. पहला शेर, दो पक्तियों के दोहे को उर्दू के शेर कहते हैं, 9-10. उर्दू शायरी में पाईयां गिनने की व्याकरण, 11. दुश्मनी, 12. प्रेम में शत्रुता, 13—शीघ्रता से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधा—महाराज। पकड़ दूँ तो सही।

कन्हैया—कबहूं न पइयो।

उठ जाना कन्हैया का राधा के पास से आपस में शकरंजी जो वाक़ेय हुई, कन्हैया जी फौरन राधा के पास से उठकर कहने लगे।

कन्हैया—मुझे किसी काम की ज़रूरत लाहक़ है थोड़ी देर में आऊँगा।

राधा जी ने कन्हैया जी का रोकना मुनासिब न जाना मगर दिल में समझीं कुछ दाल में काला नज़र आता है यह तो तीरे-खुरदा[1] कमाने अबरू-ए-कुबड़ी[2] थे। फौरन उसके पास पहुंचे। इधर फरते-ताश्शुक़[3] में राधा जी ने यह ठुमरी शुरू की और अर्थ भाव बता-बताकर लय सुर में इस तरह गाई कि बहशीयाने-सहरा[4] और माहियाने-दरया[5] के दिल कबाब हुए और जिन व इन्स व देव व परी को पेच ओ ताब हुए।

आस्ताई—मोहन स्याम हमारा रे कूबरी ने जादू डाला रे।

अन्तरा—घूँघट खोलो मुख से बोलो अख्तर नजो निदा गुजारा रे।

गाने के गाद गमज़दा होकर बैठें। चारों सखियों से मुखातिब होकर कहा—

राधा—कोई ऐसी है जो हमरे कन्हैया को कुबरी के पास से पकड़ लाए?

एक-एक ने अर्ज़ की—

एक—राजन की राज महारानी अधिरानी मलीन न हो मोहसे कहो।

राधा जी ने हर एक को यही जवाब दिया—

राधा—तोह से न कहियूं बैठ जा।

बमुजिब इरशाद चारों सखियाँ बैठ गयीं। दोबारा राधा जी ने चारों सखियों से कहा—

राधा — तुम चारों जो मेरे पीछे पड़ी हो तुमसे हो सकता है कि कन्हैया जी को कुबरी के पास से पकड़ लाओ?

---

1. चोट खाए हुए, 2. कुबड़ी की कमान जैसी आंखों के, 3. इश्क़ के गुस्से, 4. रेगिस्तानी जानवर, 5. पानी के जानवर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस वक्त सब सखियाँ दस्त बदस्ता खड़ी हो जायें। ललिता आगे आए।

ललिता—परमेसुर तुम्हारा भला करे। अगर कन्हैया जी अकास पर होंगे वहाँ से भी ढूंढ लाऊँगी ?

साख—अगर धरती पर होंगे हाजिर करूँगी।

चैन—अगर जल में होंगे वहाँ से लाऊंगी।

लड़वा—अगर पवन में होंगे पैदा करूँगी।

फिर चारों सखियां कन्हैया जी की तलाश में निकलें और राधा जी को दुआएँ दे देकर और सलाम कर करके रवाना होंए। चारों उस वक्त कुबरी के मकान पर पहुंचीं जिस वक्त कन्हैया जी मख़मली स्थान पर बांसुरी होठों से लगाए कुबरी की गोद में पांव रखे हुए तकिया पहलू में लिए मुकुट उतारे हुए घुमटीवालियों का नाच देखते-देखते सो गए थे और कुबरी भी मुक्के लगाते लगाते पांव पर महाराज के ऊँघ गई थी। इस मुक़ाम पर घुमटीवालियां साड़ियां बांध-बांध के बंगाली ज़ेवर आरास्ता कर करके घुमटा नाचती जाएँ और तीन बार आमदोरफ्त करें और यह दादरा गाएँ—

आस्ताई—आजा निंदिया मोरे बलम को।

अन्तरा—दुख न हो सपने में 'अख्तर' मौला रखे तेरे धरम को।

और फिर यह ठुमरी अर्थ भाव करके गाएँ—

आस्ताई—धमक सुन नींद चौंक पड़ी रे।

अन्तरा—उचट गई नींद कौन आई रसिया।

इस असना[1] में कुबरी कहे—'घुमटीवालियों जाओ मेरे कान्हा की आंख लग गयी है।' यह सुनकर घुमटीवालियां चली जायें और कुबरी भी उसी तरह ऊँघ जाये। ये चारों सखियां कन्हैया जी को सोता हुआ देखकर आपस में एक-एक से कहें—

एक—ए गुईयां देखो कैसा पड़ा सोता है।

दूसरी—मुआ बेख़बर है।

1. बीच।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरी—ज़रा होश नहीं।

चौथी—बहुत ग़ाफ़िल है।

ललिता—तुम तीनों ठहरो, मैं उठाऊँगी।

साखा—तुम तीनों ठहरो मैं जगाऊँगी।

चैन—तुम तीनों ठहरो मैं शाना हिलाऊँगी।

लड़वा—तुम तीनों ठहरो मैं कान्हा जी के दोनों कान पकड़कर उठा बिठाऊँगी।

अलग़रज़ लड़वा सखी कन्हैया जी के दोनों कान पकड़कर उठा बिठाए। फ़ौरन कुबड़ी भी चौंक पड़े और दमे-सर्द भरकर कहे—

कुबड़ी—हे है लड़वा तूने मुझसे दगा की।

लड़वा—ये कलमा राधा जी के सामने कहना।

लड़वा सखी कन्हैया जी के दोनों कान पकड़े हुए मय कुबड़ी बहपित मजमुई राधा जी के सामने लाए।

राधा—क्यों जी तुम्हारी चोरी पकड़ी गई कि नहीं ? तुमको ढूंढकर पकड़ बुलवाया कि नहीं ?

कन्हैया—(हाथ बांधकर) हां महारानी चूक पड़ी, भूल हुई, मिल जाओ, यह तो मुरली की आवाज़ की आशिक़ थी।

राधा—मुरली बजाओ, मिल गई ?

कन्हैया—ने बांसुरी में ये बजाया—

आस्ताई—बजन लागी स्याम की बांसुरी रे।

अन्तरा—नदिया किनारे अख्तर बांसुरी बजावत
निकस जात जिया से सांस रे।

राधा—हम तुमको हिन्डोला झुलाकर फिर सुला दें।

कन्हैया—अच्छा महारानी, मेरी नींद भी अभी नहीं भरी थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब सब रहसवालियां और सखियां और राधा-कन्हैया खड़े हो जायें सफ़ बांधकर, पर दरम्याने सफ़ में कन्हैया जी हों और कन्हैया जी के मुक़ाबिल राधा जी एक लम्वी रंगीन पगड़ी की रस्सी बनाकर एक सिरा अपने दस्त रास्त में पकड़कर दूसरा सिरा कन्हैया जी के दाहिने हाथ में देकर सफ़ की पेशक़दमी पर रस्सी को खींचा करें और सफ़ के पिछले क़दम और पसरवी पर रस्सी को ढीला किया करें। रहसवालियाँ रूपक ताल नाचें और तीन मरतबा से कम आमदोरफ्त[1] न करें और यह सावन फ़क़ीर[2] का वनाया हुआ गाती जायें–

आस्ताई--सैयां दे झकोरा दे गयो ये रुत सावन वहार।
सीस घूम गयो झूले पर अख्तर पेंग बड़हार ॥

वेहमदोलिल्लाह दूसरा क़िस्सा भी राधा कन्हैया का तमाम हुआ। अगर शव-वेदारी[3] को दिल चाहे बाद इख्तेताम[4] इख़्तियार[5] वाक़ी है जिस सखी को मिज़ाज[6] चाहे तमाम[7] शब[8] बदल-वदल कर नाच-गाना मुलाहिज़ा[9] फ़रमाएँ और मुसविफ़[10] को बदुआए-ख़ैर[11] याद करें।

मतला—नविशता वे मानद सियाह बर सफेद।
नवीसींदाहरा नीस्त फ़रदा उमेद ॥

अल मतला कि ता० 1292 हिजरी मुक़ाम कलकत्ता मोहल्ला मटियाबुर्ज में ये दोनों क़िस्से अलग-अलग छत्तीस रहसों के तैयार और मुरत्तब हैं। अलवत्ता मुक़द्देमाते ऊला[12] और ज़ेवर में राक़िम से इस क़द्र मोहय्या न हो सका जो तकमील करता। ज़माने सलतनत और इसतेक़लाल[13] में सब कुछ खुदा ने अता किया था और अब भी उसी की ज़ात से उम्मीद है।

फ़क़त।

---

1. आना-जाना, 2. लेखक, 3. सारी रात जागने को, 4. समाप्ति पर, 5. अधिकार .6. मन, तबियत, 7. सारी, 8. देखें, 10. लेखक, 11. अच्छी दुआ, 12. उपरोक्त प्रस्तावना, 13. आराम के समय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पांचवां अध्याय

नक़ल

लखनऊ और अवध के नवाबी और शाही दौर की मिली-जुली संस्कृति, गंगा-जमुनी तहज़ीब में मनोरंजन का भी एक माहौल था। भांड़ और नक्क़ाल, भगतिय और बहरूपये उस समय के ख्याति-प्राप्त कलाकार थे। अवध के शाही दरबारों से इन कलाकारों को संरक्षण प्राप्त था।

आसिफ़ुद्दौला के समय से इन कलाओं को प्रोत्साहन मिला और वाजिद अली शाह के समय में ये कलाएँ अपनी चरम सीमा को पहुंच चुकी थीं। इन कलाओं में सबसे अधिक प्रचलित कला नक़ल और भड़ैती थी।

प्रस्तुत अध्याय में नौ फ़सलें अर्थात् भाग हैं। पहली फ़सल में भड़ैती और दूसरी तथा तीसरी में नक़लें हैं। लेखक ने इन सारी नक़लों का स्तर काफ़ी ऊंचा रखा है। इन सभी नक़लों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में लय-धुन के साथ गाने के लिए आस्ताई और अन्तरे मौजूद हैं। चौथी फ़सल में बंगाली भांडों की नक़लें हैं तथा पांचवीं में विभिन्न प्रकार की स्तरीय नक़लें दी गई हैं।

एक स्थान पर मुशायरे की नक़ल भी दी गयी है जो अत्यधिक साहित्यिक, उच्चस्तरीय तथा प्रस्तुति में दुर्लभप्राय है। इससे उस समय की नक़ल-कला के स्तर तथा साधारण आदमी की भी साहित्यिक समझ का अन्दाज़ा होता है।

प्रस्तुत की गई नक़लें उस समय की लखनवी तहज़ीब का आइना हैं। इसमें मौलवी की भी है, ब्राह्मण का भी, नाई की भी है, और मेहतर-मेहतरानी की भी। हिन्दी भी है, उर्दू भी और बंगाली व फ़ारसी भी।

सातवीं फ़सल में कुछ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक नक़लें मिलती हैं तो आठवीं तथा नवीं फ़सल में बच्चों के लिये पहेलियों, हास्य-व्यंग्य और बच्चों के कुछ खेल भी दिये हुए हैं जो आज भी लखनऊ के पुराने घरानों में बच्चों में प्रचलित हैं। इस अध्याय की छठी फ़सल अपना एक विशेष महत्व रखती है। कलकत्ते में रहते-रहते लेखक ने कुछ घटनाएँ अपनी आंखों से देखी थीं ऐसी घटनाएँ जो प्रायः होती रहती हैं। उदाहरणतः किसी स्त्री का किसी जानवर से सम्बंध, किसी बूढ़े की अतृप्त यौन पिपासा आदि। इन घटनाओं को लेखक ने ज्यों का त्यों लिख दिया है। इससे लेखक की सत्यता का पता चलता है पर अश्लील होने के कारण उसे इस पुस्तक में सम्मिलित नहीं किया जा सकता। अतः इन्हें छोड़ दिया गया है।

लेखक ने अपने पूरे जीवन में लगभग सौ पुस्तकें लिखीं जिनमें से कुछ लखनऊ में और कुछ कलकत्ते में हैं। इनमें से छियालीस पुस्तकों की सूची इस अध्याय में प्रस्तुत की गयी है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाब पांचवां यानी अध्याय पांच

भड़ैंती और नक़लें मज़हक़ में

भड़ैंती और मज़हक़ नक़लों के सिलसिले के इस बाक में नौ फ़सलें हैं।

जानना चाहिए कि मूजिद[1] भड़ैंती और जुमला-हिकायात[2] और लतायफ़[3] और नक़लों के अमीर खुसरो देहलवी हैं।[4] यह शख्स अक्सर फ़ुनून[5] में ऐसी महरते-कामिल[6] रखता था कि हर साहबे-फन उसको हज़रत अमीर खुसरो कहके याद किया करता है। फ़ाज़िल[7] बेबदल[8] नस्सार[9] खुश-अमल[10] निज़ाम[11] ऐसा कि कलाम उसका तश्त-अजबाम[12] है। फने-मौसीकी[13] में वो-वो ईजाद किए कि चतुरंग, त्रिखट, तराना के बदले जो बतरीक़[14] हिन्दवी मुश्तमिल[15] हैं, क़ौल-क़बाना नक्शेगुल[16] बनाए। सभी को निहायत[17] पसंद आए। तालों में हिन्दी पोथियों की तालों में भी दस्तअंदाजी[18] की। जल्द तिताला, धीमा तिताला, चौताला, आड़ा चौताला, सूल-फ़ाख्ता, रूपक, ब्रह्मलक्ष्मी, तीबरा, पटताल, कोकिला के एवज़ में सवारी, झूमरी, फ़िरोदस्त, खम्सा, दोबहर ईजाद की। अलहक़[19] एक-एक ज़रब और उसके खालियों और झूलों में मिसरी की डलियां कूट-कूट कर भर-भर दीं। ध्रुवपदों के बदले ख्यालों की बिना[20] डाली। शौक़ीनों की उमंग तानों में खूब अच्छी तरह से निकाली। अल्लाहुम्मा-अग़फ़रना चुनांचे[21] भांड और नक्काल और भगतिए भी उन्हीं का दम भरते हैं। हर महफ़िल और मजलिस में बेनन्देह[22] और शोनन्देह[23] को महज़ूज़[24] करते हैं। सिलसिला भड़ैंती का यही है। खुसरो मज़कूर[25] अज-बसके[26] मर्देज़रीफ़[27] था। शहज़ादगाने देहली कमसिन जो दाखिले मकतब[28] न होते थे अक्सर उनकी छोछगिरी[29] भी उनके हवाले रहती थी और शहज़ादे जब कोई ज़िद या हठ करते थे ला-मुहाला[30] ये उनके बहलाने की तरफ़ मुतवज्जेह[31] रहा करते थे, बल्कि ख़ालिकेबारी[32] एक

---

1. अन्वेषक पितामह, 2. कुल निर्देश, 3. हास्य, 4. अमीर खुसरो के लिए लेखक द्वारा कही गई बातें सुनी-सुनाई मालूम होती हैं, 5. कलाओं, 6. सम्पूर्ण महारथ, 7. विद्वान्, 8 अद्वितीय, 9. गद्य कहनेवाला, 10. सुकर्मी, 11. प्रबन्ध जात करने का अन्दाज़, 12. मोहक, 13. संगीतकला, 14. अनुसार, 15. आधारित, 16. नाम गायकी, 17. अत्यधिक, 18. हाथ चलाना, नई खोज, 19. वास्तव में, 20. बुनियाद, 21. इसलिये, 22. हर जन, 23. सरकार, 24. प्रसन्न, 25. स्वयं, 26. हालांकि, 27. अच्छा मानव, 28. स्कूल, 29. बहलाना, 30. मजबूर होकर, 31. ध्यान देते, 32. अमीर खुसरो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शहज़ादे को बहलाते-बहलाते मौंजू[1] कर दें और अक्सर उनके सामने आस्तीनें चढ़ाकर और उतारकर गाल फुलाकर अल्फ़ाज़हाम-मामूली[2] से, जो भड़ैती में बयान करूँगा, मस्खरापन कर-करके बहलाते थे। उसका इस्तेमाल जो औरों ने किया, निहायत मज़हक मालूम हुआ, बल्कि वो फिरका भांड और नक़्क़ाल मशहूर हुआ। हरचन्द इस फ़िरके को सिवाए नक्ल को अस्ल करके दिखाने के, लय-सुर में मुतलक तमीज़ नहीं होती थी। मगर अलबत्ता जो काम उनका है यानी नकलनुमा-लय वह उन्हीं पर ख़त्म है और इस फ़िरके को राक़िम[3] ने बचश्मेखुद[4] देखा कि ऐसे पाबन्दे सौम-ओ-सलात होते हैं कि सुबहान-अल्लाह। हज़ार रुपये की थैली सामने रख़ दो और फ़रमाइश करो कि नमाज़ फ़ौत होने दो अगर नक़्ल किए जाओगे तो हज़ार रुपया यह तुम्हारा कभी क़बूल न करेंगे पर नमाज़ वक्त पर बजा लायेंगे। बस दिल्लगी के वास्ते मैंने भी दो भड़ैतियाँ और चन्द नक़्लें उन लोगों की दर्जे किताब कीं। बामुजिब-इसके[5] कि 'इलमशय बा-अज-जहलेशम'[6] मशहूर है।

फसल पहली भड़ैतियों में

पहली भड़ैती

पगड़ी हाथ की लिपटी हुई सर पर, दुपट्टा कमर में, अंगरखा पहने हुए ढीले आस्तीनों का, नक़्क़ाल आगे आए और कहे चुप। बाद उसके आस्तीनें अंगरखे की दोनों हाथों से समेटता हुआ और चढ़ाता हुआ और उतारता हुआ और दोनों पांव आगे-पीछे धरता हुआ इस तरह कि सुकून न हो यह अल्फ़ाज़ कहे कि—

छोटी सी ढोलकी और छोटा सा भांड़,
फूट गयी ढोलकी और छूट गया सांड़।
आही रे, आही रे, आही रे, आही रे।

दूसरी भड़ैती

सारी सूरत बशकले अव्वल बनाकर यह अल्फ़ाज़ कहे—

---

1. खामोश, 2. आम शब्दों से, 3. लेखक, 4. अपनी आँखों से, 5. इसके अनुसार, 6. यह विषय एक अशिक्षित विषय सा प्रसिद्ध है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहले थी मैं भोली-भाली काढ़ती कशीदा,
कोठे पर से कूद पड़ी तू देख मेरा दीदा।

इसे कहता हुआ मुतवातिर[1] दाहिना पांव आगे बढ़ाता जाए और बायां पांव पीछे हटाता जाए और यूँ ही ताखत्मे-अल्फ़ाज़[2] मुतहर्रिक[3] रहे।

जब लब्ज़ 'तू देख मेरा दीदा' आए उस वक्त वायां हाथ वायें पहलू[5] पर रखकर दाहिने हाथ की कलमें[4] की उँगली से दाहिनी आँख का पपोटा नीचे घसीटे और दिखावे। जब यह अल्फ़ाज़ कह चुके तब दाहिनी जानिब[6] आही रे, आही रे, और फिर वायीं जानिब[7] आही रे, आही रे—सम से सम तक और सम पर आए।

फसल दूसरी

घोड़े की पाँच नक़लें इसमें बयान की जाती हैं।

पहली नक़ल

नक्क़ाल पहले आकर हिनहिनाए 'हें हें हें'। फिर घोड़ा हाथ का बनाए इस तौर पे कि बाएँ हाथ की उँगली पर दाहिने हाथ की दो उँगलियों को बतौर टांगों के रखकर यह कहे—'हें, हें, हें' और साथवाले जवाब दें 'वाह, वाह। घोड़े हैं, घोड़े हैं, घोड़े हैं।' बाद इसके कहे मेरे घोड़े की हालत कुछ न पूछो। जमुना जी के किनारे थोड़ी रेत खा गया है। चौबे ही चौबे लीद करता है। साथ वाले कहें—वाह, वाह। फिर कहे—एक दिन बाज़ार में गया पूड़े खा गया। लौंडे ही लौंडे लीद करता है। साथ वाले कहें सुब्हान अल्लाह। फिर हिनहिनाते हुए साज़िन्दों की जानिब हट जाए और कहे, नाकन हैं, बछेरे हैं और अपने बाएँ चूतड़ पर बाएँ हाथ से कोड़ा भी मारता जाए। साथ ही शाबाशी भी देता जाए।

दूसरी नक़ल

हें हें हें मेरा घोड़ा तो मली दली खली नली सड़ी गली हो गया है। मैं क्या बताऊँ, क्या कुदाऊँ और जब कूदेगा तब उसकी खामोशियाँ निकलेंगी। साथ वाले कहें—'माशा अल्लाह!'

1. लगातार, 2. शब्द समाप्त होने तक, 3. हरकत करता रहे, 4. कमर, 5. तर्जनी, 6-7. ओर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरी नक़ल

हें, हें, हें, बाज शख्सों को एक घोड़ा न मिला। एक टटवानी[1] लेकर दाग़ करवाए। रिसाला[2] जब तैयार हुआ तो सबसे कहने लगे—भाइयों ज़रा ठहरो। मुझे भी आ लेने दो। औरों ने कहा—होश में आओ, कूड़ा करो, परे में मिलो, चार कदम चल के पांव के नीचे आया रोड़ा, तले सवार ऊपर घोड़ा। साथ वाले कहें—चश्मेबद्दूर।

चौथी नक़ल

एक लम्बे बदसूरत आदमी का मुंह छुपाके कान पकड़ के महफ़िल में लाए। वह बदसूरत आह-आह-आह किए जाए और कहे चिल्ला के कि पाजी क्या करता है—इतनी ज़ोर से तू मेरा कान न पकड़। नक़ल करता है या मुझे बूचा कर डालेगा। फिर कान पकड़ने वाला कहे कि मुझे तो घोड़ा न मिला। चार आने महीने की मामा सवारी को नौकर रखे हैं। साथ वाले कहें—'लाहौल विला कुवत इल्ला-बिल्ला।'

पाँचवीं नक़ल

हें, हें, हें मेरे घोड़े के हालात कुछ न पूछो। लहरिया की ज़ीन बांधता हूँ। मन भर दाना तुला हुआ रोज़ देता हूँ। काम एक नहीं उठाता। साथ वाले कहें—अस्तग़फ़िर उल्लाह।

फसल तीसरी

इसमें आतिशबाज़ी की चार नक़लें हैं।

पहली नक़ल

नाक़िल अव्वल कहे कि लाखों रुपया आतिशबाज़ी में फूंक दिया, खुदा की राह में एक कौड़ी न दी। फिर बायाँ हाथ मुंह पर रखकर बतौर चरखी छूटने की आवाज़ होठों से निकाले और दाहिने हाथ को बढ़ाकर चरखी की तरह घुमाता जाए। फिर दाहिना हाथ ऊँचा करके और उचक कर कहे कि वह गई। साथ वाले कहें कि क्या अच्छा वज़न था।

---

1. टट्टू 2. फौज।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरी नक़ल

एक नायिका की नोची[1] को आतिशबाज़ी मयस्सर न आई। उसने बाएँ हाथ की मुट्ठी बांधकर दाहिने हाथ से ठोंकी और चित लेटकर दोनों टांगें उठाकर और चीरकर बोली कि लोकलहिया फट गई। साथ वाले कहें—'तौबा, तौबा।'

तीसरी नक़ल

सामने आकर कहे कि यह तो पट्टेबाज़ चरखी है। यह कहकर दोनों हाथों को चरखी की तरह चार तरफ़ हिलाकर बाएँ हाथ को होठों से मिलाकर चरखी छोड़ने की आवाज़ मिलाकर कहे कि 'वो गई' और आसमान की तरफ़ दाहिना हाथ ऊँचा कर दे। साथ वाले कहें 'क्या खूब भरी थी।'

चौथी नक़ल

गोल फूलों का कपड़ा लेकर दूसरे पांव के नीचे दबाकर और दूसरे दोनों हाथों से सर से बुलंद चौड़ा करके कहे कि यह तो दाऊदी की टट्टी है।

फसल चौथी

इसमें पाँच नक़लें बंगाल के भांड़ों की बयान की जाती हैं।

पहली नक़ल

बंगाल के भिश्ती की सूरत बनकर कहे—'बंगाल के भिश्ती इस तरह से छिड़काव करते हैं'। साथ वाले कहें—किस तरह। उस वक्त यह गाए—

आस्ताई—वड़ो मज़ेदार यह दरियाव मीठा पानी लगे।
अंतरा—कोई रसिया हो तो रस मिला ले, जोग मिला ले
जोगी ऐसे को वैसे ही मिले, बूढ़े को जवां मिले॥

1. तवायफ़।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरी नक़ल

बंगाल के मेहतर की सूरत बनकर जारोब के बदले दाहिने हाथ में रूमाल कपड़े का बल दिया हुआ लेकर हिलाता हुआ ज़मीन झाड़ता हुआ आए और कहे कि 'बंगाल के ख़ाकरोब इस तरह झाड़ू देते हैं और काम करते हैं।' साथ वाले कहें—किस तरह। उस वक्त सफ़ाई करता जाए यानी जारोबकुशी रूमाल से करता जाए। लय-सुर में यह गाता जाए—

आस्ताई—बाबू कलवा-कलवा को पुकारे अरे हो जमादार।
अंतरा—मेज लगत है आओ 'अख़्तर' पिया चलो खासा मान कहार।

तीसरी नक़ल

बेदिनी की सूरत बने वो यह है कि घूंघट निकाल कर साड़ी बाँध के रूमाल को चौतहा करके सर पर रख के लय और ताल में मटकती हुई आए और कहे कि 'बंगालन बेदिनी इस तरह इलाज को निकलती है।' साथ वाले कहें—'किस तरह।' उस वक्त यह गाए—

आस्ताई—आहा मोरी आछी बेदिनी रूपसी,
दांतमुशी मुखहशी प्रानकरी खुशी।
अंतरा—कीकर बोतार रोपर छोटा बोक सिरोतार कम्बल मोटा माय दो ठौर भद्र कड़ो धाड़ीतै मुशी।

साथ वाले पूछें—'तेरे पास दवा है।'
बेदिनी जवाब दे—'हाँ, बड़ा-बड़ा इलाज है।'
साथ वाले कहें—'तेरे पास गोलियां भी हैं।'
बेदिनी कहे—'हाँ हैं।'
साथ वाले कहें—'कितनी मोल की गोलियाँ बेचती हो।'
बेदिनी कहे—'सवा लाख रुपए की।'
साथ वाले कहें—'हम नहीं लेंगे। जाओ और जगह बेचो।'

चौथी नक़ल

खेमटीवाली की सूरत बने। वह यह है कि साड़ी बाँधकर बंगाली जेवर सब आरास्ता करे और कहे कि बंगाली खेमटी वाली इस तरह नाचती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ वाले कहें—'किस तरह ?' उस वक्त लय सुर में नाचती जाए और गाए—

आस्ताई—और जात नाशी हेता नारी अमी पक्की अवलाता कलोनारी ।

अंतरा—यक लो गोहरे एको की अभी सुनकोम सन्नोद यकी अमी ऐके है हुप्पो की वनचारी ।

पांचवीं नक़ल

बंगालिन ग्वालिन की सूरत बने । साड़ी बाँधे, घूंघट निकाले और दूध की मटकी दाहिने बग़ल में ले ।

साथ वाले कहें—'क्या खूब ग्वालन है ।'
ग्वालन कहे—'बंगाल की ग्वालन इस तरह नाच-नाच के और गा के दूध बेचती है ।'
साथ वाले कहें—'किस तरह ?'
उस वक्त यह गाए—

आस्ताई—दूध पूत नारी को देते बने को ।

अंतरा— भालो चौपराल तुम्हार भालो नज़रिया
"अख्तर" अमर माई को दे दे बने को ।

फ़सल पांचवीं

इसमें मुत-फ़रिक़ात[1] नक़लें हैं ।

पहली नक़ल

इस नक़ल में एक दूसरे से आपस में मुख़ातिब हो-होकर कहा करें—साहबे-नज्ज़ारा[2] की तरफ़ आंखें मिलाकर न कहें—'सलाम आलेकुम ।'

दूसरा कहे--वालेकुम-अस-सलाम ।

---

1. विभिन्न, 2. दर्शक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने-अपने अंगरखे या दुपट्टे के कोने चुटकियों में दबा-दबाकर ऊँचा करें और कहें—मेरे पास तो क़िबला[1] एक तोती है। सुनिए—कहती है—नबी जी भेजो।

दूसरा बोले—हाँ साहब, हमने तो एक बया पाली है। दूर की कौड़ी लाती है—कहिए आपने क्या पाला है।

तीसरा बोले—ऐ क़िबला आप क्या पूछते हैं ? मेरे पास तो एक गंजी कलचड़ी है। चुरुक-चुरुक बोलती है। मगर आप बताइए आपको किस जानवर का शौक़ है।

चौथा बोले—मीर साहब मैंने तो मुद्दत से इस शौक़ को तर्क[2] किया मगर बिलफ़ेल[3] एक लाल है, बहुत पुराना अभी कुछ बोलता नहीं। जब जी चाहता है, कहता है सुम्मुन-बुकमुन, उमयुन-फहुम, लायरजऊन।

पांचवां बोले—क़िबला मेरे पास तो बुलबुल है। उसका दम सुन लीजिए क्या कहता है। और ये अल्फ़ाज कहे—जे जेन्जे-छछ-छछ-छछ-छछ।

छठा बोले— क़िबला मेरे पास तो बुलबुल के तले का पिद्दा है। नबी जी भेजो कहता है।

सातवां शख्स एक सफ़ेद सन सर घुटे हुए आदमी को पकड़कर लाए। साथ वाले कहें—अरे भाई यह क्या है। वो कहे—क़िबला आपको मालूम नहीं। सब साहबों ने जानवरों का शौक़ किया है : मैंने भी एक काकातुआ पाला है।

बूढ़ा आदमी उसके कलाम के हमराह सर हिलाता रहे। फिर काकातुआ से पूछे—मलीदा खाओगे।

वह गर्दन हिलाकर कहे कि हाँ।
फिर पूछे—पुलाव खाओगे।
वो कहे—हाँ
फिर पूछे—अरे भाई अखाड़े में भी इज्ज़त रखोगे।
कहे—नहीं।

---

1. हुज़ूर, 2. छोड़ दिया, 3. आजकल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ वाले यह सुनकर बराबर ठट्ठा मारें और काह-काह करें। दफ्तन[1] सफ़ेद रेस वाला भी दोनों हाथों को फैलाकर और पालने वाले की तरफ़ मुतव्वजेह होकर कहे—क़ाह-क़ाह-क़ाह जोर से।

दूसरी नक़ल—तीन खुदपसंदों[2] की

तीन चीज़ें इत्तफ़ाक़ से गिर्ला। एक ने अंगूठी पहिनी, दूसरे ने टोपी पाई, तीसरे ने मिस्सी लगाई तीनों को मंजूर हुआ कि अपनी-अपनी चीज़ों को ज़ाहिर करना चाहिए—अंगूठी वाला हाथ ऊँचा करके और छंगुलिया अलग करके कहे—क्यों किवला इतना बड़ा बच्चा बकरी का कितने को आता होगा। मिस्सी वाला जवाब दे—कोई तीस को-इकत्तिस को-तैंतीस को छत्तिस को-सैंतिस को-अड़तीस को-चालीस को-तैंतालिस को-छयालिस को-अड़तालिस को-इन्तहा को और टोपी वाला गर्दन को बार-बार हिलाकर कहे—दुरूस्त है—बजा है।

तीसरी नक़ल—खुदावंद[3] और मुसाहिब[4] की

मालिक और मुसाहिब दोनों एक दिन अपने जलसे में बैठे हुए थे। मुसाहिब के मुंह से यह कलमा[5] निकला—कि जुमला[6] तरकारियों में बैगन को खुदा ने क्या रुतबा[7] अता किया है।

यह एक टांग का तीतर ख़ल्क[8] हुआ है। क्या गरीब नवाज़ तरकारी है कि इफ़रात[9] से सबको पहुंचती है और बहुत मजे की पकती है। मियां ने जवाब दिया—यह तो सब सच है। मगर वादी अज़हद[10] है। पानी बहुत पिलाता है और साथ ही मुसाहिब ने दोनों हाथ बांधकर अर्ज़ की, इसी वास्ते मर्द आदमी नहीं खाते हैं। जब मालिक खुश हुए तो कहने लगे—सुनो भाई, मेरे बावर्चीखाने में अरहर की दाल ऐसी खूब पकती है कि दुनिया भर में ऐसी नहीं पकती। खाओ तो तुमको भिजवाऊँ। मुसाहिब उठकर आदाब बजा लाया और अर्ज़ की—जहेनसीब। चुनांचे एक प्याला अरहर की दाल का ख़ास दस्तरख्वान पर से उनको इनायत हुआ। वह ले गए अपने घर में। दूसरे दिन जो हाज़िर हुए, मालिक ने पूछा—खाँ साहब दाल खायी थी। कुछ मज़े की थी। मुसाहिब ने हाथ बांधकर अर्ज़ की—अपनी तकलीफ़ तो यह है कि उस दाल

---

1. अचानक, 2. अपने आप में प्रसन्न रहने वाले, 3. मालिक-सरकार, 4. दोस्त जैसा सेवक, 5. वाक्य, 6. कुल, 7. आकर्षण-पद, 8. पैदा, 9. बहुतायत, 10. बहुत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का एक दाना दस्तरख्वान के नीचे पड़ा रह गया था। एक चिड़िया ने ऊपर से उतरकर फ़ौरन उसको खा लिया। उसी वक्त सर-ब-मुहर मेरे सामने उसे बैठ के नाक लगा के जो सूंघता हूं तो प्याज़ के बघार की बू उसमें मौजूद थी। साथ वाले कहें—मुसाहिब हो तो ऐसा हो।

चौथी नक़ल—लौंडी बीबी की

असल की नक़ल बयान करता हूं। कान लगाकर सुनो। एक मियां-बीवी थे। एक लौंडी थी। मियां-बीवी का प्यार-अख़लास देखकर लौंडी का भी जी चाहा करता था। एक रोज़ मियां-बीवी दोनों किसी की शादी में मेहमान गए। घर ख़ाली रहा। लौंडी को और कोई तो न मिला। अपनी चदरिया बेरी के पेड़ पर डालकर और उसके कांटों में उलझाकर यह गाती थी। इस प्रकार अपने दिल का हौंसला निकालती थी—

आस्ताई—वाह जी वाह यह ठट्ठा नहीं अच्छा।
राह चलतों का दामन पकड़ लेते हो।

अंतरा—जाने नहीं देते हो मुझको बाहर।
हाथों से नाहक़ जकड़ लेते हो।

पांचवीं नक़ल—चांद और मुसाफिर की

इस नक़ल में एक शख्स[1] अमीर बने और सब नौकर बनें। अमीर नौकर से पूछे आज कौन सी तारीख़ है। नौकर हाथ बांधकर अर्ज़ करे—आज उन्तीसवीं तारीख़ माहे मुबारक रमज़ान की है। यह सुनकर हाकिम कहे—जल्द सांड़नी-सवारों को भेजो और सही ख़बर मंगवाओ कि आज चांद है या नहीं। तो हम कल ईद करें। मुलाजिमों ने बमुजिब-इरशादेआला[2] जल्दतर[3] साँड़नी सवार को रवाना किया। सांड़नी सवार को राह में एक गरीब मुसाफ़िर मिला। यहाँ पर मुसाफ़िर बनना चाहिए इस तरह से कि हाथ में लाठी, पीठ पर गठरी। साँडनी सवार मुसाफ़िर से पूछे कि मियाँ मुसाफ़िर तुमने कहीं चांद देखा है। मुसाफ़िर जवाब दे कि हाँ जमना जी के किनारे पीपल के पत्तों की आड़ में झलकता देखा है। साँड़नी सवार उसको ले आए और हाकिमों के मुलाज़िमों से अर्ज़ करे। मुलाज़िम मुसाफ़िर को ख़िदमतें

---

1. व्यक्ति, 2. हुज़ूर के हुक्म के अनुसार, 3. जल्दी से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाकिम में गवाही के वास्ते हाज़िर करें। हाकिम बहुत खुश हो और हुक्म दे कि इसको काज़ी साहब के पास ले जाओ और गवाही दिलवाओ। मुलाज़िम मुसाफ़िर को काज़ी साहब के पास लायें।

तब काज़ी साहब कहें कि इसको मुफ्ती साहब के पास ले जाओ। यहाँ पर काज़ी साहब की शक्ल बनाना चाहिए। अम्मामा[1] सर पर और अबा[2] पहने हुए, दाढ़ी बढ़ी। जब मुसाफ़िर को मुफ्ती[3] साहब के पास ले चलें, उस वक्त मुसाफ़िर इन्कार करने लगे और बैठ जाए और मचल जाए और जाने में बहुत हुज्जत करे और बमुश्किल-तमाम[4] मुफ्ती साहब तक पहुंचे। वो कहें कि उसको बड़ी अदालत में ले जाकर गवाही दिलवाओ। यहाँ पर पहले तरह से मुफ्ती साहब की शक्ल बनाना चाहिए, उस वक्त मुसाफ़िर चिल्लाकर रोने लगे और बहुत बेहाल हो और इज़तराब[5] करे और कहे कि मैं मुसाफ़िर ग़रीब किस मुसीबत में पड़ा। जब ज़बर्दस्ती बड़ी अदालत में पहुंचे, तो बड़ी अदालत का हाकिम कहे कि इसको छोटी अदालत में ले जाओ। यहाँ पर बड़ी अदालत के हाकिम की शक्ल मिस्ल अशकालऊला[6] बनाए। उस वक्त मुसाफ़िर कशां-कशां[7] छोटी अदालत में जाए। आख़िरकार कहे कि हाँ चांद तो देखा है। ईद करने न करने का तुमको एख्तियार[8] है। खुदा की मार आज से जो कभी चांद देखूं। चांद ने जान लेने में कुछ बाक़ी नहीं रखा। हाय-हाय मर गया। बाद फिराग गवाही मुसाफ़िर बेचारा तमाम दिन का रोज़ेदार बे-आबोदाना[9] मशक्क़त[10] और दिक़्क़त[11] उठाए हुए राह में एक पुरानी टूटी मस्जिद में जाकर लाठी पहलू में रखकर गठरी सर के नीचे बेख़बर सो गया। सुबह को नमाज़ी जो मस्जिद में जमा हुए मुसाफ़िर का शाना पकड़कर हिलाया। क़ायदा है कि जिस आन में इन्सान सो जाता है वही आन उसको ख्वाब में भी नज़र आती है। यह तो चांद की रूबकारियों में मुसीबत उठा चुका था। ख्वाब में भी वही बर्राने[12] लगा। जब नमाज़ियों ने शाना हिलाया तो मुसाफ़िर ने करवट ली और कहा—चाँद काज़ी के यहाँ। नमाज़ियों ने कहा—सुब्हान-अल्लाह। दूसरे नमाज़ी ने दूसरा शाना हिलाया और जगाया। उसने भी दूसरी करवट ली और कहा—चाँद मुफ्ती के यहाँ। नमाज़ियों ने कहा—माशाअल्लाह। तीसरे नमाज़ी ने जोर से झिझोंड़ा और कहा—ऐ-बंदा-ए-खुदा बता तू कौन है। मुसाफ़िर ने भी अँगड़ाई लेकर पीठ खुजाकर

1. पगड़ी, 2. चोग़ा, 3. मौलवी बड़े, 4. बहुत मुश्किल से, 5. आनाकानी, 6. ऊपर बताई गई शक्लों के अनुसार, 7. धीरे-धीरे, 8. अधिकार, 9. बिना खाये पिये, 10. मेहनत, 11. परेशानी, 12. चिल्लाने।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरी करवट बदली और कहा कि चाँद मामू के यहाँ। नमाज़ियों ने कहा—अज़तग़ा-फ़िर उल्ला, भाइयो ! यह कोई भुतहा है या शहीद है। कौन है ? चौथा नमाज़ी बढ़ा और टाँग हिलाकर कहा—ऐ मुसलमान उठ। लाहौल पढ़। मुसाफ़िर ने फिर चौथा पहलू पकड़कर कहा—चाँद हाकिम के वहां। सभी नमाज़ियों ने कहा—तौबा-तौबा। पांचवें नमाज़ी ने कहा—वक़्तेनमाज़[1] तंग[2] हुआ जाता है। ऐ अज़ीज, होशियार हो। उसने जवाब दिया—चाँद बड़ी अदालत में। सब नमाज़ियों ने कहा—खैरतद—दुनिया-वलआख़िरह[3]। छठा नमाज़ी आगे बढ़ा और कहा—तुम सबके सब चुप रहो। मैं इसको जगाता हूं। यह कहकर दोनों हाथों से हिलाया। मुसाफ़िर ने करवट लेकर कहा — चांद छोटी अदालत में। अलमुख़्तसर[4], सब नमाज़ियों ने दफ्तन हाथों-हाथ उसे खड़ा कर दिया। उस वक्त मुसाफ़िर परेशान होकर जागे, डरता हुआ घिघ्घी बँधी हुई और जल्दी-जल्दी अपनी गठरी और लाठी संभालकर कहे कि अब से तमाम ज़िंदगी चाँद न देखूंगा। एक चांद देखकर जान धड़के में पड़ गयी। दोबारा तो जान काहे को रहेगी।

छठी नक़ल—बंद राग की

इस नक़ल में एक शख्स[5] ठाकुर बने और दूसरा नौकर रामचीरा नाम। एक ठाकुर थे उनका एक नौकर था रामचीरा नाम। महीनों गुज़र गए थे कि रामचीरा तनख्वाह से बेन-सीब था। इस सबब[6] से दिल में अदावत रखता था। एक दिन का ज़िक्र है कि महाराज ने रामचीरा से कहा—अरे रामचीरा। मोर मन फगवा सुनै को चहत है। राग ला दे। राम-चीरा कहे—बहुत खूब महाराज। मै बंद राग आपको सुनाऊँगा। आप बहुत खुश होंगे और तमाम ज़िंदगी याद रखेंगे। यह कहके रामचीरा चला और बाज़ार से एक कोरा घड़ा मोल ले के एक मोलसरी के दरख्त पर चढ़ गया। उस दरख्त पर भिड़ों का छत्ता था। उसे नोच कर तमाम छत्ता घड़े के अन्दर भर लिया और घड़े का मुंह कपड़े से बंद करके महाराज के मकान की कोठरी के अंदर धर दिया। महाराज से कहा कि बंद राग लाया हूं मैं। मुलाहिज़ा कीजिए। उस सामने वाली कोठरी में धर आया हूं। महाराज तो मुश्ताक़[7] ही थे। सुनते ही

---

1. नमाज़ के वक्त, 2. रूप, 3. दुनिया और उसके बाद को याद कर, 4. आखिरकार, 5. व्यक्ति, 6. कारण, 7. शौक़ीन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मारे खुशी के अंदर गए और रामचीरा ने दरवाज़े की बाहर की कुंडी लगा दी। महाराज ने उकड़ूं बैठकर ज़रा घड़े को हिलाया। उसके अंदर से भनभनाहट की आवाज़ इस तरह आई—इस मुक़ाम पर तीन चार सुरीले आदमी लय-सुर में पहली मर्तबा दाहिनी जानिब मुँह फिरा-फिरा कर नाक में यूं कहें।

ए भन भन भन भन, भन भन भन भन भन भन। फिर बायीं तरफ़—ऐ भन भन भन भन भन भन भन भन भन भन।

बीस दफ़ा जब हुआ तो महाराज बहुत खुश हुए। रामचीरा से कहा—भई नेक राग लाया है। वो बोला कि—आप ही अकेले सुनिए। हमारी मजाल नहीं और किसी की ताक़त नहीं कि कोई सुन सके। ज़रा और ज़ोर से हिलाइए। जब महाराज ने और ज़ोर से हिलाया तो और ज्यादा आवाज़ हुयी। महाराज बहुत खुश हुए और फिर दिल में कहा कि बंद में ऐसी आवाज़ आती है। अगर खोल दूं तो इससे भी ज्यादा अच्छी सदा आएगी। फर्तेखुशी[1] में जल्दी से घड़े के मुंह पर से कपड़ा उठाया। कपड़ा उठाना और भिड़ों[2] का चिमट जाना। महाराज के तमाम बदन में भिड़ें चिमट गईं। महाराज का यह हाल हुआ कि दौड़े-दौड़े फिरते थे। कपड़े नोच के और फाड़ के फेंक दिए। तमाम बदन को कभी खड़े-खड़े पीटते थे, कभी बैठकर, कभी लेटकर, एक जा पर क़रार न था। अकेला मकान, बाहर से कुंडी, भागने की और किसी से दवा तलब करने की जगह नहीं। मुंह से ये कहते जाते थे— इस फ़िक़रे को चाहिए जो महाराज का नाक़िल हो, वह खूब ताल-सुर में कहता जाए और अपने को पीटता जाए और लेट जाए और उछलता जाए। जहाँ तक हो सके फर्तेबेताबी[3] और इज़्तराब[4] व बेकरारी ताल-सुर में दिखाए—यह फ़िक़रा है—

फाग नहीं बर रहे।

अलमुख्तसर[5] बड़ी देर के बाद महाराज की तबियत ठहरे। सूज-फूल के कुप्पा हो गए।

नतीजा इस नक़ल का यही है—साथवाले कहें कि बेदिल नौकर भी बहुत बुरा होता है।

सातवीं नक़ल—कबूतर उड़ाने की

एक शख्स नक्क़ाल हमराहियों से आगे बढ़े और कहे कि एक बांका इस तरह कबूतर

1. प्रसन्न, उत्सुकता, 2. मधुमक्खी, 3. व्याकुलता, 4. बेचैनी, 5. संक्षेप में।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उड़ाता है, अगरवाल बनिया कबूतर इस तरह उड़ाता है, और जनाना कबूतर इस तरह उड़ाता है। साथ वाले कहें—अजी खाँ साहब, सुबह का वक्त ठंडी हवा है। एक गोल उड़ा लीजिए। खाँ साहब जवाब दें—बहुत अच्छा उड़ाता हूं। यह कहके खाँ साहब दाहिना ज़ानू[1] ऊँचा करके और बायाँ ज़ानू टेक के आसमान की तरफ़ नज़रें करके बायाँ हाथ खुला सीने पर रखें और दाहिना हाथ खुले आसमान की जानिब बुलंद कर दें और तारीफ़ करने की तरह से अंगुश्तेनर[2] और अंगुश्तेकलमा[3] दोनों आमेख्ता[4] करके बतरीके-तारीफ़[5] जुम्बिश[6] दें। जबान से कहते जाएँ—'वाह-वाह-वाह-वाह, क्या बात है। और यह फ़िक़रा ताल सुर में कहें—ऐ फुर है मियाँ जी फुर है।

दूसरा शख्स[7] आगे बढ़े और कहे—अगरवाल बनिया यों कबूतर उड़ाता है।

साथ वाले कहें—अजी महाराज। तुम भी उड़ा लो। ठंडी हवा है, सुबह का वक्त है।

बनिया कहे कि अजी खाँ साहब के सामने मैं क्या उड़ा सकता हूं। मेरी क्या मजाल—मैं तो उनका गुलाम हूँ जी और मैं क्या कोई बड़चोद भी उड़ा सकता है उनके सामने? साथ वाले कहें कि नहीं महाराज तुम लाख उज्र[8] करो मगर तुमको उड़ाना पड़ेगा।

बनिया कहे कि खां साहब, जाने दीजिए अब तो उड़ाऊँगा।

और ब-मुश्किल-व-शक्ल मरकूमा-वाला हाथों की और नशिस्त की सूरत रखे और कहे—रंग छे, रंग छे, रंग छे। फिर लय-सुर में कहे—ऐ रंग है मियां जी रंग है, ऐ धुन है मियाँ जी धुन है।

तीसरा शख्स आगे बढ़े और कहे कि ज़नाना कबूतर इस तरह उड़ाता है—शरीफ़जादा था मगर महलों में पर्दानशीनों में रह-रहकर ख़राब हो गया। मर से दुपट्टा ओढ़कर उस पर लट्टूदार पगड़ी पहन लेता है। मर्दानी ज़नानी दोनों बोलियाँ बोलता है। साथ वाले कहें—कि अजी मियाँ साहब तुम क्यों नहीं उड़ाते हो। तुम भी उड़ा लो। जवाब में एक लम्बी

---

1. घुटना, 2. अंगूठा, 3. तर्जनी, 4. मिलाकर, 5. प्रशंसा करने के अंदाज़ में, 6. हिलाये, 7. व्यक्ति, 8. इनकार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊही करे और सौ नख़रों से राज़ी हो और कहे कि अच्छा उड़ाता हूँ—उड़ाती हूँ। अरे कोई मेरी कमर थामो। सभी ने खड़े-खड़े कबूतर उड़ाए—यह बंदी बैठके उड़ाएगी। साथ वाले फौरन उसकी कमर थाम लें और उस वक्त ज़नाना दोनों घुटने टेककर चूतड़ बुलंद करके कहे—ऊही, ऊही, ऊही ऐ फराई, फराई, फ़ुर' और दाहिना हाथ आसमान की तरफ़ बुलंद करके खुला हुआ और बायाँ हाथ खुला हुआ सीने पर रखे और लय-सुर में कहे—'ऐ आस्ते मियाँ, जी आस्ते में मुए खुदा के वास्ते।'

आठवीं नक़ल—फ़सद[1] खुलवाने की

एक बीबी बने और दूसरी लौंडी, तीसरी फ़स्साद। बीबी ने यह यह मतला पढ़ा—

"फ़साद खून से सारे बदन में दाग हुए,
अजब तरह के यह ताउज़[2] गिर्दे-बाग़ हुए।
अरे मामा तबीब[3] को इत्तला कर।"

और तीन-चार दफ़ा जल्दी-जल्दी शाने[4] और हाथ हिलाते हुए दौड़े और आकर कहे कि हकीम जी ने सरो की फसद बताई है। बीबी कहे—उई अच्छा। फ़स्साद[5] को बुला ला।

मामा फ़स्साद को लाए। फ़स्साद इस तरह से आए—हाथ की पगड़ी इस तरह से लपेटे कि आँखें तक बंद हो जाएँ और आकर सलाम करे और कहे कि इस मुए की तो आँखों पर आप पट्टी बंधी हुई है। यह निगोड़ा क्योंकर फ़सद खोलेगा। फिर उससे पूंछे कि तुम्हारा नश्तर[6] कहां है। फ़स्साद[7] जवाब दे कि पीछे छकड़े पर आता है। यह सुनकर बीबी को ग़श[8] आ जाए। लोग केवड़ा छींटा मारकर होश दिलाएँ। फिर बीच में चादर का पर्दा दिया जाए और फ़स्साद बीबी के बाज़ू पर अपना दाहिना घुटना टेककर दोनों हाथों से एक रूमाल कपड़े का तस्मे के बदले ज़ोर से खींचकर बांधें कि बीबी कहे—'उई उई उई'। फिर हाथ पर लकड़ी उस रग पर धरकर कहे—'शर, शर, शर। सेहत मुबारक। तुम बड़ी फ़सादन[9] हो।'

---

1. फसद—नस खुलवाकर खून निकलवाने को कहते हैं। जो रक्त निकालता है उसे फ़स्साद कहते हैं, 2. मोर. 3. हकीम, 4. कन्धे, 5. नसों से रक्त निकालने वाला, 6. जिसकी नस छेदी जाती है, 7. नस खोलने वाला, 8. मूर्छा, ९. झगड़ालू।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवीं नक़ल—टुंडी ख़ानम की

एक बीबी चादर ओढ़कर अपने हाथ अपने नितम्बों पर बांधकर बैठे। दूसरी औरत उसके पेट पर चादर के अंदर चिमटकर अपने दोनों हाथ कोहनियों तक उसके आगे निकाल दे। तीसरी औरत उसके सामने बैठकर पूछे कि मिज़ाज अच्छा है? यह मुंह से कहे—'अच्छा है।' वो हाथों से जवाब देती जाए। वो पूछे तुम्हारे शहर में गोले कितने बड़े-बड़े होते हैं। वह मुंह से और पीछे वाली हाथों से कहे इतने बड़े-बड़े। जब वो शरीफ़ों को पूछे, जब भी ऐसा ही करें। पीछे वाली कभी आगे वाली की बाछें खींचे। कभी बालों की पटिया दुरुस्त करे। कभी आँखों का कीचड़ पोंछे। कभी चेहरे भर में किसी 'जा'[1] पर बार-बार खुजाए। अलमुख़्तसर[2] हाथों को बेकार न रहे दे।

दसवीं नक़ल—पठान की और मेढक की

पहले यूँ क़सम खाए—ख़ान की ख़सम, मुझे खान के ऊँटों की मेंगनियों की क़सम। एक पठान दरिया के किनारे रफ़ा-एहतियाज[3] को गए। बरसात का मौसम था। लबे-दरिया[4]-मेढक बोलते थे। पठान ने कहा—तवक्कुफ़[5] करो कि हम हग लें। मेढक उनकी नसीहत कब मानते थे। और ज्यादा बाड़ा[6] मारने लगे। उस वक्त खां साहब ने गुस्सा होकर कहा कि 'सुनो मेंढकों, शेख़ों की शेखी, पठानों की टर, यहां न हगेंगे—हगेंगे घर।'

यह कहकर बिला-रफ़ा हाजत[7] यों ही रजअते कहकरी कर आए। ऐसे उजड्ड होते हैं।

ग्यारहवीं नक़ल—मियां फत्ता और बट्टा की

एक शख्स ने अपने दोस्त की दावत[8] की। उनका नाम मियां फ़त्ता था। जब वो आए तो उन्हें अपनी ज़ौजा[9] के हवाले किया कि मैं बज़ार से कुछ बक़िया[10] सौदा और लेने जाता हूं। जब तक तुम मेरे मेहमान की ख़ातिर-मुदारात[11] में बजान व दिल[12] मसरूफ़[13] रहना और जल्दी-जल्दी तोफ़ा-तोफ़ा[14] ख़ाना पकाओ। यह कहकर मियाँ तो बाज़ार गए। मेहमान घर में रहा। बीबी ने देखा कि इस क़द्र उम्दा-उम्दा अजनास[15] पेशे-नज़र[16] पड़ी है। मैं

---

1. स्थान, 2. संक्षिप्त में कि, 3. टट्टी करने, 4. नदी किनारे, 5. शान्त हो जाओ, 6. शोर, 7. बिना टट्टी किए, 8. खाने पर बुलाना, 9. पत्नी, 10. शेष, 11. आतिथ्य, 12. दिल व जान से, तन व मन से, 13. व्यस्त, 14. अच्छे-अच्छे, 15. वस्तुएँ, 16. आँखों के सामने।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेहनत मशक्क़त करके पकाऊँगी। मुर्जरिद[1] मेहमान सबनोश[2] करके तशरीफ़ ले जाएगा। मैं, शौहर, लड़की सब भूखे रह जायेंगे। कुछ ऐसा फ़िक़रा[3] किया जाए कि मेहमान डरकर भाग जाए। फिर हम सब घरवाले यह सब ख़ाना बख़ूबी तमाम नोशीजान[4] करेंगे। यह सोचकर मेहमान से, जिनका नाम मियां फ़त्ता था, घरवाली कहने लगी कि मेरे शौहर की क्या बुरी आदत है। मेहमान बनाकर हरेक को ले आता है और आख़िरकार जिस बट्टे से मैं मसाला पीस रही हूं, उसी से उसका सर कुचलकर भेजा खा जाता है। यह सुनते ही मियां फ़त्ते के होश फ़ारान हो गए। जूता भी वहां छोड़ा। घर से निकल भागे। फ़ौरन साहबे-ख़ाना[5] भी अशिभाए-नौ[6] ख़रीद कर हाथों में लिए हुए दाख़िल ख़ाना[7] हुए। देखा बीवी बड़ी कोशिश और मेहनत से तामपज़ी[8] में मसरूफ़[9] है, मगर मेहमान नदारद[10]। हैरान होकर ज़ौजा[11] से पूछा। बीवी मेहमान क्या हुआ। वह कहने लगी यह सिल पर का बट्टा मुझसे मांगने लगा। मैंने वनज़र-हर्जकार[12] जो न दिया तो ख़फ़ा होकर चला गया। साथ ही शौहर ने अंगुश्ते-अफ़सोस[13] दांतों में दबाए और जबाव दिया कि वाह तुमने ग़ज़ब किया। एक अदना[14] पत्थर के बट्टे के वास्ते उसको रंजीदा-ख़ातिर[15] कर दिया। यह न चाहिए था। लाओ बट्टा उसकी नज्र[16] करूँ। अभी दूर न गया होगा। यह कहकर बट्टा उठाकर दौड़ते चले। देखा कि राह में वो मेहमान चला जाता है। यहाँ तक कि उन्होंने आवाज़ दी। ऐ मियाँ फ़त्ता–क़ुर्बान हुआ बट्टा। तुम लेते जाओ बट्टा। ज्यों–ज्यों यह सदा[17] देते हुए उसके पीछे दौड़ते थे। त्यों-त्यों वह जानता था कि वह ख़ैरख्वाह[18] बीवी मुझे इत्तला[19] कर चुकी है। मैं उसके हाथ लगा कि उसने सिर कुचलकर भेजा खा लिया, वह भागा और अपने मकान में घुसकर कुंडी चढ़ा ली। यह उदास बेकरार आए और कहने लगे कि उनके दिमाग़ में कुछ ख़ब्त[20] हो गया है। आओ हम, तुम और लड़की वाले मिलकर खा लें कि ख़राब न हो। सच क़ुरान में आया है कि औरतें भी बहुत बड़ी मक्र[21] होती हैं।

---

1. आनेवाला, 2. खा-पीकर, 3. वाक्य बोलना चुभते हुए, 4. खायेंगे, 5. मालिक, 6. नई नई वस्तुएँ, 7. घर में आए, 8. खाना बनाने में, 9. व्यस्त, 10. ग़ायब, 11. पत्नी, 12. मना कर दिया, 13. दुःख भरी उँगली, 14. छोटे से, 15. दुःखी, 16. दे आऊँ, 17. आवाज़, 18. जानकार, 19. बता चुकी है, 20. ख़राबी, 21. मक्कार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बारहवीं नक़ल

कुछ लोग तोता यों पढ़ाते हैं—
सत गुड़धत शिवधत दाता,
बैल की सींग पर ऊँट नाचा।

एक लड़का अपने उस्ताद को कहता है—
संदूक़ पर संदूक़, मियाँ जी की लंबी बंदूक़

ऐज़न—अलिफ़ बे ते नक्क़ारा,
मियाँ जी को चने के खेत में पछाड़ा।

ऐज़न—गुलिस्ताने बोस्तान काहे को पढ़े,
कटारा बांधकर मैदान में लड़े।
नीयत गुस्ल तमाशबीन, गुस्ल मयकनम
गुस्ल हवाई, नाम अतलाह् बक्शे इलाही।

ऐज़न—गुस्ल मयकनम, गुस्ले दोस्ती
एक बगल में एक खड़ी कोसती।

ऐज़न—तनत गुस्ल मनतगुस्ल तनतातांवत
गुस्ल कुरवतन इलल्लाह्।

तेरहवीं नक़ल—उस्ताद और शागिर्द की

मकतबखाने[1] में उस्ताद ने कहा—मेरा दिल चाह्ता है खीर खाने को।

एक पाजी लड़का खुशामदन[2] कहने लगा—मौलवी साह्ब हम पकवा लायेंगे। घर में आकर माँ से कहा—'अम्मा आखूनदा[3] जी को खीर पका दो।' माँ बोली—'बहुत अच्छा'। खीर पकने लगी। दर्मियान-शीरबरंज[4] पकाने में रफा हाजत[5] को गई। कुत्ते ने डेगची में मुंह डाल दिया। जब माँ हाजत से फ़ारिग़ होकर आई तो लड़के ने कहा कि 'अम्मा कुत्ता

---

1. स्कूल, 2. मक्खनबाज़ी करने के लिए, 3. मास्टर, 4. दूध चावल की खीर पकाने के बीच, 5. टट्टी की ओर गई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थोड़ी खीर खा गया।' माँ ने कहा—'मैं और पका दूं।' लड़का बोला—'मौलवी साहब ने आँखों से देखा नहीं। मैं चीनी की रकाबी लाता हूं। तुम उसमें से निकाल कर ऊपर से चांदी का वरक़ लगाकर पिस्ता-बादाम छिड़क दो।' माँ भी राज़ी हो गई। बाद उसके कीमा दिया और कहा कि भून दो। माँ ने मसाले में उसको भी भून दिया। दोनों चीज़ें दस्तरख्वान[1] में लपेट के मकतब[2] में उस्ताद के आगे लाया और अर्ज़ की—'खीर और क़ीमा हाज़िर है।' उस्ताद बहुत खुश हुए और लड़कों से कहा, 'देखो सआदतमंद[3] शागिर्द ऐसे होते हैं और खड़े-खड़े उंगली से खीर खा-खाकर गाल फुलाकर तारीफें करने लगे और क़ीमा बिल्कुल खा लिया। जब थोड़ी-सी खीर बाकी रह गई तो लड़का बोला—'ख़ता[4] माफ़ हो एक क़सूर अलबत्ता[5] हो गया। मार से अमां[6] पाऊँ तो जबान पर लाऊं।' मौलवी साहब ने कहा—'बेटा। तूने कौन सा कसूर किया है, जो अमान[7] मांगता है। ले मैंने मारने से अमां दी। जो कहना है कहो।' लड़के ने हाथ बाँधकर अर्ज़ की—'चमचा भर खीर इसमें से कुत्ता भी खा गया था।' मौलवी साहब ने यह सुनते ही कहा, 'लाहौल विलाकूबत, इल्ला बिल्लाईल अजीम। नाउज-बिल्लाहे मिनश मैताने इल रजीम। असतश फिर उल्लाह!' और रकाबी जमीन पर दे मारी और मुंह पोछने लगे और कुल्लियां करने लगे। रकाबी[8] के टूटते ही लड़का रोकर कहने लगा, 'अब अम्मा भी मारेगी, यह तो छोटे भाई के हगने की रकाबी थी जो धो ली थी।' फिर तो मौलवी साहब का एक रंग आता था और दूसरा जाता था। फिर मौलवी साहब कहने लगे कि 'कीमा भी कुछ ऐसा ही होगा।' लड़का कहने लगा कि मारने के तसमे का हम कीमा पकवा लाए थे।

चौदहवीं नकल—शागिर्द की किरअत[9] की

एक मौलवी साहब शागिर्दों पर बहुत ताकीद[10] रखते थे कि हरगिज़ बिला अदाए-क़िरअत[11] बातें न किया करो। एक दिन ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि मौलवी साहब के दस्तार[12] पर हुक्क़ा पीने में एक चिनगारी आग की जा पड़ी। लड़का कहने लगा कि क़िबला[13] तहक़ीक़ी-क़िरत[14] में और कावाए-हकीकी क़िरत में बहबेनज़र बिलऐनुल ज़ाहिर वलबातिन वल अशहदन

---

1. खाने की चादर, 2. स्कूल, 3. आज्ञाकारी, 4. गलती, 5. अवश्य, 6. बच, 7. माफी, 8. प्लेट, 9. क़ुरान पढ़ने का लय, 10. सख्ती, 11. बिना लय के, 12. पगड़ी, 13. महाशय, 14. क़िरअत यानी लय दो प्रकार की होती है तहक़ीक़ी यानी अन्वेषित और कावाए हक़ीक़ी यानी वास्तविक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ला मुबालेगुत तहरूक ला कलालुश शेरबुल मुवैयद मिनल हाजा मुसम्मा वेअबदिल्लाह व अब्दुलरहमान वाअब्दुलरहीम[1] यहाँ तक कि तमाम[2] दस्तार[3] जलकर भस्म हो गई। मौलवी साहब ने बगुस्सा कहा कि कमबख्त जल्द इत्तला न की वर्ना मेरी तमाम दस्तार क्यों जलती। लड़के ने अर्ज़ की—आपने ही तो क़िरअत को हुक्म दिया था।

पन्द्रहवीं नकल—अहवाल तानाशाह दक्किन में

बारह बरस चांनी सोने के गोलों से आलमगीर से लड़े। नाज़ुक दिमाग़ ऐसे थे कि पेशाव की बू न सूंघ सकते थे। एक जवार का कई लाख जवाहर का सात-आठ गज़ का नल बनवाया था—उसमें पेशाब किया करते थे कि बौल[4] दूर जाकर गिरे। नाक में बू न आए। पान कभी न खाया, इत्र कभी न लगाया। माशूकों[5] के पान और इत्र की बू फ़क़त सूंघ लिया करते थे। जब क़ैद होकर आए तो तब मालोमुता[6] बाकीमाँदा[7] मय सुरादकाते इस्मत[8] आलमगीर के कब्ज़े में आया। आलमगीर ने इस बौल्दान का नादानिस्ता[9] अर्ककुशी[10] का भबका बनवाया। दोआब में जो घोड़े ख़ासे के ज़ब्त हुए उनके थाल को धो-धोकर साइसों ने शीशों में भर-भरकर पचास रुपए तोले का इत्र बनाकर खुद आलमगीर के हाथ बेचा। आलमगीर ने निहायत पसंद कर लिया। उनके माशूकों[11] को अपने पलंग के गिर्द बिठाया। वो निहायत[12] हंसने लगी और रंजीदा[13] हुई। पूछा कि क्यों हंस हंसकर रंजीदा होती हो। देखो कि तुम्हारे बादशाह ने भी कभी इत्र लगाया है। उन्होंने उस इत्र को सूंघ-सूंघकर कहा कि यह इत्र तो हमारे बादशाह के घोड़ों की याल[14] में पड़ता था। दरयापत[15] किया तो सही निकला। कुछ ऐसा भवका भी तुम्हारे बादशाह की सरकार में था। उन्होंने कहा कि हज़रत सलामत जान की अमां[16] पाएँ तो ज़ुबान पर लाएँ। यह तो हमारे बादशाह की बौलदान[17] था। आलमगीर बहुत ख़फ़ीफ़[18] हुए। आलमगीर ने पूंछा कि मैंने सुना है कि तुम्हारे बादशाह ने कभी पान नहीं ख़ाया। उन्होने अर्ज़ की—हमारा बादशाह बकरा न था, जो पत्ती चबाता। लिखा है कि आलमगीर[18] ने तानाशाह

---

1. टूटी फूटी अरबी की एक बहर जिसका कोई ख़ास अर्थ नहीं है। केवल लय को उजागर करने के लिए कही गई है, 2. सारी, 3. पगड़ी, 4. पेशाब, 5. प्रेमियों, 6. सामग्री 7. बचा खुचा, 8. औरतों सहित, 9. जानकर, 10. रस निकालना, 11. प्रेमिकाओं, 12. अत्यधिक, 13. दुखी हुई, 14. भूसे में, 15. पता लगाया, 16. क्षमा, 17. जिसमें पेशाब किया जाता है, 18. आलमगीर औरंगज़ेब का ही नाम है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को क़ैदख़ाने में ख़ज़ाना कुर्सी की बाबत निहायत सताया। वो बार-बार यही कहते थे कि जो कुछ था, वह तुम्हारे कब्ज़े में आया। अब कुछ नहीं है। सच न जाना तरह-तरह के आज़ार[1] पहुंचाने शुरू किए। आख़िर लाचार होकर तानाशाह ने कहा कि मैंने उस ख़ज़ाने पर मस्जिद बनवा दी है। आलमगीर ने इसतिता[2] करके उस मस्जिद को क़िबले से मुनहरिफ़[3] क़रार[4] देकर खुदवा डाला, कुछ न पाया। तानाशाह से कहा—क्यों झूठ बोले? उन्होंने कहा—इस वास्ते कि तुम्हारा भी दीन जाता रहे।

वाक़ई यह नक़ल फ़ज़ीहती[5] है। ताम[6] के वास्ते एक दिन एक मर्द से क़ैदख़ाने में तानाशाह ने कहा—ज़रा सा घी और दाल-चावल नसीब होता तो खिचड़ी पकाकर खा लेता। उसे रहम आया। दाल-चावल पत्ते पर घी लाकर उनको दे दिया। उन्होंने शुक्र करके ले लिया। आग सुलगाने लगे। कौआ आया। घी की पत्ती की चोंच में दबाकर उड़ गया और दरख़्त पर सामने बैठकर नौशीजान[7] किया। उन्होंने उबली खिचड़ी आयी। मगर उनके दिल को यक़ीन भी हो गया कि अब मुद्दते मुसीबत भी मुनक़ता[8] हुआ चाहती है। इस वास्ते कि मसल[9] मशहूर है! बाद रंज-गंज[10] वही हुआ कि थोड़े ही अर्से[11] में क़ैद से निजात[12] हुई और मुताबिक़[13] उसके राक़िम[14] पर भी बऐने[15] यही वारदात[16] गुज़री।

सोलहवीं नकल—मुशायरे की

चंद[17] आदमी चंद शायर बनें। यह कौन हैं—यह मियाँ नासिख़ हैं। यह कौन हैं—यह आतिश हैं। यह तीसरे कौन हैं—यह मीर इंशा हैं। यह कौन हैं—यह मियाँ सग़ीर हैं। यह कौन हैं—यह शरफ़ हैं। यह हज़ीं हैं। यह हिलाल हैं। यह निज़ामी हैं। यह जामी हैं। यह इस्माइल फ़ारसी हैं। यह शौकत फ़ारसी हैं। यह ख़ाक़ानी फ़ारसी हैं। यह ज़हूरी फ़ारसी हैं। यह सायब फ़ारसी हैं। यह सलमान सावजी फ़ारसी हैं। यह नुरूलऐन फ़ारसी हैं। यह ऐश फ़ारसी हैं। यह फ़सीही फारसी हैं। यह क़ासिम फ़ारसी हैं। यह नासिर अली फ़ारसी हैं। यह शाने फ़ारसी हैं। यह ख़ालिस फ़ारसी हैं। यह मिर्ज़ा ताहिर वहीद फ़ारसी हैं। यह तदबीरु-

1. कष्ट, 2. फ़तवा दिलवाना, 3. अलग, 4. सिद्ध करके, 5. व्यंग्य, 6. खाना, भोजन, 7. खा, 8. समाप्त, 9. कहावत, 10. दुःख, कष्ट, 11. समय, 12. आज़ादी, 13. ठीक उसी के अनुसार, 14. लेखक, 15. बिलकुल, 16. घटना, 17. कुछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्दौला मुंशी मुज़फ्फ़र अली ख़ाँ असीर हिंदी हैं। यह कुदसी फ़ारसी हैं। यह तालिब फ़ारसी हैं। यह अहली शिराजी हैं। यह फ़तेहउद्दौला हैं। यह मक़बुलउद्दौला कुबूल हैं। यह मेहर हैं। यह ज़फ़रशाह देहलवी हैं। यह अख्तर शाह अवध हैं। यह सौदा हैं। यह रिन्द हैं। यह ज़ेबुन्निसा मख़फ़ी हैं। यह सदर महल 'सद्र' हैं। यह मलका मुख़द्दरा उज़मा हैं। ये आलम आरा बेगम 'आलम' हैं। ये विकार हैं। ये मीर हैं। ये कौकब हैं। ये फ़िरदौसी हैं। यह कलीम फ़ारसी हैं। यह उरफ़ी फ़ारसी हैं। यह सादो शिराज़ी हैं। यह मुशीर हैं। यह सलीम हैं। यह महताउद्दौला दरख्शां है। यह तआशउद्दौला ऐश हैं। यह लायकुद्दौला शाहिद हैं। यह हुनर हैं। ये शाज़ हैं। ये अंधे मियाँ जुरअत हैं।

सब एक-एक मतला[1] या एक-एक बैत[2] हरेक की तसनीफ़[3] पढ़ें और आपस में तारीफ़ और वाह-वाह होती जाए। अंधे जुरअत का नाक़िल कहे कि जुरअत तो अब पैदा होते हैं। यह कह कर टांगे चीरकर खड़ा हो जाए और दूसरा आदमी टांगों के नीचे से चेहरा निकाल कर कहे कि अबे बाबा। सामने वाला कहे कि बेटा क्या है ? वो जवाब दे कि बाबा मैं तो फंस गया। सामने वाला कहे कि बेटा जुरअत[4] हो तो निकल आ। बस वह फ़ौरन उस कलमे के साथ टांगों के नीचे से निकल आए। फिर जुरअत का नक़्क़ाल अपनी आँख अंधों की मानिन्द[5] बनाकर कहे कि कुर्बान जाऊँ, अंधों का शेर भी अंधा होता है। साथ वाले कहें—किस तरह से। उस वक्त यह मतला मियाँ जुरअत नाबीना[6] का पढ़ता जाए और दोनों हाथों से चारों तरफ अंधों की तरह टटोलता जाए—

जुरअत :

मतला—सुना है यार के हमने कमर है,
कहाँ है किस तरफ़ को है किधर है।

मगर यह नक़ल तमाम मुशायरे के बाद हो।

नासिख़

मेरा सीना है मशरिक़े आफ़तावे दाग़े हिजाँ,
तुलू-ए-सुबह मैशर चाक है मेरे ग़रेबाँ का।

---

1. पहला शेर, जिसमें दो पक्तियाँ होती हैं, 2. जिसमें एक से अधिक शेर हों, 3. लिखित, 4. हिम्मत, शायर का नाम भी जुरअत था, 5. समान, 6. अन्धे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आतिश

हबीब आसा मैं दम भरता हूं तेरी आशनाई का,
निहायत ग़म है इस क़तरे को दरिया की जुदाई का।

इंशा

सनम बव्वे करीम मा, तेरे हैं हरेक ये मुब्तिला
कि अगर अलसतो वेरव्वेकुम तू अभी कहे तो कहें वला।

सग़ीर

ज़बाँ शौहरे अफ़जाने तहमीद हो,
अगर फ़ैज़े नैसानेताईद हो।

शरफ़

करम चाहता हूं तेरा ऐ करीम,
इनायत कर ऐ ग़फ़ूरुर्रहीम।

हिलाल

शह किशवरे हिन्द सुल्ताने आलम,
सुलेमाने अख़्तर-नगर जाने आलम।

यह शख्स[1] तादमें-ज़िन्दगी[2] राक़िम[3] के मुलाज़िमों[4] में रहा। फ़क़ीर[5] के अहदेशाही[6] में छापा-ख़ाना से मुताल्लिक़[7] रहा, जब फ़क़ीर बादे-इन्तज़ा-ए-सल्तनत[8] वारिदे-कलकत्ता[9] हुआ। ब-अगवाए-मुगव्वियाने[10] कूतह-अंदेश[11] दो बरस दो महीने तक क़िला विलियम फ़ोर्ट कलकत्ता में मब्रूस[12] रहा। बाद रिहाई यह शख्स ता-इन्तिक़ाल[13] मेरा मुलाज़िम रहा।

शेख़ अली हज़्रीं फ़ारसी

जां ताज़ा ज़तरदस्तीय अब्र अस्त जहां रा
आवे बरूख़ आमद चे ज़मीं रा चे ज़मां रा।

---

1. व्यक्ति, 2. जीवनपर्यन्त, 3. लेखक, 4. सेवकों, 5. बादशाह, 6. राजशाही में, 7. सम्बन्धित, 8. सल्तनत समाप्त होने के बाद, 9. कलकत्ता पहुंचे, 10. दूसरों के बहकाने में आकर, 11. बहकाने में आकर, 12. क़ैद, 13. मरते समय तक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुल्ला निज़ामी फ़ारसी

हस्त कलीदे दरे गंजे हकीम,
बिस्मिल्लाहे रहमानिर्रहीम ।

मुल्ला जामी फ़ारसी

ज़दी जामी बंदी चंगे शिकस्त
बमिज़राबे फ़ना तारश गुसश्ता ।

इस्माइल फ़ारसी

ऐ सिफ़ाते तू बयां हा वर ज़वां अन्दाख्ता,
इज्ज़त-ओ-ज़ातत यक़ीं सदर गुमां अन्दाख्ता ।

शौकत फ़ारसी

खुदाया रंगे तासीरे करामत कुन फ़ुग़ानम रा
बमौजे अश्क बुलबुल आनदेह आबदेह तैग़ ज़बानम रा ।

ख़ाक़ानी फ़ारसी

जौशने सूरत बूरूं कुन दरसफ़े मर दां दर आ
दिल तलब कज़ दारे मुल्के दिल तवाशुद बादशाह ।

ज़हूरी फ़ारसी

ज़हे बा हशमते शाही गदाई
गदायाने दरत दर पादशाई ॥

मिर्ज़ा सायब फ़ारसी

मिन्नत खुदायरा के बतौफ़ीक़े किर्दगार
अज़नाफ़े काबा चश्मए ज़मज़मशुद आश्कार ।

सलमान सावजी फ़ारसी—

हर दिल के दर हवाए जमालश मजाल याफ्त,
अनकाए हिम्मतश दो जहाँ ज़ेरे बालयाफ्त ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिर्ज़ा नूरुल ऐन वाक़िफ़ फ़ारसी

ऐ ब बज्मे शौक़े तू नालां बहर सू साज़ हा,
रफ्ता दर हर गोश ए जां साज़हा आवाज़ हा ।

ऐशी फ़ारसी

ख़ुदाय तवाना के हर आंचे हस्त
सरे ख़ामए क़ुद्रतश नक्श बस्त ।

फ़सीही फ़ारसी

खुदाया रोज़िए ई खुद परस्तां साज़ जन्नत रा
के दोसख़ जन्नत अस्त आतिश परस्ताने मोहब्बत रा ।

क़ासिम फ़ारसी

बस के उफ़ताद अज़ ग़मत शेरीदगी दरकारे मा
बरसरे मा खुद बखुद वामीशवद दस्तारे मा ।

नासिर अली फ़ारसी

मी नुमायद बसके खुर्शीदे रूखश नैरंग हा
ज़र्रा-ए-मा चूं परे ताऊस दारद रंग हा ।

शफ़ी फ़ारसी

ऐ ज़ाजिबे इश्क तोरा इश्क़े खुदाई
मजनूने तोरा सिलसिला दर सिलसिला ख्वाई ।

सय्यद हुसैन ख़ालिस फ़ारसी

चुनां दा रन्दे शौक़े वस्ले बिस्मिल्लाह उन्वां हा
के दर परवाज़ आयन्द अज़ दो बाले जिल्दे दौवां हा ।

मिर्ज़ा ताहिर वहीद फ़ारसी

गुज़श्त यादे तू दोश अज़ दिले रमीदय मा
वेगो वेगो ब कुजा रफ्ती ई चुनां बकुजा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदबीरुद्दौला मुंशी मुज़फ़्फ़र अली खां बहादुर जंग 'असीर' – यह शख्स दस-पंद्रह बरस के सिन में राक़िम[1] का हमप्याला[2] और हमनिवाला[3] रहा और सोहबत मुशायरा[4] कोई ऐसे न होते थे, जिसमें उसकी और मेरी हमराही न हो बल्कि यह ख़िताव फ़क़ीर[5] ही का इनायत किया हुआ है। दमे-मुहब्बत भरता था और खुद को आशिकों में गिनता था। अब नहीं जद[6] उसके नमकख्वार मेरे बाप-दादा के रहे। मेरे अहदे[7] बलीअहदी[8] में आशिक और मेरे ज़मानए-सल्तनत[9] में मुसाहिब और दारोग़ाकुल[10] जिन्दानख़ाना[11] सरकारे अवध का और खुलासानवीस[12] तमाम कचहरियात सुल्तानी का रहा। जहाँ तक मेरे मिज़ाज में दख़ील[13] था कि शबानारोज़[14] हाज़िरेख़िदमत रहता था। पैंसठ बरस के सिन में अक्द[15] किया। ज़ौजा[16] से निहायत[17] मानूस[18] रहा करता था। जब औज़ाए फल्की[19] मोवदहल[20] हुए यानी अम्र[21]-इन्तज़ा-सल्तनत[22] अवध वाकेए[23] हुआ मैं मायूस जानिबे-कलकत्ता[24] चला। यह अज़बसके[25] ज़ौजा[26] का मुबितला[27] बहुत था। हक़्नमक[28] मालिक यककलम[29] फ़रामोश करके घर में जा चुका। मैं कलकत्ते में दाख़िल हुआ। बीस बरस से उससे मुझे फ़िराक़[30] तुरफ़ातर[31] यह कि अब वालिए-रामपुर[32] को अपना बादशाह बनाकर यह सय्यद ज़ादा[33] मुल्की उनका नमक खाता है। फ़तवरू-या-उलिल अवसार[34] यह मतला उस शख्स नमक फ़रामोश का है —

दिल गुनाह करने में ख़ारा हो गया,
जो सग़ीरा था, कबीरा हो गया।
खा गया वेफ़ायदा मुझको फ़लक,[35]
ऊंट के मुंह का मैं जीरा हो गया।

---

1. लेखक, 2. साथ पीने वाला, 3. साथ खाने वाला, 4. मुशायरे की महफ़िल, 5. बादशाह, लेखक ने अपने लिए प्रयुक्त किया, 6. बाप-दादा, 7. समय 8. युवराजी, 9. सल्तनत के समय, 10. कुल दारोग़ा, जिसे आजकल महानिरीक्षक कहते हैं, 11. जेल, 12. लेखन अधिकारी, 13. घुलामिला, 14. रात-दिन, 15. निकाह, 16. पत्नी, 17. बहुत, 18. मोहब्बत, 19. आकाशीय देन यानी शाही सल्तनत, 20. छूटे, 21. कार्य, 22. सल्तनत ज़ब्ती, 23. विनश, 24. कलकत्ते की ओर, 25. वास्तव में, 26. पत्नी, 27. प्रेमी, 28. नमकहलाली, 29. यह लिखने वाला, 30. दूरी है, वियोग, 31. अजीब बात, 32. नवाब रामपुर, 33. सैय्यद का बेटा, 34. ए दुनिया वालों उससे शिक्षा लो, 35. आसमान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क़ुदसी फ़ारसी

मबाशे ग़र्रा ब अहदे-क़दीमो यारे कोहन
के हफ्ता-ए-चो शवद ख़ार वुन शवद गुल बुन।

तालिव फ़ारसी

यक लहजा नीस्त का मिज़ाह तूफ़ां तराज़ नीस्त
वीं दिल चो शमा त मय सोज़ गुदाज़ नीस्त ।

अहली शिराजी

ख़त दमीद अज़ लवे ऊ कारे बला वालाशुद
यारव ईं फ़ितनए पिन्हां ज़ कुजा पैदाशुद।

फतेहुउद्दौला—बख्शी उल मुल्क मिर्ज़ा मोहम्मद रज़ा वर्क़ उस्ताद मरहूम राक़िम इब्ने-मिर्ज़ा काज़िम अली सुलाह—जिन्होंने ताद में मर्ग घर से क़दम वाहर नहीं निकाला। बख्शी मज़कूर मेरे वालिद के अहदे सल्तनत में तमाम फ़ौज के बख्शी रहे और मेरे अहद[1] में उस्तादे आशिक रहे और बादे इन्तज़ाए सल्तनत हमराह आए और ज़िन्दाने[2] क़िला विलियम फ़ोर्ट कलकत्ता में भी मेरे साथ क़ैद हुए और उसी ज़िन्दान[3] में जाँबहक़[4] हुए और वक्तेदमे-वापसी[5] यह बैत और यह मतला पढ़कर ख़ानए-फ़िरदौस[6] हुए।

मतला— वर्क़ जो करना था, आख़िर वही कर कर उठे ।
जान दी आपके दरवाज़े पर मर कर उठे ।

बैत— सांस लेने में हरेक जा से मसक जाता है तन,
वर्क़ बदलो जामाए हस्ती पुराना हो गया ।

कप्तान मक़बूलउद्दौला मिर्ज़ा मुहम्मद मेंहदी क़ुबूलहम—मशविराए-राक़िम[7]। अठारह-उन्नीस वरस का मेरा सिन था जो मेरा उनका साथ हुआ—मेरे मुलाज़िम रहे। मेरे वालिद के भी मुलाज़िम थे। मेरे अहद में ख़िदमत चौकी पलंग-ख़ास[8] व मुसाहिबत[9] और छापाख़ाना

---

1. सल्तनत के समय में, 2-3. कारावास, 4. मृत्यु, 5. अन्तिम समय, 6. जन्नत को सिधारे, 7. लेखक का सलाहकार, 8. शाही पलंग, 9. दरबारी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और कुतुबख़ाना और कर्नल राटन का तोपख़ाना यह सब उनके पाएनाम[1] रहा और बाद इन्तज़ाए-सल्तनत[2] अवध जब राक़िम क़िला विलियम फ़ोर्ट कलकत्ते में मुक़य्यद[3] था। ये हाज़िर कलकत्ता हुए और जब राक़िम ने रिहाई पाई तो ये मेरे पास मौजूद थे। हसरते[4] ज़ियारते[5] अतबात-आलियात[6] में इन्तक़ाल[7] किया। यह मतला उनका है—

मतला—छल्ले को तेरे आग से जलवा नहीं सकता,
ऐ गुलबदन इस वास्ते गुल खा नहीं सकता।

मेहरइब्ने[8] मोतमुद्दौला—

मतला— रोज़ बालीदा खुशी से तने दिलवर देखूं,
मिस्लेगुल ताज़-ओ-तर-गुलशने दिलवर देखूं।

जफ़रशाहे-आख़िर देहलवी

मक़दूर किसको हमदे ख़ुदाए जलील का,
इस जां से बेजुबान है दहम क़ाल ओ क़ौल का।

अख़्तरशाहे-आख़िर अवध—यह फ़क़ीर[9] हक़ीर[10] राक़िम[11] व मुसन्निफ़[12] व मोअल्लिफ़[13] सरापा-तक़सीर[14] है। पन्द्रह बरस के सिन में वालिद जन्नत-मकां[15] ने वली अहद और वज़ीर किया। बीस बरस के सिन[16] में तख़्ते अवध पर बजाए[17] हज़रते आला क़ायम हुआ। तीस बरस के सिन में बिलासुद्दूर[18] जुल्म-ओ नाइंसाफ़ी व बेआज़ारेरय्यत[19] बे-सबब[20] तख़्त से महरूम[21] किया गया। बीस बरस से कलकत्ता मोहल्ला मोचीखोला मुलक्कब-बा[22] मटियाबुर्ज में क़याम[23] है। पचास बरस का सिन हुआ। छब्बीस महीने क़िला विलियम फ़ोर्ट कलकत्ता में नाहक़[24] क़ैद रहा। साठ से ऊपर-ऊपर माशा-अल्ला चश्मबद्दूर औलादे ज़ुखुरून्नास[25] हैं। 1291

---

1. अधिकार में, 2. सलतनत समाप्ति, 3. बन्दी, 4. इच्छा, 5. दर्शन, 6. ईराक के पवित्र स्थान, 7. देहावसान, 8. पुत्र, 9-10. इस प्रकार के शब्द लखनऊ की तहज़ीब में थे। यह बात करने का अन्दाज़ था। बादशाह भी अपने को कहता था कि फ़क़ीर को यह कहते हैं, 11-12-13. लेखक, 14. पूरा ग़म व दर्द, 15. स्वर्गीय, 16. आयु, 17. स्थान पर, 18. बिना किसी, 19. जनता को बिना परेशानी दिए, 20. अकारण, 21. उतार दिया, 22. निकट, 23. अवस्थान, 24. अकारण, 25. एकत्रित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिजरी से बा-आनस गवर्नमेंट वीस हज़ार रुपयों में दो दुःख़्तरों[1] का अक्द[2] कर दिया। सुना जाता है कि इसी हिसाब से बारह दुःख़्तरें सनेआइंदा[3] में बआमद गवर्नमेंट मुनअक़िद[4] होंगी। पचास बरस के सिन में इतनी जिल्दें किताबों की तस्नीफ़[5] कीं—

पहली—अख़्तरमुल्क
दूसरी—अफ़सानए इश्क़
तीसरी—इरशादे ख़ाक़ानी
चौथी—ईमान
पाँचवीं—बहरुल हिदायत
छठी—बहरे उल्फ़त
सातवीं—बहरे मुख़्तलिफ़
आठवीं—यह किताब 'बनी'
नवीं—तारीख़े मज़हब
दसवीं—तारीख़े मुमताज़
ग्यारहवीं—तारीख़े ख़ास
बारहवीं—तारीख़े फ़िराक़
तेरहवीं—तारीख़े मशग़ला
चौदहवीं—तारीख़े ग़िज़ाला
पंद्रहवीं—तारीख़े नूर
सोलहवीं—तारीख़े जमशेदी
सत्रहवीं—तारीख़े दहर
अठारहवीं—तजल्लिए इश्क़
उन्नीसवीं—जौहरे उरूज
बीसवीं—हुस्न अख़्तरी
इक्कीसवीं—दरियाए ताश्शुक़
बाइसवीं—दफ़्तरे हुमायूं

---

1. पुत्रियों, 2. निकाह, 3. अगले साल, 4. निकाह होगा, 5. लिखी है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेइसवीं—दस्तूरे वाजिदिया
चौबीसवीं—दीवाने मुबारक
पच्चीसवीं—दफ्तरे परेशान
छब्बीसवीं—दुल्हन
सत्ताइसवीं—सयू-ए-फ़ैज़
अट्ठाइसवीं—सुखने-अशरफ़
उन्तीसवीं—सरीफ़ए सुल्तानी
तीसवीं—सौतुल मुबारक
इकतीसवीं—इश्क़नामा
बत्तीसवीं—क़मर मज़मून
तैंतीसवीं—कुल्लियाते अख्तरी
चौतीसवीं—कुल्लियाते सोम
पैंतीसवीं—गुलदस्ता-ए-आशिक़ान
छत्तीसवीं—मसविदाते हिरसा
सैंतीसवीं—माहीनामा
अड़तीसवीं—मुरक्काए फ़रूंख़
उन्तालिसवीं—मुवाहत-ए-वैनुलनफ्स उल अक़ल
चालीसवीं—नाजो
इक्तालिसवीं—नज्मे नामूर
बयालिसवीं—निसाए अख्तरी
तैंतालिसवीं—हैवते हैदरी
चवालिसवीं—लुग़त हफ्त जुवाँ, कि अभी वो नातमाम है।
पैंतालिसवीं—पांच-चार किताबें मरासी और मसाएव मंजुम शोहदाय कर्बला है कि इन मरसियों का हिसाब नहीं किया।
छयालिसवीं—मजमुआ वाजिदिया

यह सब फ़क़ीर[1] के कुतुबख़ाने[2] मौजूद हैं और जो तनज्जुले-सल्तनत[3], गारते-बदमाशान[4]

1. लेखक, 2. पुस्तकालय, 3. सल्तनत के भूकम्प, 4. बदमाशों के नष्ट करने में।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में ताराज[1] हुई वो ख़ारिज-अज़-हिसाब[2] हैं।

एक हसरत तूर पर भी वहरे मूसा रह गई।
ऐसा कुछ देखा कि आंखों को तमन्ना रह गई।

मिर्ज़ा रफ़ी 'सौदा'

गफ़लत में ज़िदगी को न खो गर शऊर है,
यह ख्वाव ज़ेरे सायाए बाले तयूर है।

सय्यद मोहम्मद ख़ान 'रिन्द'

हूर पर आँख न डाले कभी शैदा तेरा,
सवसे वेगाना है ऐ दोस्त शिनाता तेरा।

ज़ैबुन्निसा 'मख़फ़ी'

ऐ अवरे रहमतत खुर्रम गुले वुस्ताने मा
गुफ़तगुए हरफ़े इश्क़त मतला ऐ दीवाने मा।

सदर महल 'सद्र'—जो मशमूल[3] महलात[4] हमराह-राक़िम[5] हैं।

मतला—वढ़े रुतवा शाहे वाजिद अली का,
बजे डंका शाहे वाजिद अली का।

मलकाए मुखद्दरा उज़मा आलमआरा वेगम 'आलम'—मनकूहाकलो[6] सुल्ताने आलम. वालदावली अहद जन्नत नशी[7]।

महवे नज़्ज़ारा ए निगार हुआ,
तीरे मिज्गां जिगर के पार हुआ।

विक़ार फ़ारसी

ऐ वार दर हरीमे तू नज़दीक ओ दूर रा
लुत्फ़े तू शामिल अस्त शकूरो कफ़ूर रा॥

---

1. नष्ट, 2. हिसाब में, गिनती में नहीं, 3. सम्बन्धित, 4. रानियों में सम्मिलित हैं, 5. लेखक के साथ, 6. पहली निकाही रानी, 7. स्वर्गीय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मीर था मुश्तार हुस्न में उसके जो नूर था,
ख़ुशीर्द में भी उसी का जर्रो ज़हूर था ।

फ़िरदौसी फ़ारसी

यू बरगस्तआ तुर्रा-ए मुश्के नाम
गिरहदाद शबेरा पसे आफ़ताब ।

कोकब अली 'अहद'—जन्नतनशीं[1]फर्ज़न्दे-राक़िम[2] मनकुहा-मरकोमावाला[3] के बतन[4] से जो सन् 1291 में फ़ौत[5] होकर सिब्तैनाबाद इमामबाड़ा तामीरकरदा-राक़िम[6] में दफ़न हुआ ।

तुझे बेमिस्ल बे-मानिंद और यकतए खुदा पाया,
कई तैं शश जत लाकन ना ऐसा दूसरा पाया ।

कलीम फ़ारसी

बनाम खुदाए के अज़ शौक़ जूद,
दी आलम अताकर दो सायलनबूद ।

उरफ़ी फ़ारसी

नय मेहरे दोस्त बीनम नए कीने दुश्मनआरा,
यकतौर दोस्त दारम बेमेहरो मेहरबांरा ।

सादी शिराज़ी

यारी बदस्तकुन के ब उम्मीदे राहतश,
बाजिब बुवद के सब्र कुनी बर जराहतश ।

मुशीर—यह राक़िम का भी शागिर्द हुआ और हिज़री सन् 1290 में मुलाज़िम हुआ और रेहलत[7] की ।

मतला— दिल आज़ेबे इमां है हमदेखुदा
दो आलम का सुलतान है रब्बेहाज़ा ।

---

1. स्वर्गीय, 2. लेखक का पुत्र, 3. पूर्वोक्त निकाही रानी, 4. कोख, 5. मृत्यु, 6. लेखक द्वारा बनवाया गया, 7. देहावसान ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सलीम फ़ारसी

उम्रहा रफ्तो न शुद नामे जुलेख़ाए बुलंद,
यूसुफ़े कूताशवद दरमिस्रा ग़ौग़ाए बुलंद ।

महताबउद्दौला दरख्शां—तीस बरस से ताअनम[1] मेरा मुलाज़िम[2] है ।

मतला—

अहले हैरत से नवज्मे ऐश ख़ाली हो सकी,
सैद क्योंकर ताएरे तस्वीर काली हो सकी ।

ताशुद्दौला 'ऐश'—सात शख्स एक मर्तबा मेरे शाग़िर्द हुए । सातों का सबा-सय्यारा[3] लक़ब[4] हुआ । उनमें से एक यह भी हैं । इस्तेदाद बहुत अच्छा उरूज़ी[5] लाजवाव मेरा मुलाज़िम भी है ।

मतला— पहले सिफ़ते-पाक[6] में खोल अपने जेहन को
कर साहवे-यासीन[7] से तलब[8] ताजेसुख़न[9] को ।

लायकुद्दौला मोहम्मद जान शाहिद—यह भी मेरा शाग़िर्द तीस बरस से मुलाज़िम है, मौज़ूंतबा[10] है । कलाम[11] उसका मेरे पास मौजूद न था । इससे कलम-अंदाज़[12] हुआ ।

'हुनर' दाख़िल सबा सय्यारा—कुतुबखाने के दारोग़ा की नालायक़ी की जात से कलाम इसका वक्त-कितावत[13] न हुआ, मगर शायर खुशगो[14] मेरा शाग़िर्द व मुलाज़िम है ।

शाद्य दाख़िल सबा सय्यारा

बहारे बाग़े जन्नत हो न क्योंकर पांव के नीचे
कि रहती है ज़मीन कए दिलवर पांव के नीचे ।

रूबाई— दी दिलबरे मनरफ़ेत बसद ज़ेबाई,
हज्जाम व दुम्बाले वै अज़ रानाई ।

---

1. आज तक, 2. सेवक, 3. सुबह के तारे, 4. उपनाम, 5. शायरी, 6. अल्लाह की प्रशंसा, 7. देने वाले, 8. मांग, 9. शायरी का मुकुट, 10. अच्छे व्यवहार वाला, 11. शेर, 12. छोड़ दिया, 13. छपने के समय, 14. मधुर वाणी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुफ्ता के वे युसतरेम मय सरे तू,
फ़रियाद बर आबुर्द के नाई नाई ॥

रूबाई— शमसे फ़लके बुलन्दो वेमिस्ल यही,
आँ देगे दही बरसरे तू चत्रशही,
अज़ हुक्क़ए याकूत गौहर मीरेज़ी
वक्त के वेगोई के दही लेव दही ।

पहली रूवाई मुतराशी[1] की सिफ़त में है, कि नाई हज्जाम को कहते हैं । दूसरी स्थाई दहीवाली की ढेड़ी और दही वेचने की सिफ़त में है । मालूम नहीं किन उस्तादों की मौजूं की हुई है ।

रूबाई— लू-लू अज़ नरगिस फरोबारी दो गुलराआबदाद,
बज़ तिगरगे रूहे पखर मालिशे उन्नाव दाद,
सक्फ़े असतूने बिलूरी सेवे ख्वारज़मी गिरिफ्त,
गोशए क़ाकुम गिरह बरविस्तरे संजाब दाद ।

माशूक़ का हाथ गाल के नीचे रख के और तेवरी चढ़ा के और दाँतों से होंठ दबा के रोने की तारीफ़ में है । मालूम नहीं किसकी है ।

सोलहवीं नक़ल—दरबार रसी[14] और अजनबी की

पगड़ी हाथ की लपेटे हुए इस तरह की हो, जिसका एक सिरा जमा करके और इकट्ठा करके बतौर जेगा[3] बालाए-दस्तात[4] रखे और साथ वालों में आगे बढ़ के कमर पटका यानी बहुत मोटी चादर कमर से लपेटकर कहे—यह कौन है ?

यह तो दरबार रसा के मामा हैं और महलदार और मेहतरानी और सुकने तक से मुलाक़ात है । सारा दरबार इनको पहचानता है । यह सारे दरबार को पहचानते हैं । यह कहकर चुप हो और दूसरा शख्स बढ़े और कहे, 'चलिए आपको याद किया है ।' बस यह फौरन

---

1. बाल काटने, 2. दरबार में आने जाने की, 3. पगड़ी के ऊपर लगाया जाता है, 4. पगड़ी के ऊपर ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होंठ हिलाते हुए और चुपके-चुपके दुआएँ अपने ऊपर दम[1] करते हुए रुख्सारों[2] पर और चेहरे पर हाथ फेरते हुए बाजू और बग़ल कुशादा[3] किए हुए पांच-चार मर्तबा उसी महफ़िल में मुतवस्सत[4] क़दमों से आमदोरफ्त[5] करके सलामी करना शुरू करे।

चारों तरफ़ बे-वास्ता[6] और बे-सबब[7] भी सलाम करते जाएँ। सलाम करने में इस क़द्र झुका करें कि वो दस्तार[8] की ज़ेगा[9] बनाए हुए हर मर्तबा पेशानी[10] पर गिर जाया करे। बाद अनफ़िराग़ सलाम[11] सीधा हुआ करें। इस तरह से सर ऊँचा किया करें कि वो ज़ेगा मसनवी फिर अपनी जगह पर आ जाया करे। इसी तरह से पचास-चालीस सलाम से कम न करें। साथ वाले कहते जायें—सुबहान अल्लाह्। दरबार रसी इसका नाम है। इसके बाद कहें कि ये वो हैं, जिन्होंने तमाम-उम्र दरबार का नाम नहीं सुना। पहले पहल आने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है। यह कहकर ख़ामोश हो और फिर एक शख्स कहे—'चलिए याद किया है।' यह सुनते ही परेशान हो जाए और पायजामा घड़ी-घड़ी खिसकाता जाए और पगड़ी भी उलट-पुलट कर डाले। चंद मर्तबा मुह फुला-फुलाकर जम्हाई ले और एक हाथ से जम्हाई लेने के वक्त चुटकी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से और खांसते और खँखारते जायें और तड़ाक से छींक दे। अंगरखे के बंद खोल डाले और कभी बांध ले और कभी सीधा हाथ मुंह पर पेशानी से[12] तासुखुनदान[13] फेरें और कभी उलटा हाथ ज़नखदान[14] से पेशानी तक। उस वक्त साथ वाले कहें—'ऐ साहब जल्दी चलिए' बल्कि दो-एक आदमी हाथ पकड़कर घसीटें। उस वक्त ये हाथ छुड़ाए और पिछले कदमों को हटाये और मचल जाये। दरबार में आते ही कहे—'मालिक का चेहरा किधर है' और साथ ही जम्हाई ले और कहे—'हाय बाजी तुम कहाँ हो?' आखिरकार लोग धक्के देकर निकाल दें।

सत्रहवीं नक़ल—रागों की तस्वीरों की

एक घूँसा तान के गाल फुलाकर बायाँ पांव पीछे बढ़ाए। साथ वाले कहें—'यह कौन है?' जवाब दे—'यह कालँगड़ा है।' दाहिने हाथ से कान पकड़कर गाल फुलाकर कहे, 'यह कांनड़ा

1. पढ़ते हुए, 2. गालों, 3. फैलाए हुए, 4. नपे-तुले, 5. आ-जाकर, 6. बिना किसी को जाने-पहचाने, 7. किसी कारण के बिना, 8. पगड़ी, 9. पगड़ी पर बांधने वाला ज़ेवर, 10, माथा, 11. काफ़ी सलाम करने के बाद, 12. माथे से, 13. होठों तक, 14. ठुड्डी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है ।' तिरंगा बनकर कहे यह तिलंग है । बालिश्त भर की लकड़ी दूसरे आदमी को अड़ाकर कहे—यह अड़ाना है । दाहिने हाथ की चुटकी से तारीफ़ करके कहे—यह सोहनी है । नितम्ब ऊँचे करके सर ज़मीन पर रखके कहे यह ग़ारा है । मिट्टी मुंह पर मल के कहे—यह मुलतानी है । कलाबाज़ी खा के कहे—यह नट है । डंडे पर डंडा ज़ोर से मारके कहे—यह खट है ।

अट्ठारहवीं नक़ल–बजरा[1] खेने की

एक आदमी नितम्ब टेक के और डांड लकड़ी के बनाके हाथ बतरीक़े नाव खेने के लेकर मशरिक़[2] रुख[3] बैठे । दूसरा इसी तरह मग़रिब[4] रुख् और दो जुनूबरोया[5] और दो शुमालरोया[6] और तीन बीच में रौपुश्त[7] मिलाकर और मग़रिबरोया आदमी के गले में एक सिरा दुपट्टे का लपेटे और दूसरा मशरिक़रोया आदमी के गले में और बीचवाला एक बड़ी सी छड़ से दुपट्टे के बीच को ऊँचा किए रहे । तासूरते-मस्तूल[8] पैदा हो और हाथों से खेते जाएँ । चूतड़ों से खिसकते जायें और यह चीज़ लय-सुर में गाते जाएँ और ताल में खिसकते जायें—

आस्ताई—बजरा वहीं लगा दे मांझी ।

अन्तरा—इस बजरे में कौन-कौन बैठा ।

हज़रत बेगम नवाब ।

उन्नीसवीं नक़ल—ब्राह्मण नाबीना[9] और उसकी भावज की

एक शख्स गले में तीन-चार तुलसी की मालायें डाले और कुश्का[10] बतौर-हुनूद[11] पेशानी पर खींचे और एक शख्स उसका नौकर रामचीरा नाम बने ।

ब्राह्मण नाबीना आंखें बतौर अंधों के बनाए और धोती बांधे हुए हो । रामचीरा कहे—'महाराज ! चलो गंगा स्नान कर आओ ।' वह कहे—'अच्छा ।' हाथ पकड़कर दो-चार क़दम चलाकर बिठा दे । फिर कहे—'महाराज ! यह गंगा जी हैं । लो स्नान करो ।' वह कहे—'राम-

1. सजी-धजी नाव, 2. पूरब, 3. और, 4. पश्चिम, 5. दक्षिण की ओर मुंह करके, 6. उत्तर की ओर, 7. पीठ से पीछे, 8. इच्छानुसार शक्ल, 9. अन्धा, 10. टीका, 11. हिन्दुओं के समान ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चीरा । यह मोरा छुटकी माला लेव, यह वड़की माला लेव ।' यह कहकर गले से सब माले उतारकर रामचीरा के हवाले करे । फिर खड़ा होकर वतरीक़े पूजा पानी में उंगलियां डुवोकर वड़वड़ाता जाए । राम-राम कहता जाए और चार बूंदें आसमान की तरफ़, चार ज़मीन की तरफ़, चार दाहिनी, चार बाएँ फेंके । बमभोला कहकर गाल फुलाकर नाक पर कलमे की उंगली लम्बी धरकर टूलन और अंगूठा ठोढ़ी तक पहुंचा कर हमहमा वमबम का करे और फिर वैठकर पुकारे—रामचीरा । वह जवाब न दे । तीन चार दफ़ा के पुकारने में जब वह आए तो यह उसकी गर्दन पकड़कर एक लात हवाई मारे और वह उसके क़ाबू से निकल जाए । लात ख़ाली जाए । दो-तीन दफ़ा इसी तरह लातें मारे और वह निकल-निकल जाया करे । फिर पूंछे—भौजी आई । रामचीरा कहे—महाराज आई है । उस वक्त रक्क़ास पेशवाज़ घुंघरू पांव के वजाता हुआ, झम से उसके पास वैठ जाए । वह ब्राह्मण नावीना अंधों की तरह कभी कमर छूकर आह करें और कभी सीने पर हाथ धरके और जब कोई खंखार दे या छींक दे, यह झट से भावज के पास से हाथ भर के फ़ासले पर अलग हो जाए । जब लम्हा दो लम्हा का सुकून हो तो रामचीरा को टाले और कहे कि रामचीरा, वो कहे--हाज़िर महाराज । यह कहे—'दरख्त तले जा । वहाँ से लड़वा मोतीचूर के खाने को ले आ ।' जब वह लड्डू लेने जाए तो यह फिर भावज से वही हरकतें करने लगे और ज़रा से खुटके में अलाहदा हो जाया करे, ताकि तीन-चार मर्तबा यही हरकतें करे—इसके बाद भौजी चली जाए । रामचीरा आए । यह रामचीरा को पुकारे । वह जवाब दे । यह कहे—'मोरी माला ला ।' वह कहे—'लो महाराज । यह छुटकी माला है । यह वड़की माला है ।' आखिर माले पहनकर महफ़िल से चला जाए ।

बीसवीं नक़ल—जहाँगीर बेग नकटे की

नाक पर एक सफ़ेद पट्टी बाँधकर और वे-दामन का अंगरखा पहन कर और पहरी गदके[1] हाथ में लेकर जिस वक्त रक्क़ास नाचता हुआ आए और एक चमड़े के पैंतावे में एक धज्जी की गिरह लगाकर दाहिने वाज़ू पर बांधे और कहे कि अवे दुत[2] इससे और नाच । देखने वाले बांके से तमाचा बारहा कड़क पलट के हाथ तीन दफ़ा नाच कर पहले वाला बांका पहरी गदके फेंककर तम्बाकू वेचने लगे । पुकारकर कहे—'कड़वा तम्बाकू' और महफ़िल से चला

1. पहरे के समय में लेने वाली लकड़ी, 2. और तेज़ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाए । फिर साथ वाले पूछें—'खाँ साहब आपने अंगरखे में दामन क्यों नहीं रखे ।' ठठ्ठा मारकर[1] और गतके की एक चोट रसान से उसके सर पर मारकर कहे कि 'अबे इस वास्ते कि कोई महशर[2] में दामनगीर[3] न हो ।' फिर वह पूछे कि बाजू पर यह क्या बांधा है—फिर एक गतके की चोट धीरे से उसे लगाकर कहे—यह मेरा जौशन[4] है । फिर गाने-बजाने वालों से कहे—'मेरी उंगली जब खड़ी हो, तुम सब खड़े हो जाओ । मेरी उंगली जब औंधी हो, तुम सब औंधे हो जाओ ।' आठ-सात दफ़ा इसी तरह लिटाए-बिठाए और आप ठठ्ठे मारता जाए और एक-एक चोट गतके की सबके सरों पर धीरे से लगाता जाए । फिर पूछे तुम सब क्या गाते हो । वह कहे—'विनती मोरी मान ले ऐसे घर न रह सैंया ।' यह कहे—'बड़चोद तुम्हारी मजाल है कि हमको अपने घर से निकाल दो ।' वह हाथ बांधकर अर्ज़ करें कि यह आपसे नहीं कहते हैं—यह तो एक गाने की चीज़ है । फिर एक-एक गतके की चोट सबके सरों पर धीरे धीरे लगा दे । गाने वाले यही चीज़ गाये जायें—

आस्ताई—मिनती मोरी मान ले ऐसे घर न रह सैंया ।

अन्तरा—सास ननदिया और जिठानिया बात-बात पहनान लें ।

आख़िरकार इसी तरह महफ़िल से दफ़ा हो ।

इक्कीसवीं नक़ल—लौंडे के बरर[5] जाने की

एक मालिक ने एक शोहदे का लौंडा नौकर रखकर नालायन[6] बरदारी[7] की ख़िदमत अता की और फ़रमाया कि जिस वक्त मैं नाच देखा करूँ तो मेरी दोनों जूतियाँ हाथ में लिए हुए मेरे पसेसर[8] खड़े रहा करो । उसने कुबूल किया । मालिक नाच देखने को बैठे । नाच होने लगा । लौंडा नंग-धड़ंग जूतियां पतियादों की बनाकर सर पर लिए हुए गाल फुला-फुलाकर मालिक की नक़लें करने लगा । कभी लात मारने को पांव उठाने लगा । कभी पतियादों को देखकर बड़बड़ाने लगा । आख़िरकार ऊँघा और ऊँघकर मालिक के सर पर गिरा । इसके बाद मालिक के गले में दोनों टांगें उलझाकर आगे गिर गया । मालिक तो छूट गए । उसके बररने का यह आलम हुआ । ऐसा जमीन पर पड़ा था । अगर एड़ियाँ ज़मी पर लगाते थे तो सर से मयगर्दन ऊँचा हो जाता था । अगर पांव छोड़ देते थे तो सर जमीन पर और पाँव

1. ज़ोर से हंसना, 2. क़यामत के दिन, 3. दामन न पकड़ लें, 4. कवच, 5. ऐंठ जाना, 6. जूते, 7. उठाना-धरना, 8. सर के पीछे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जमीन से ऊँचे हो जाया करते थे। अलमुख्तसर[1] जब साथ वालों ने चिल्लाकर ग़ुल[2] मचाया इस तरह से कि—अबे लौंडे। अबे लौंडे। अबे लौंडें। उस वक्त लौंडे होशियार हुआ और महफ़िल से भाग गया।

बाईसवीं नक़ल—बन्दर बनने की

एक डुगडुगी जैसे बन्दरवाले बजाते हैं तमाशे के वक्त हाथ में ले और उसे बजाता जाए और दूसरे आदमी को इस तरह बंदर बनाए कि बानात[3] की लम्बी टोपी तंग[4] फुन्ना लगी हुई, जैसे कि बन्दर को तमाशे के वक्त पहनाते हैं—उसको पहनाएँ। एक कुर्ती पालवाफ़[5] सफ़ेद नयनसुख[6] के अस्तर के पैवन्दों की वो उसको पहनाएं कि जिससे सीना सारा खुला रहे और एक जांघिया पहनाएं और एक लकड़ी हाथ में देकर कहे कि इसे पेट पर रखो। इसका एक-सिरा दाहिने शाने पर दाहिने हाथ से और दूसरा बाएँ पहलू पर बाएँ हाथ से पकड़े और क़द छोटा करके पाँव निहुड़ाकर बन्दर की चाल चले और कभी लकड़ी फेंक दे और दाहिना पांव किसी और चीज़ की तरफ बढ़ाकर पांव की उंगलियों को हरकत दे। कभी किसी तरफ़ खुर-खुर करे और कभी बायें हाथ की उंगलियों से जल्दी से पेट खुजा ले और कभी ज़मीन का दाना चुन के जल्दी जल्दी मुंह में रखता जाए और कभी जम्हाई लिए जाए और कभी बनाने वाले के ग़िर्द चारों हाथ पांव से फिरे और टहले और बनाने वाला उसकी गर्दन में एक रस्सी बांधे और कहे—सलाम कर ले, सलाम कर ले। यह जल्दी से मक्खी उड़ाने की तरह सर पर हाथ रखके उतार ले और नचाने वाला कहे—'मियाँ का जोड़ा लाओ-मियाँ का घोड़ा लाओ। मियाँ का घोड़ा लाओ।' यह कहता जाए और गठरी उनके कपड़ों की खोलता जाए। जब टोपी निकाले तो कहे कि भाई कोई छींकना पादना नहीं, जिस वक्त टोपी पहनाए तो कोई छींक दे। बन्दर जल्दी से टोपी उतारकर फेंक दे। इसी तरह चंद मरतबा इत्तफ़ाक हो। आखिरकार तमाम जोड़ा कपड़े का पहनाए और कहे—छोटे अन्ना के देवर, बड़े अन्ना के खसम, चलो सफर को चलो। वो उसी तरह लकड़ी पीठ पर थाम के कोतह कद करके टांगें चीर के दो-तीन दफ़ा नाचने वाले के ग़िर्द फिरे और बैठ जाए फिर लेट जाए—चारों हाथ-पांव फैलाकर नचाने वाला कहे—मियाँ के गोली लगी मियाँ के गोली लगी—फिर इसी तरह से महफ़िल से बाहर हो जाए।

---

1. संक्षिप्त यह कि, 2. शोर, 3. बिनी हुई, 4. छोटा, 5-6. कपड़े का नाम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेईसवीं नक़ल—बनिये और बांके की चौसर खेलने की

एक बनिया बने और दूसरा बांका। साथ वालों में से एक शख्स उठकर सरे महफ़िल यह सुख़न[1] ज़बान पर लाए कि बनिए की और बांके की यूं चौसर खेली जाती है। बनिए तो डरपोकने होते हैं। जब तीन काने आयें, बनिया कहे—ख़ां साहब, तीन काने हैं। बांका कहे—नहीं पौ बारह हैं। बनिया कहे—ख़ां साहब चींती करते हो। तीन काने हैं। बांका कहे—अबे दुत पौ बारह ही सही। इस नक़ल में एक रुमाल को चौसर क़रार दे। आख़िरकार साथ वाले कहें कि हमारे मकान पर से दोनों साहब उठ जाओ। कोतवाली प्यादा आनकर धन्ना देगा तो हम मुफ्त कशाकश[2] में पड़ेंगे। यह कहकर दोनों को उठा दे।

चौबीसवीं नक़ल—सालगिरह में बुलाने की

एक बीबी ने एक देहाती नौकर को एक बीबी के पास खाना होने का हुक्म दिया और कहा—'तू जा छोटों को दुआ और बड़ों को सलाम कहना और कहना मिस्सी, काजल, तेल-फुलेल से बन-संवर रहना। कल मेरे मियाँ की सालगिरह है। हम कहार भिजवाएँगे, वे तुमको ले आएँगे।' यह नौकर उन बीबी के मकान पर आया और पुकारा। बीबी देवढ़ी पर आयीं। कहने लगीं—क्या है। नौकर कहने लगा कि हमारी बीबी ने भेजा है। सलाम कहिन हैं, दुआ मांगिन हैं और कहिन हैं नचनी-खुसरनी दांत-निकसनी कर रखियो। कल मियाँ की निकलेगी गांठ। खुदा के क़हर आयेंगे लिए चले जाएँगे। यह सुनकर बीबी ने बाल भी खसोटे, सर भी नोचा, रोयी-पीटी। यह कहकर कि अफ़सोस कल ख़ुदा का क़हर ले जाएगा। आख़िरकार सही दरयाफ्त हुआ। नतीजा यह हुआ कि खुदा पराए देश की ज़बानों की नक़ल न करवाए वरना ऐसा ही होता है।

पच्चीसवीं नक़ल—सतरिख़ के मेले में जाने की

छह-सात आदमी छड़ियाँ हाथ में लेकर उसमें कपड़े की धज्जियाँ बांधें और आगे-पीछे यह गाते-चलें—

---

1. बात, 2. परेशानी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिसरा अल-मुसन्निफ़[1]—'मुसलमानों की सुत रखे खुदा उस वहम सतरिख पर।'

छोटी-छोटी डफ़लियां हाथों से बजाते जाएँ और तीन-चार चक्कर में मेले में पहुंच जाएं और वहाँ मुल्लाजी आपस में झगड़ा करें। एक कहे—मैं जियारत[2] करने जाऊँगा। मुझे क्या देते हो। यह कहे—सेर भर चावल, अढ़ाई सेर गुड़। दूसरा कहे—मुझे क्या देते हो। वह कहे—आधा सेर चावल डेढ़ पाव तिल। तीसरा कहे—मुझे क्या दोगे। वो कहे—पांच सेर भर चावल। अलग़रज़ इसी झगड़े में महफ़िल से बरख़ास्त कर दिए जाएं।

छब्बीसवीं नक्ल—छेलबदारों की

तम्बूरा और सितार हाथों में लेकर दोतारे पर यह चीज़ गाएं और कलाबाज़ियां खाते जाएं—

अस्ताई—मैं अपने सब मतालिब सैय्यदे अबरार को सौंपूं।

सत्ताइसवीं नक्ल—लखनऊ की भटियारिनों की लड़ाई की

छह-सात औरतें इकठ्ठा हों। कोई छाज हाथ में ले, कोई सूप ले, कोई चलनी और कोई कफ़गीर ले, कोई काग़ज़ का छोवड़ा बनाकर एक रुख़ काला कर दे और दूसरा सफ़ेद रखे। कोई लुकटी ले और एक मुसाफ़िर बने।

उस मुसाफिर को एक अपनी तरफ़ घसीटे और कहे—मियां मुसाफ़िर मेरे यहां ठंडी छांव नीम की और ठंडा पानी है।

दूसरी कहे—तुम मेरे यहां चलो।
तीसरी कहे—मुसाफ़िर मेरा।
चौथी कहे—तुम सब झक मारतियां हो। यह मेरा है।
पांचवीं कहे—देखूं तो तुम क्योंकर ले जाती हो।
छठी कहे—हाथ भर का डंडा कर दूं जो उसे छुए।
सातवीं कहे—मस्तानियों क्या मजाल है, जो इस मुसाफ़िर को कोई हाथ लगाए।

---

1. लेखक द्वारा लिखी गई पहली पंक्ति, 2. दर्शन करने।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आख़िकार नौबत गाली की पहुंची तो यूं कहे—चूतड़ हवाल ।

एक नीम की टहनी हिलाती जाए और कहे—तेरा यह हवाल ।

दूसरी कागज के चोमड़े को पांचों उंगलियों में पहन कर सियाह सफ़ेद दिखाती जाए, सुबह-ओ-शाम बनाती जाए और कहे—तेरा यह हवाल । तीसरी छाज बजाये और यही कहे ।

चौथी चलनी बजाएऔर यही कहे । पांचवीं कफगीर नचाए और यही कहे ।

छटी लुकटी हिलाए और यही कहे और लड़ती जाए । यहां तक कि मुसाफ़िर बेचारा इस लड़ाई से डरकर सर पकड़ कर वहां से भाग जाए ।

अट्ठाइसवीं नक़ल—गोगामीर के मेलेवालों की

पांच-सात आदमी कपड़े की आहिनी[1] जंज़ीरें बल देकर बनाएं और अपने बदन भर में घुमा-घुमा कर मारते जाएं और पांच सात आदमी डोरो बजाते जाएं और यह गाते जायें ।

देवी चलत भवनियां मेरी अवलामान ।
कृपा करो, राम सेवा मेरी अवलामान ।
लड़वा ले बलवासिना मेरी अवलामान ।

पांचों भाई और जितना पतली आवाज़ बनाकर नाक से गाएं, उतना ही उनके मज़हब में हुस्न है । कैसा ही परछत्ता जवान हो मगर यह तक़ल्लुफ है कि आवाज़ मिनमिनाने वाली हो ।

उन्तीसवीं नक़ल—हमसाया के सावन गाने की और दूसरे हमसाए के ख़फ़ा हो जाने की

शिद्दते-बारिश[2] में एक हमसाया ग़रीब की दीवार गिर पड़ी । नुक़सान हुआ । दूसरा हमसाया गाने लगा—'लखमनिया बूंदन बरसे' । वह गालियां देने लगा कि मेरा तो नुक़सान

---

1. मज़बूत, 2. अत्यधिक बरसात ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कसीर[1] हुआ और तू लाख मन की बूंदें बरसाने से अब भी बाज़ नहीं आता। वाह-वाह, बकरे की तरह में-में, मुर्ग़ की तरह रें-रें। अब मैं मारने लगूंगा—चल चुप।

तीसवीं नक़ल—भांडों की और गवईया के कुत्ते भौंकने की और नायिका की कुतिया के भौंकने की

भांड का कुत्ता यों भौंकता है—दुन हक़ सादी अफ़-अफ़। गवैइए का कुत्ता यों भौंकता है। अलफ़ाज़ आलाप में और हर राग में—रैना न ता त ना ना नोम ताअफ़ ताना तोम तना तोम अफ़ अफ़ अफ़।

नायिका की कुतिया यों भौंकती है—चित पड़ जाए और चारों हाथ-पांव हिलाती जाए और कहे—

तुम पैसा न दो कौड़ी न दो, यूं ही मुफ्त मेरे पास रह जाओ—अफ़ अफ़ अफ़ अआ अआ अआ।

इकतीसवीं नक़ल—एक नौची[2] के कुत्ते के सूंघने के वक्त यार के तसव्वर मे सोते में बर्राने की

एक नायिका की नोचीमुवतजुल[3] घर का काम करके पतीलियां मांज के खाना पका के यार[4] के तसव्वुर[5] में वहीं चूल्हे के पास सो गई। एख्तियार[6] इतना न था कि अपने पास से कुछ ख़र्च करके उसको बुलाती और मज़े उड़ाती बल्कि नायिका[7] की क़दफ़न[8] थी कि उसकी सूरत भी देखने न पायी। यह तो उस यार नायाफ्ता के ख्याल में पड़ी सो रही थी। एक बाज़ारी लेंडी कुत्ता जब पतीलियां चाट चुका तो उसके मुंह को भी सूंघने लगा, उसका हाथ जो उसके कानों पर पड़ा तो बर्राने लगी। कहने लगी कि वाह आज तो लटपटी पगड़ी बांधकर आए हो। कुत्ते ने ख़फ़ा होकर एक पंजा मारा। नाखूनों पर जो उसका हाथ पड़ा, कहने लगी—वाह, आज दसों उंगलियों में मिजराफ़[9] पहनकर आए हो। कुत्ते ने पलटकर टांग

---

1. बड़ा, 2. तवायफ़, 3. कुल, 4. प्रेमी, 5. ख्यालों, 6. बस में, 7. वेश्या, 8. से डरती थी, 9. सितार बजाने का टुकड़ा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उठाकर उसके मुँह में मूत मारा। एक दफ़ा विलबिलाकर उठकर खड़ी हुई और कहने लगी—वाह-वाह-वाह आप तो नहीं आते हैं, कुत्तों को छोड़-छोड़ देते हैं।

बत्तीसवीं नक़ल—अंग्रेजी ज़बान की

एक शख्स कहे कि अंग्रेज़ी ज़बान मेरी समझ में नहीं आती। दूसरा जवाब दे फिर क्या मालूम होता है। यह कहे कि मुझे तो यह मालूम होता है अंग्रेज़ों के बोलने के वक्त कि ख़ातम बंदे की छत में चूहे खड़खड़ाते हैं।

तेंतीसवीं नक़ल—दो फ़ाज़िलों के मिजाह की

एक फ़ाज़िल[1] का नाम मुल्ला बाक़र था और दूसरे का मुल्ला ताहिर। दोनों राह में मिले। ताहिर ने कहा--सलाम वालेकुम बाक़र बक़रसी[3] मुस्तक हैं। मुल्ला बाक़र ने जवाब में सलाम देकर कहा—फ़िलवाक़े[4] वही बक़र कि फुजला[5] जिसका ताहिर[6] है। वह अपने राह पर चले गए और वह अपनी राह पर।

चौंतसवीं नक़ल – एक मुग़न्नी[7] के बंदूक़ की आवाज़ से डरने की

एक गवैय्ये से कहा—तुम्हारे सामने बंदूक छोड़ें। उन्होंने कहा, ज़रा ठहर जाइए। मैं कानों में दोनों उंगलियां दे लूं। जब दोनों उंगलियाँ दोनों कानों में दे चुके तो चिल्लाए—चल छोड़ दे।

पैंतीसवीं नक़ल—हवा के मोंढे पर बैठने की

दीवार से पीठ लगाए और इतना कोताह हो जितना मोंढे पर बैठने से छोटा हो जाए और दाहिना पांव बायें पांव पर धर ले और अगाड़ी चादर से ढांक दे। साफ़ मालूम होगा कि मोंढे पर बैठा है।

---

1. विद्वान, 2. मज़ाक़, 3. बकरे जैसी, 4. इस समय, 5. टट्टी, 6. पवित्र, 7. गायक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छत्तीसवीं नक़ल--तबीब के ऐबों की

तबीब में भी खुदा ताला ने कई तरह के ऐब पैदा किए। अगर ये ऐब न होते तो क्या खूब होता और जिसमें ये ऐब नहीं वह तबीब नहीं और अब तो ये ऐब हुनर की जगह समझे जाते हैं। यह कहना चाहिए कि जिनमें यह हुनर नहीं है। वह तबीबपने से ख़ाली है और आप देख लीजिए कि यह हुनर बिलफ़ेल[1] तबीबों में मुरव्वज[2] हैं। हमने तबीबों में. देखे या घोड़ों में देखे। पहले—कमखोर, कमखोर के मायने क्या? सेर भर का पुलाव खा गए बाद उसके पेट बजाकर कहते हैं—ज़रा मेदा कड़ा रहा। दूसरे शबखोर क्या मायने—जब तक लालटेन साथ न चले हकीम साहब को सूझता नहीं। तीसरे कमरी, कमरी के मायने ये हैं, बे-तकिया हकीम साहब बैठ नहीं सकते। चौथे---कोहना लंग—वह क्या है, वे जरीब लिए हकीम साहब चल नहीं सकते।

फसल सातवीं चंद नक़लों में

हबशी की टोपी की नक़ल

एक बादशाह ने एक औरत को लाख रुपयों के क़ीमत की एक टोपी इनायत करके इरशाद किया कि तमाम दुनिया में जो शख्स खूबसूरत हो, उसको यह टोपी पहनाकर मेरे सामने ले आ। वह औरत तमाम कलमरविसाय[3] में ढूंढती फिरी। कोई आदमी खूबसूरत

---

1. अवश्य ही, 2. विद्यमान, 3. दुनिया।

नोटः फ़सल छठी में लेखक ने कुछ ऐसी नक़लों का वर्णन किया है जो नक़लें कम और सच्ची घटनाएं अधिक हैं। कलकत्ते में लेखक ने यह घटनायें अपनी आंखों से देखी थी। इनघटनाओं की नक़ल करना असम्भव है। उनमें अश्लीलता का पुट अधिक है। लेखक ने बेलाग बिना कुछ छुपाए लिख दिया है। इससे उनकी सफ़ाई पसन्द तबियत का अन्दाज होता है। पर उसे यहां पर दिया जाना सम्भव नहीं है। अतः छोड़ा जा रहा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसकी निगाह में न समाया। आख़िरकार अपने फ़रज़न्द[1] के सर पर जो हब्शी और निहायत[2] किरयामंज़र[3] था, वह टोपी पहनाकर बादशाह के सामने ले आई और अर्ज़ की—बादशाह सलामत, मेरी नज़रों में इससे बढ़कर ख़ूबसूरत कोई न ठहरा। ठीक ही कहा है किसी ने कि माँ की नज़रों में औलाद से ज्यादा ख़ूबसूरत और कोई नहीं होता।

अगली नक़ल—कुर्सी के बे-अक्लों की

कुर्सी एक क़स्बा है क़स्बाते लखनऊ में, वहाँ के साकनीन[4] निहायत कमअक्ल होते हैं और वहां जो फिलजुमला[5] अक्ल रखता है, उसको लाल बुझक्कड़ कहते हैं और अमूर[6] मुश्किल में उसकी तरफ़ खंजू[7] करते हैं और उससे फ़तवा[8] लेते हैं। एक दिन मिट्टी पर ऊँट के पांव का निशान देखकर सब बाशिन्दे[9] वहां के हैरान और ताज्जुब में हुए और आपस में मशविरा करने लगे कि यह किस जानवर के पांव का निशान है। हरगिज़ बाब-ए-मक़सद[10] वा[11] न हुआ। लाचार होकर लाल बुझक्कड़ को लाए और उनसे कहने लगे कि हम लोगों की समझ में नहीं आता कि ये किस जानवर के पांव के निशान हैं। लाल बुझक्कड़ ने घंटा दो घंटा ख़ूब ग़ौर करके जवाब दिया कि तुम सब न घबड़ाओ। मैं पहचान गया।

जाने सब कुछ लाल बुझक्कड़ और न जाने कोय।
पांव में चकिया बांधकर कहीं हंस न कुद्दा होय।

अगली नक़ल—उन्हीं बेवकूफों की

लम्बे क़द की एक बहू ब्याह कर लाए। दरवाज़ा घर का छोटा था। लम्बी दुल्हन देखकर सब सोच में पड़ गए। सबकी यह सलाह हुई कि थोड़े-थोड़े पांव बहू के कम कर डालो। बात कुछ बनी नहीं। औरों ने कहा—बड़े बेवकूफ़ हो भाइयों, दरवाजा बुलन्द करो। आख़िर दरवाजा ऊँचा किया गया, और तब बहू दाख़िले रवाना[12] हुई। यह किसी ने न कहा कि बहू झुककर निकल जाओ।

---

1. बेटे, 2. अत्यधिक, 3. बदसूरत, 4. वासी, 5. यदि, 6. कार्य, 7. झुकते हैं, 8. सलाह, 9. वासी, 10. उम्मीद का दरवाज़ा, 11. खुल न सका, 12. घर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अगली नक़ल—राक़िम-उल-हुरूफ़[1] के बड़े जद्दे अमजद[2]-वज़ीरे-अनवर नवाब सआदत अली ख़ाँ जन्नत-आरामगाह[3] की

मेरे जद्दे अमजद वज़ीरूल मुमालिक सआदत अली ख़ां जन्नत आरामगाह, ने जो कुर्सी के साकनीन की ऐसी-ऐसी नक़लें हिमाक़त[4] और बे-अक़ली की सुनीं, फ़रमाया सब झूठ है। ज़ी-अक़्लों[5] को फ़हम[6] कहीं ख़ता[7] नहीं करता। ख़ुद्दाम[8] ने अर्ज़ की—अल् अम्र फ़ौक़ुलअदब मगर ख़ुदबन्दे-नेयमत पीरोमुर्शिद, वहाँ की हवा को ख़ुदा ने ऐसी ही तासीर[9] बख़्शी है। फ़रमाया—मैं ख़ुद जाऊँगा। तासीर का क़ायल नहीं हूं। यह फ़रमाकर घोड़े पर सवार होकर बेहश्मोख़दममुर्ज़रिद[10] तशरीफ़ ले गए। जब चन्द क़दम कुर्सी की राह में रह गये ख़्याल आया शायद यहाँ की बवा[11] मुयस्सर[12] न हो जाए। टोपी बग़ल में दबाकर सरपट घोड़ा डाल दिया। जब कुर्सी की हुदूद[13] से निकल गए टोपी सर पर रखकर फ़रमाया कि लाहौले-वला-कुव्वत! इल्ला बिल्लाह! पहली बेवकूफ़ी यह हुई कि अपनी दांसियत[14] में वहाँ की हवा से परहेज़ किया। मगर सरपट घोड़ा डाल के करोर चंद हवा ले ली और दूसरे सरबरहना[15] करके दिमाग़ को भी हवा का आशना[16] किया।

बेशक़-ओ-शुबह यहाँ की हवा आदमी को लाए-अक़्ल[17] करती है।

अगलीं नक़ल—ख़ूबशुद के बैल नबूद की नक़ल

एक बादशाह ने एक क़स्बे में गुज़र किया। वहाँ के मुलकी मौलवियों ने बाहम[18] मशविरा[19] किया कि बादशाह के दाख़िले की नज़्र[20] क्या देना चाहिए। किसी ने कहा कुछ, किसी ने कहा कुछ। आख़िर यह तय क़रार पाई कि पंद्रह-बीस टोकरी बेल की नज़्र ले जाना चाहिए। फिर यह भी राय बदलकर यह क़रार पाया कि पचास टोकरी प्याज़ की बतरीक़ नज़्र दरे दौलत-सराय-बादशाही[21] पर ले जाना चाहिए। अलमुख़्तसर पचास टोकरे प्याज़ के लेकर वह दो-तीन मौलवी दरे दौलत सराय बादशाह पर हाज़िर हुए। बादशाह उस वक्त शिकार खेलने

---

1. यह शब्द लिखने वाला लेखक, 2. पड़दादा, बड़े दादा, 3. स्वर्गवासी, 4. मूर्खता, 5. बुद्धिमानों, 6. ज्ञान, 7. ग़लत, 8. सेवक, 9. प्रभाव, 10. स्वयं, 11. बीमारी, प्रभाव, 12. लग न जाय, 13. सीमा, 14. अपने आप में ही, 15. नंगा सर, 16. दोस्त, 17. बुद्धिहीन, 18. आपस, 19. सलाह, 20. तोहफ़ा, 21. बादशाह जहां आकर ठहरे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को गए थे । मलका[1] मौजूद थीं । मलका से अर्ज़ की गई कि फ़लां क़स्वे के मौलवी पचास टोकरे प्याज़ की नज्र लाए हैं । मलका बहुत हंसी और फ़रमाया—सच है । बादशाह के क़ाबिल और लायक़ यही नज्र थी । उनको मय नज्र सामने हाज़िर करो । अलमुख्तसर मय टोकरों के वह तीनों मुलकी मौलवी बमुश्क़िल दराज़[2] मलका ने फ़ौरन ख्वासों को हुक्म दिया कि उनकी दाढ़ियों का एक-एक बाल नोच डालो और यही प्याज़ उन पर खींच-खींचकर और तान-तान कर मारो । ख्वासों ने हसबे-हुक्म[3] मलका, एक सायत में तीनों की दाढ़ियों के बाल नोचकर उनके गाल चूतड़ों की मानिंद साफ़ और शफ्फ़ाफ़[4] कर दिए और मनबाद[5] प्याज़ की मार पड़ने लगी । जब प्याज़ की चोट लगती थी तो उस वक्त कसरते-ईज़ा[6] से एक दूसरे से कहता था–'बिरादर[7] खूबशुद[8] कि बेल नबूद[9] यानी अगर बेल नज्र को लाते तो जान न बचती, तमाम हो जाती ।' थोड़े अरसे में बादशाह शिकार पर से तशरीफ़ लाए । मलका ने सारी कैफ़ियत बयान फ़रमाई । बादशाह ने दांतों के नीचे उगंली दबाई और फ़रमाया कि मलका साहिबा तुमने यह अम्र बहुत नामुनासिब किया । रियाया[10] मुझको क्या कहेगी । उस क़स्बे के और बाशिंदे[11]ब-दुआए-बद[12] मुझको शाम-ओ-सहर[13] याद करेंगे । अब मुनासिब यही है कि जब तक उनकी दाढ़ियाँ मुकम्मिल न हो जाएँ तब तक यह अपने क़स्बे को न जायें । अलग़रज़ जवारेशाही[14] में उन्हें रहने का हुक्म हुआ और पांच ख्वानख़ासे के तआम[15] के सुबह को और पांच शाम को मोअय्यन[16] और मुक़र्रर[17] हुए । इन मौलवियों को जो घर बैठे तरह-तरह की नेयमतें[18] मिलने लगीं और यह भी जान चुके थे कि ता-बर-आमदो-तक़मील-रेश[19] इस नेयमत के भेजने और खाने का हुक्म लगा हुआ है । जब तक़मील रेश हो चुकेगी तो ख्वान तआम भी मौकूफ़[20] हो जायेंगे और हमवतन की तरफ़ रवाना किए जायेंगे । बाहम[21] यह मशविरा और सलाह हुई कि दाढ़ियां निकलने न दीजिए वरना नेयमतें हाथों से जाती रहेंगी । अजबसके[22] चाश्तखोर[23] और लज्जतयापता[24] हो चुके थे । जब खूटियां दाढ़ियों की

---

1. महारानी, 2. बहुत कठिनाई से, 3. आज्ञानुसार, 4. चिकने, 5. इसके बाद, 6. अधिक पीड़ा, 7. भाई, 8. अच्छा हुआ, 9. न हुआ, 10. जनता, 11. वासी, 12. श्राप से, 13. सुबह व सांझ, 14. शाही महल, 15. खाने के, 16-17. दिए जाने लगे, 18. अच्छी चीज़ें, 19. जब तक दाढ़ी न निकल आए, 20. समाप्त, 21. आपस में, परस्पर, 22. क्योंकि, 23. अच्छे भोजन के लालची, 24. स्वाद जानी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बढ़ती थीं, फ़ौरन मोचुनों से साफ़ कर दिया करते थे। यहाँ तक कि दो-तीन महीनों के बाद बादशाह ने जो दरियाफ्त फ़रमाया तो तीनों की वही शक्ल अव्वल पाई।

अलमुसन्निफ़ मतला–ढप नहीं सकता बदने आरज़ू,
तंग रहा पैरहने[1] आरज़ू।

अगली नक्ल–मल्लाह् और मल्लाहिन के इश्क और सवाल-ओ-जवाब की

एक मल्लाह् का छोकरा सर पर खुड्डू हाथ में खेवा दरिया के किनारे खड़ा हुआ था। एक मल्लाह् की छोकरी मर्द के वेश में वहां आकर उस मल्लाह् के छोकरे से सवाल करे कि तू मुझको पार उतार दे। इस नक़ल में एक चादर फैलाकर चार आदमी चारों कोने पकड़-कर दरिया बना लें।

मल्लाह् की छोकरी इस छोकरे से मुख़ातिब होकर यह दोहा पढ़े—

सुन पुतवा मल्लाह् के मोहे उतारो पार,
हाथ का दूंगी कांगना और गले का दूंगी हार।

छोकरा—ना हाथ का कांगना और न गले का हार
रात बसेरा यहीं लो तो फ़ज्र[2] उतारूं पार।

छोकरी—न दूं हाथ का कांगना और न गले का हार,
मैं बिटिया मल्लाह् की जो तैर के उतरूं पार।

छोकरा—एड़ी तेरी चौधुवाती लम्बे तेरे केस,
किस रसिया ने रस लिया जो किया मर्द का भेस।

छोकरी—ससुर हामरे आंगना और स्वामी हैं परदेस,
गाड़ी के दो बैल हिराने किया मर्द का भेस।

---

1. पहनावा, 2. प्रातः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब छोकरी बहुत मिन्नत और समाजत करे तो छोकरा रहम करे और कहे—'तेरा कछना तो न दूंगा । यूं ही पार किए देता हूं ।' यूँ यह कहकर और उसका हाथ पकड़कर दरिया किनारे ले जाए ।

छोकरी दरिया का पाट देखकर डर जाए और ठुमरी, ताल-सुर-भाव के साथ ज़ुबान पर लाए ।

आस्ताई—राम कैसे पार उतरें
क्या करूँ कुछ बन नहीं आता ।

पहला अन्तरा—लप्पा-झप्पा को वल्ली अपने ना कोई गुन खींचनहारा,
पवन चलत पुरवइया उछलत मोरा जियरा ।
मझधार में कुछ मगर-मगर कुछ तैर-तैर
कुछ देख-देख उन सुन कहिए ।

दूसरा अन्तरा—बड़ी देर से आई किनारे,
बैठ रही मैं तुमरे सहारे,
अपनी मौजों की लाव-नोर यह कहा करिए ।

यह ठुमरी गाकर छोकरी डरकर कहे, आज नहीं, कल पार उतरूँगी ।

फ़सल आठवीं

शुआबदे[1] और लतीफ़े वग़ैरा में ।

छल्ला बूझने के अल्फ़ाज़

जिस मुट्ठी पर दस का लफ़्ज़ पड़े, उस पर छल्ला होगा । एक पर अड़ंग कहे, दूसरे पर

1. पहेली ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़ंग कहे, फिर तीसरी दफ़ा तूती जवरजंग कहे, फिर माई जी का थान कहे, फिर खेलो चौगान कहे, फिर हरिया कहे, फिर हरबस कहे, फिर यह नौ कहे—फिर यह दस कहे। मजमूअन[1] यह लफ़्ज़ हैं—अड़ंग, बड़ंग, तूती जवरजंग, माई जी का थान, खेलो चौगान, हरिया, हरवस, यह नौ, यह दस।

शुआबदे—कपड़े की गुड़िया बनाकर रखे। और उसकी उंगली में अपना छल्ला पहना दे और शख्स को पोशीदा[2] उसी मजमे में मुक़र्रर करे और उसे यह समझावे—जो कोई इस गुड़िया के हाथ से छल्ला उतारे तो उसे पहचाने रहना और उसकी क़सम खाने के बाद तुम क़सम खाना। और सबसे कहे कि जो कोई इस गुड़िया के हाथ से छल्ला उतारेगा मैं बता दूंगा। उस वक्त मुन्तज़मीन[3] लामुहाला[4] कहेंगे या तो तुम यहां से अलग हो जाओ या तुम्हारी आंखें हम बंद किए रहेंगे। उस वक्त आँखें बंद करवाने पर राजी हो जाए। जब आँखें खुलें तो कहे कि मैं गुड़िया से पूछता हूं कि किसने इसके हाथ से छल्ला उतारा है। यह कहकर गुड़िया को उठाकर अपने दाहिने कान के क़रीब ले जाए और दो एक दफ़ा ख्वामाख्वाह गर्दन हिलाए जैसे किसी की बात का जवाब देते हैं और फिर गुड़िया के सर पर दो एक धपें लगा दे और पुकार कर कहे कि गुड़िया कहती है कि सब हाज़रीन व नाज़रीन व तमाशबीन हाजिरूल वक्त मेरे सर की क़सम खाए और मेरे सर पर अपने-अपने हाथ ला-लाकर धरें जो झूठी क़सम खाएगा, उसको मैं पकड़ूंगी। बस जिस वक्त कसमें होने लगें तो हर एक इस तरह से क़सम खाए कि गुड़िया तेरे सर की क़सम हमने छल्ला नहीं लिया और इकट्ठा क़समें न खायें बल्कि ठहर-ठहर कर एक के बाद दूसरा और जो लोग जल्दी-जल्दी दस्तअंदाज़ी करें और कुछ शुबह उसको और हमराज़ को वाक़ए हो जाए तो फिर गुड़िया को उठाकर कान के पास ले जाकर कलेमात[5] मरकोमावाला[6] अदा[7] करे और चोर की क़सम के बाद हमराज़ बमुजिब-तालीम[8] क़सम खाए। जब क़समों से अनफ़िराग़[9] हासिल हो फिर गुड़िया को उठाए और कान के पास ले जाकर बतरीक़े अव्वल सर हिलाए और धपें लगाए और कहे—'आह, अफ़सोस, ऐ गुड़िया, चुप रह। मुझे यक़ीन नहीं आता कि फ़लां साहब ऐसी हरकत नाशाईस्ता[10] करेंगे। जब चोर अपना नाम सुनेगा उसी वक्त हंसकर छल्ला फेंक देगा'। सब ताज्जुब करेंगे और अगर सबहों

---

1. कुल, 2. छुपा दें, 3. प्रबन्धक, 4. आप ही, 5. वाक्य, 6. पूर्वोक्त, 7. दोहरायें, 8. जैसी की शिक्षा दी गई है, 9. घुट्टी, 10. भद्दी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने हमराज़ को ही छल्ला दिया यह कहकर कि तुम क्यों नहीं लेते हो तो क़सम खाने के वक्त हमराज़ सबसे पहले क़सम खाए । मगर शर्त यह है कि चोर उस महफ़िल से और जगह न जाए ।

दूसरा शुआबदे—कहे कि इस गुड़िया का सर-पांव कमर जो कोई छुवेगा मैं बता दूंगा और हमराज़ को समझा दे कि जो कोई इस गुड़िया के इन आज़ाए-मुक़र्रिरा[1] को छुए मेरी आंखें खुलने के वाद तू अपना वही अज़ो[2] खुजा लेना और लोगों से कहे मेरी आंखें वंद करो। जब आंखें खुलें तो उसी लाग से पहचान ले और बता दे और उसका हमराज़ दूसरा शख्स वही अज़ो खुजा लिया करे । अगर किसी ने गुड़िया का सर छुआ यह अपना सर खुजा ले । अगर किसी ने कमर छुई, यह कमर खुजा ले । अगर किसी ने पांव छुए तो यह पांव खुजा ले ।

तीसरा शुआबदे—छह इलायचियां छोटी । दो मुंह के अंदर ज़बान के नीचे छुपा ले और चार को सबके सामने लाए और कहे कि मैं वाएँ हाथ की रग से हथेली में इलायचियां दौड़ा देता हूं । यह कहकर दो इलायचियां कफ़े-दस्तरास्त[3] में लेकर सबको दिखा दे और दो इलायचियां ओठों में दवाए और सबको दिखा दे । वाद उसके बायां हाथ होठों पर ले जाकर तीन-चार दफ़ा इस चुस्ती और चालाकी से फेरे और घुमाए कि सब लोग उस हाथ फिराने की तरफ़ मुतव्वजे[4] हों । यह उसी हाथ में दो होंठ वाली और दो ज़ेरेज़बान[5] वाली मिलाकर चार कर ले और मुट्ठी बंद रखे और तान दे । दाहिने हाथ की मुट्ठी बायें हाथ के शिकम[6] मुरफ़िक़[7] पर, जहाँ से फ़फ़क़ खुलती है, रखकर और ओठ लगाकर दाहिने हाथ वाली दोनों इलायचियां चुस्ती से मुँह में लेकर और ज़बान के नीचे रखकर दो-एक दफ़ा दाहिने हाथ से वाएँ हाथ के शिकम-मुरफ़िक़ को थपकी देकर कहे कि चल जा जा जा और कुछ झूठ-सच लोगों के दिखाने के वास्ते पढ़ता जाए और बाद उसके बायें हाथ की मुट्ठी खोलकर चार इलायचियां सबको दिखा दे । जिस वक्त चारों इलायचियाँ मुँह में रखकर ज़ेरे ज़बान वाली समेत छहों चबा जाए । इसलिए कि मुबादा[8] कोई मुंह का ज़ायज़ा मांगे[9] तो शर्मिन्दिगी हासिल न हो । मगर छहों इलायचियां एक ही सांचे की सरमों[10] भी कमोवेश न हों ।

---

1. अंगों को, 2. अंग, 3. दाहिने हाथ की हथेली में, 4. आकर्षित, 5. ज़बान के नीचे, 6. पेट, 7. उसी ओर 8. इसके बाद, 9. देखना चाहे, 10. ज़रा भी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौथा शुआबदे—इतना बड़ा संदूक़ चौबी बनाए जिसके अंदरखुद बैठ सके और चार जानिबों[1] में से जो जानिब उसके ज़ंजीरो-क़ुफ़ल[2] के मुक़ाबिल[3] हो, उस पहलू को खुलता मंदता रखे। इस तरह से कि दूसरे देखने वालों को न साबित हो कि वह संदूक़ इस तरह से खुलता है और उसमें बैठकर लोगों से कहे क़ुफ़ल[4] लगा दो और कोठरी में रखकर आओ और बाहर निकलकर कुंडी कोठरी के दरवाज़े की लगा दे। जब कुंडी लगा दी जाए उस वक्त जानिबे मुक़ाबिल क़ुफ़ल खोलकर निकल आए और उस जानिब को उसी तरह फिर बंद कर दे और संदूक़ के ऊपर बैठ रहे और आवाज़ दे कि चारों क़ुफ़ल आनकर आज़मा लो मैं निकल आया। लोग आकर देखेंगे तो ग़र्क़ेहैरत[5] होंगे। पर संदूक़की लाग किसी को पहचानने न दे।

पांचवां शुआबदे—मिट्टी में हर तरह के रंग मिलायें सुर्ख़, ज़र्द, सफ़ेद, सबज़ और उस मिट्टी को मोमजामा[6] करे और सुखा ले और पोट बांधकर अलग-अलग लाए और एक गहरी लगन में पानी भरे और उस पानी को स्याही घोलकर स्याह कर दे कि ऊपर वालों को पानी के अंदर का हाल न मालूम हो और उसी रंग-रंग की मिट्टी की एक-एक मुट्ठी उठा-उठाकर उसी पानी के अंदर अलग-अलग रखे और ऊपर से पानी को हिलाए और कहे—क्यों यारों यह सब मिट्टी घुल गई या नहीं। सब जवाब देंगे, बेशक घुल गई। फिर कहे—क्यों यारों यह सब रंग मिल गए या नहीं। सब कहेंगे, बेशक़ ओ-शुबह[7] मिल गई। उस वक्त वही ढेरियां जो पानी के अंदर अलाहदा-अलाहदा रखी हैं निकालता जाए। वह तो मोमखुर्दा[8] हैं कभी तर न होंगी। अलहदा-अलहदा हाथ ऊंचा करके अपने रूमाल पर छोड़ता जाए वह मिस्ल खुश्क रेत के गिरेंगे। लोग निहायत ताज्जुब करेंगे। मगर यह शर्त है कि वह बनी हुई मिट्टी कोई और हाथ से न छुए वरना सारा भेद खुल जाएगा। फिर उस पानी को बिला-आनत-ग़ैरे[9] अपने ही हाथ से फेंक दे।

छठा शुआबदे—मोम की बत्ती के दूसरे सिरे से आटा गुथा हुआ लगाए इतना कि पानी के अंदर हौज़ में वो बत्ती सीधी तैरे और शबेतार[10] में उसे रौशन कर दे। पानी पर तैरती जाएगी और रौशन रहेगी।

---

1. ओर, 2. जंज़ीर और ताला, 3. सामने, 4. ताला, 5. आश्चर्यचकित, 6. मोम में लपेट दें, 7. निस्सन्देह, 8. मोम चढ़ी, 9. किसी अन्य को दिखाए बिना, 10. अन्धेरी रात।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सातवां शुआबदे—कोयले से किसी का नाम लिखे और उसे अंगुश्तेनर[1] के शिकम[2] पर छाप ले वह उल्टा उठ आएगा। फिर उसी शख्स से कहे कि हम तुम्हारे नाम को वेक़लम और दावात तुम्हारे हाथ पर लिख देते हैं। वह कहेगा अच्छा। उसी वक्त वही अंगूठा उसके हाथ पर चिपका दे। सीधानाम उसका छप जाएगा और उसका कफ़ अंगुश्तेनर स्याहीजगाल से पाक हो जाएगा।

अल्लाह बस वाक़ी अवस फ़ानी।

बच्चों का खेल

अटकन मटकन धे चटाकन
अगला झूले बगला झूले
सावन मास करेला फूले
फूले फूल के वारी लाए
बारी लाएसात कटोरी
एक कटोरी फूट गई
नेवले की टांग टूट गई
खंडा मारूँ छुरी खंडा
तेरी माँ का पेट ठंडा
चक्की घुमरू घुमर
आटा पिसर पिसर

लतीफ़ा

पहला लतीफा

अर्श[3] पर से उतरी चार चीज़ें कोला, केला, फूट, ख़रवूजा। चार शख्सों को चारों तरकारियां ज़बानी तक़सीम की जाएँ। जब वो अपने अपने दिलों में ले चुकें तो बांटने वाला कहे–जो मैं कहूं उसी तरह तुम तीनों भी अपनी-अपनी तरकारी के हक़ में कहना। लो सुनो—मैं कहता

1. अंगूठे, 2. सर पर 3. आकाश,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हूं—मेरा कोला गया बाज़ार में। दूसरा कहे—मेरा केला गया बाज़ार में। तीसरा कहे—मेरा ख़रबूजा गया बाज़ार में। चौथा बमुजिब-वायदा जो आपस में हो चुका पशेमान होकर कहे—मेरी फूट गई बाज़ार में।

दूसरा लतीफ़ा

अर्श पर से उतरे चार लिबास—चोली, दामन, चीरा, पटका। चार साहब बाहम यह चारों चीज़ें ज़बानी तक़सीम कर लें। बांटने वाला कहे—जिस तरह मैं कहूं, उसी तरह तुम तीनों भी कहना अपने-अपने लिबास मुक़र्रिरा के हक़ में, लो सुनो। कहने पर मुस्तैद रहो। मैं कहता हूं—हमचो चोली, दूसरा कहे—हमचो चीरा, तीसरा कहे—हमचो पटका, चौथा ब-मजबूरी मुताबिक़-वायदा पशेमानी[1] से कहे—हाँ साहबों हमचो दामन, हमचो दामन, हमचो दामन।

तीसरा लतीफ़ा

अर्श पर से उतरीं चार चीज़ें—बिजली, धूंधूकार, गू की टोकरी, मी शिकार। चार लोग एक-एक चीज़ बांट लें। फिर पहला आदमी पहेली बुझाने वाला कहे—

कड़केगी कड़क बिजली
बाजेंगे धूंधूकार, फाटेंगी गू की टोकरी
चाटेंगे मी शिकार।

बतरीक़े-मरकूमाबाला[2] ख्वामाख्वाह इनमें कोई मी शिकार भी बनेगा। नक़ल-ज़ाहिरी से बहुत लोग खेल के वक्त धोखा खा जाते हैं।

चौथा लतीफ़ा

एक पनिहारिन कुएं पर पानी भरने गई। बारिश ऐसी हुई कि यह ज़ेरे दरख्त खड़ी होकर बूंदियों की तरफ़ देखकर कहने लगी—

---

1. निराश-सा, 2. पूर्वोक्तानुसार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आई थी मैं तुझको
तूने पकड़कर कहा मुझको
तू छोड़ दे मुझको
मैं ले जाऊं तुझको

बच्चों का खेल

गंजे के पंजे ख़रगोश के दो कान।
गंजा बैठा हगने कूद पड़ा शैतान।
गंजा हऊ हऊ हऊ।

फसल नवीं

पहेलियों के सिलसिले में—

1. एक परख वो अच्छी ख़ासी सबके मन को भावे पहले तो अफ़सोस करे और पाछे गले लगावे। —इत्र

2. नट चढ़े और बांस घटे
नट उतरे और बांस बढ़ जाय,,
ऐ सखी मैं तुझसे पूछूं
क्या नट बांस समाए। —मकड़ी का जाला

3. बक्तर पहने चिट्टा मर्द
जिसको खाए कलेजा सर्द। —कसेरू

4. राह में खड़ी नेक ज़न
जिसमें घुसें सौ-सौ ज़न
फिर नेकज़न की नेकज़न —मस्जिद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5. ऐ सुकड़ी मैं ऐ सुकड़ी ऐ सुकड़ी मेरा
घुसे घुसाए ऐ सुकड़ी में
सही सलामत मेरा।
—जूता

6. छोटा था जब सबको भाया
बढ़ गया तो काम न आया।
—चिराग़

7. कोट तले कचनाल पुकारे
ऐ दईया मुझे बाम्हन मारे।
—घड़ियाल

8. एक नार का देखो हईया
टुकड़े टुकड़े तन अपना किया
स्याम वरन पर चढ़ दे दुहाई
मुंह से खींच के सीधे लाई।
—कंघी

9. एचक दाना वेचक दाना
दाना है पुराना,
छज्जे ऊपर लाला बैठा
लाला है दिवाना।
—पोस्ता

10. हरी थी मन भरी थी
नौ लाख मोती जड़ी थी,
राजा जी के बाग़ में
दुशाला ओढ़े खड़ी थी।
—भुट्टा

11. मैं मुट्ठी मेरा पिया अकास
मैं जाऊं पिया के पास,
वैरी लोग पकड़ दिखलाए
पी चाहें तो आप ही आए।
—कबूतर उड़ाना

12. हबश पुरी से लौंडियां आईं हद बदज़ात
सर मुंडाना कीन्ह कटी न तिलकनों की ज़ात,
जब वो वेसरी हो गईं अपने ख़समों के हाथ
सर कट गया उनका ऐन तख़्त की रात।
—चिकनी डली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13. जब तिनके चुनके साफ़ किया
जब पाप जन्म का माफ़ किया,
वो आप अक्ल के केले
रंग लाली का ले ले ।

—मेंहदी

14. बैठे महफ़िल में आ बराबर दो
सूरत मुख़्तलिफ़ मगर खुश्क हो,
खुश हो होके गुल मचाने लगे
मुँह पर अपने तमाचे खाने लगे ।

—तबले

15. जिस्म सब दाग़दार है देखो
तन भी सारा फ़िगार है देखो,
पी की आन से रंजोराहत है
पी की सारी बहार है देखो ।

—क़ंदील

16. आधी बू-बू सारी रानी —बूरानी

17. इर्द ग़िर्द घूम आए क्या खूब बताई है,
देखी है पर चक्खी नहीं अल्ला क़सम खाई है । —खाई

18. दाहिने हाथ की चार उंगलियां मिलाकर बुलाने का इशारा करे, फिर वही चारों उंगलियां आपस से जुदा करके हाथ ऊंचा करके दिखा दे । —अचार

19. दाहिने हाथ की पहली उंगली से माथा ठोंके और वही सारा हाथ खुला हुआ दाहिने गाल पर धर दे । —करम कल्ला

20. दाहिने हाथ की पहली उंगली के नाखून से बा आनते अंगुश्तेनर किसी सख्त चीज़ पर खटाका दे और चुटकी से मल डाले । —खटमल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छठा अध्याय

ख़िताब

प्रस्तुत अध्याय इस पुस्तक का छठा एवं अन्तिम अध्याय है। इस अध्याय में रहस एवं जलसेवालियों के विषय में बताया गया है। कुल मिलाकर इसमें 23 जलसेवालियों के समूह बनाए गये थे और जलसों में कुल कलाकारों की संख्या 216 है, जिनका कुल मासिक वेतन 8,598 रु० बनता है। किन्तु इनमें से केवल 43 कलाकार ऐसे थे जो वाजिद अली शाह के शागिर्द थे और उनकी शिक्षा में वाजिद अली ने रात-दिन एक कर दिये थे।

इसके अतिरिक्त सब ही कलाकार दूसरे उस्तादों और साज़िन्दों से शिक्षा पाते थे। नृत्य एवं संगीत की शिक्षा देने वाले उस्तादों की कुल संख्या 145 थी जिनका कुल मासिक वेतन 3,261 रु० था। इसके अतिरिक्त इन जलसों की तैयारियों में उनकी सामग्री आदि एकत्र करने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा उसके रख-रखाव पर उनका ढेर सारा धन व्यय हुआ था। इससे एक बात स्पष्टतया सामने आती है कि मिर्ज़ा वाजिद अली ने अपनी आय का अधिक भाग इन रहसों को तैयार करने में लगा दिया था।

वाजिद अली शाह के 23 जलसों में से केवल पहले पांच जलसे रहस के लिये थे और इन जलसों में जो चरित्र जिन स्त्रियों का था उनका विवरण लेखक ने जहां का तहां लिख दिया है। इसके बाद के पांच जलसों (छः से दस तक) के विषय में लेखक लिखता है कि इन्हें रहस की शिक्षा नहीं दी गई अर्थात् उनका काम रहस करना नहीं वरन् राजमहल के अन्य कामों को देखना था। ग्यारहवें से अट्ठारहवें जलसे के विषय में कुछ विस्तृत वर्णन नहीं मिलता। केवल उन्हें दिये नये नामों से उनको पहचाना जा सकता है: जैसे मरसिये-वालियां, नक़लवालियां और तमाशेवालियां आदि। अन्तिम जलसे का नाम व काम दोनों नहीं दिये गये हैं। किन्तु इनमें से जो महिलाएं जिस नाम से पुकारी जाती थीं उनका नाम ही उनके काम की ओर संकेत करता है, जैसे आवे-रसां बेगम और आबदार बेगम का काम पानी पिलाना और उससे सम्बन्धित कार्य देखना। साफ़ दिल बेगम और मुसफ़्फ़ा बेगम का काम मकान व फ़र्नीचर की सफाई आदि। तजल्ली का अर्थ होता है बिजली। इसलिये तजल्ली बेगम का काम प्रकाश का प्रबन्ध करना। इसी प्रकार आईना जमाल बेगम का काम आइना साफ़ करना आदि।

इस विस्तृत व्यंजना से एक बात स्पष्ट होती प्रतीत होती है कि लेखक ने 'जलसा' शब्द का प्रयोग केवल रहसवालियों के लिए ही नहीं प्रयुक्त किया है वरन् कला के इस संरक्षक ने हरमसरा की महिलाओं को उनके काम के अनुसार समूहों में विभाजित कर दिया था और हर समूह का एक उस्ताद या दारोग़ा नियुक्त कर दिया था और इन समूहों को अलग-अलग नाम दे दिया था जिससे अनुशासन बना रहे। अनुशासन बनाए रखने के लिये वाजिद अली शाह ने क़ानून अख्तरी भी लिखी जिसमें वह सारी आज्ञायें भी सम्मिलित कर दी जो समय-समय पर हरमसरा की महिलाओं, सेवकों और अन्य कर्मचारियों को दीं जाती थीं।

वाजिद अली शाह को अपने शाही के समय से ही जानवरों और चिड़ियों को पालने का शौक़ था। कलकत्ते में भी उन्होंने एक विशाल चिड़ियाघर बनाया था तथा चिड़ियों के रंग और उनके प्रकार के अनुसार उनका नामकरण भी किया था। उनका संक्षिप्त विवरण भी इस अध्याय में मिलता है। इन नामों में भी संगीत, नृत्य की एक लयात्मक शब्दावली, प्रयुक्त की गई है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाब छह यानी छठा अध्याय

इस बाब के ख़िताब महलात[1] और बेगमात और ख़िताब शहज़ादगान[2] और अरबाबे[3]-आलमपसंद[4] वग़ैरा हैं और इसमें दो फ़सलें हैं।

फसल पहली

राधा मंज़िलवालियों के विषय में यह फ़सल सबसे पहले तैयार की।

राधा मज़िलवालियां

ये अट्ठारह इस्म[5] हैं।

पहली—नवाब सगीर महल साहिबा, वाल्दा अख्तर जाह मिर्ज़ा मोहम्मद हाशिम बहादुर।

दूसरी—नवाब तमीज़दार बेगम साहिबा अफ़सर महल, मौसूफ़ा[6] मय शाहज़ादा एक सौ तिरानवे रुपये महीने की तनख्वाहदार और माबकी[7] सत्रह इस्मों के, फ़ी इस्म एक सौ तीन रुपए माहवारी मुक़र्रर है। मजमूअन[8] एक हज़ार नौ सौ चवालिस रुपए की माहवारी राधामंज़िल की रहसवालियों को देता हूं।

तीसरी—नवाब मंझली बेगम साहिबा आशिक़ए-राक़िम[9]।

चौथी—नवाब अब्बासी बेगम साहिबा कन्हैया।

पांचवीं—नवाब नामदार बेगम साहिबा राधा।

छठी—नवाब जानआरा बेगम साहिबा अरग़वान परी।

सातवीं—नवाब सितारावख्त बेगम साहिबा ज़ाफ़रान परी।

---

1. वे बेगमें जो माँ बन चुकी हैं, 2. राजकुमार, 3. रिश्तेदार, 4. आलमआरा की पसन्द के, 5. नग, 6. उनके, 7. अलावा इसके, 8. कुल मिलाकर, 9. लेखक को चाहने वाली।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आठवीं—नवाब सुलतान बेगम साहिबा सँहरा यानी जोगन।

नवीं —नवाब संझली बेगम साहिबा ललिता सखी।

दसवीं —नवाब नन्हीं साहिबा साखा सखी।

ग्यारहवीं—नवाब उरूसाना बेगम साहिबा चैन सखी।

बारहवीं—नवाब जानां बेगम साहिबा लड़वा सखी।

तेरहवीं—नवाब हिजाब बेगम साहिबा।

चौदहवीं—नवाब रेहान बेगम साहिबा।

पन्द्रहवीं—नवाब वज़ीर बेगम साहिबा।

सोलहवीं--नवाब जनाब बेगम साहिबा।

सत्रहवीं—नवाब खुशक़दीर बेगम साहिबा।

अट्ठारहवीं—नवाब नूखानी बेगम साहिबा।

गुलाम हुसैन खां मुग़न्नी[1] शरीके बंदा[2] और क़ायम खान रक्क़ास[3] शागिर्द-बन्दा[4] इस जलसे के मुअल्लिम[5] हैं और ये अट्ठारह इस्म[6] राक़िम की ममतुआत[7] हैं। सरकार राक़िम से रहस के वक्त बहारी पेशवाज़े मसालेदार मय दुपट्टे पुरज़रअखर[8] घुटना तोहफ़े की इस्म अलाहदा मिला करती है। बादेरक्स[9] मेरे तोशाख़ाने[10] में एहतियात से संदूक़ में बंद कर दिए जाते हैं। राधा, कन्हैया, परियाँ, सैहरा, गुर्वत, अफ़रीयत, मुसाफ़िर, रामचीरा, इन सबका भी असबाब[11] मय पनिहारिनों और माखनवालियों के, मेरी तरफ़ आयद[12] और मेरे हिसाबात में मशमूल[13] हैं। उनकी तनख्वाहों से कुछ इलाक़ा[14] नहीं। इस रहस को शुरू हुए माशाअल्लाह तेरहवां-चौदहवां बरस है। फ़नेमौसीक़ी[15] में ताक़[16] शहरे आफ़ाक़[17] है।

---

1. गायक, 2. लेखक के साथ, 3. नर्तक, 4. लेखक का शिष्य, 5. उस्ताद, 6. नग, 7. जिनसे मुताह किया है, 8. ज़रदोज़ी के भारी बनत, 9. नृत्य के बाद, 10. कपड़े रखने का स्थान, 11. सामान, 12. सम्बन्धित, 13. जुड़े, 14. मतलब, 15. संगीत कला, 16. माहिर, 17. नगर प्रसिद्ध।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शारदा मज़िलवालियां

शारदा मंज़िलवालियों के विषय में। पहली फ़सल में इनका ज़िक्र दूसरे नम्बर पर है। इस रहस में पन्द्रह इस्म[1] हैं—

पहली—नवाब मुबारकमहल साहिबा दाराजाह मिर्ज़ा मुहम्मद अब्दुल अली की वाल्दा मय शाहज़ादा। एक सौ सत्तासी रुपए आठ आने की तनख़्वाहदार माबकी[2] फ़ी[3] इस्म अड़तालिस रुपए महीना।

दूसरी—नवाब दुलारी बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब प्यारी बेगम साहिबा अरग़वान परी।

चौथी—नवाब खुशआवाज़ बेगम साहिबा सैहरा यानी जोगन।

पांचवीं—नवाब जाफ़री बेगम साहिबा।

छठी—नवाब नूरजहाँ बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब नजमुन्निसा बेगम साहिबा।

आठवी—नवाब नथनिया बेगम साहिबा।

नवीं —नवाब नाहिद बेगम साहिबा।

दसवीं—नवाब चमनिस्तान बेगम साहिबा कन्हैया।

ग्यारहवीं—नवाब हूर बेगम साहिबा साखा सखी।

बारहवीं—नवाब बाला बेगम साहिबा चैन सखी।

तेरहवीं—नवाब नग़मासरा बेगम साहिबा लड़वा सखी।

चौदहवीं—नवाब दहर अफ़रोज़ बेगम साहिबा राधा।

पन्द्रहवीं—नवाब हादी बेगम साहिबा ज़ाफ़रान परी।

इस रहस को माशेअल्लाह सात बरस के क़रीब हुए। मीर खाँ मुग़न्नी,[4] शागिर्दे बन्दा और कलन्दरबख्श रक्क़ास[5] शागिर्द बन्दा इस जलसे के मुअल्लिम[6] हैं। यह पन्द्रह इस्म राक़िम

---

1. नग, 2. अलावा उसके, 3. प्रति, 4. गायक, 5. नर्तक, 6. उस्ताद।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की ममतुआत हैं[1]। कुल शारदा मंज़िलवालियों को आठ सौ उनसठ रुपए आठ आना माहवारी देता हूं। सातवां बरस उनकी तालीमदेही[2] को मुन्कज़ी[3] होता है।

सुलतानख़ानेवालियाँ

यह तीसरा रहस और बड़ा जलसा है और इसमें चौबीस इस्म हैं। यह महल ज़ेरे-तालीमे-बंदा[4] आठ बरस से हैं। शरीक़ेराक़िम[5] पहले अलबख्श ख़ान मुग़न्नी और क़लन्दर बख्श रक्क़ास और निसार अली ख़ाँ पखावजी और तआशुद्दौला बहादुर ऐश[6] शायर और खुलासुतुद्दौला बहादुर मुंशी, जुमला[7] शागिर्दाने मुसन्निफ़[8] हैं। ये गुस्ताख़ाना अदना[9] अर्ज़[10] ख़िदमत नाज़रीन[11] और शायक़ीन[12] और तालेबीन[13] और मुश्ताक़ान[14]और उस्तादाने फ़न[15] की खिदमत में करता है कि एक धीमें तिताला में तीन बरस के अरसे में मैंने बावन तरह की लय निसार अली खां पखावजी को मय साहिबात जलसा बताईं और सभी ने बआनते-राक़िम[16] और शागिर्दानि-राक़िम[17] याद की। मगर फ़िरकएनिशातए-क़ज़-फ़हम[18] और नाक़िस-उल-उकूल[19] है कि सिवाए खुद-आराई[20] और खुदपरस्ती[21] गोया[22] कोई काम दुनिया का आराई[23] ने उनके मुताल्लिक़[24] नहीं किया। चौबीस इस्मों में से तीन-चार इस्म तो उंगलियों पर क़ायम हुईं। मावकी[25] सिवाए ले-ले की लय के और जो चाहिए वो कुछ नहीं जानतीं।

पहली—नवाब क़ैसरमहल साहिबा, एरिक़ाआरा, कनीज़ साहब बेगम साहिबा। शाहज़ादे की वालदा मय शहज़ादा दो सौ बीस रुपए महीने की तनख्वाहदार है।

दूसरी—नवाब सकीना बेगम साहिबा कन्हैया, बयासी रुपए की तनख्वाहदार और मावरा नवाब सकीना बेगम साहिबा कन्हैया की। यह बीस इस्म भी बयासी रुपए महीने के तनख्वाहदार हैं।

---

1. मुताही, 2. शिक्षा, 3. पूरा, 4. इस बंदे की शिक्षा, 5. लेखक से सम्मिलित, 6. शायर का तख़ल्लुस, 7. कुल, 8. लेखक के शिष्य, 9. छोटी-सी, 10. निवेदन, 11. पाठकों की सेवा में, 12. शौक़ीनों, 13. छात्रों, 14. इच्छुक, 15. कला के उस्ताद, 16. लेखक के अनुसार, 17. लेखक के शिष्यों में, 18. बुद्धिहीन औरतों का समूह, 19. नासमझ (बुद्धिहीन), 20. स्वयं सजने-सवंरना में, 21. अपने आप में लीन रहना, 22. जैसे, 23. खुदा, 24. सम्बन्धित, 25. अलावा इसके।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरी—नवाब आबादी बेगम सहिबा राधा।

चौथी—नवाब बसीटी बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब हैदरी बेगम साहिबा।

छठी—नवाब अमीर बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब खुशगुल बेगम साहिबा।

आठवीं—नवाब गोरी बेगम साहिबा, ललिता सखी।

नवीं—नवाब छोटी बेगम साहिबा।

दसवीं—नवाब मोहतदी बेगम साहिबा साखा सखी।

ग्यारहवीं—नवाब शहंशाह बेगम साहिबा चैन सखी।

बारहवीं—नवाब इश्क़ अफ़रोज़ बेगम साहिबा लड़वा सखी।

तेरहवीं—नवाब महरुख़ बेगम साहिबा।

चौदहवीं—नवाब उम्दा बेगम साहिबा ज़ाफ़रान परी।

पन्द्रहवीं—नवाब मुन्नी बेगम साहिबा अरग़वान परी।

सोलहवीं—रफ़ीक उल सुल्तान वज़ीरुन्निसा ख़ानम साहिबा सँहरा यानी जोगन।

सत्रहवीं—नवाब अर्जुमंद बेगम साहिबा।

अठारहवीं—नवाब अंजुम अफ़रोश बेगम साहिबा।

उन्नीसवीं—नवाब परीरुख़ बेगम साहिबा।

बीसवीं—नवाब सज्जादी बेगम साहिबा।

इक्कीसवीं—नवाब लोडोबाई साहिबा।

बाईसवीं—नवाब शीशमहल साहिबा—एक सौ उन्तीस रुपए आठ आना की तनखवाहदार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेईसवीं—नवाब अफ़ज़ल बेगम साहिबा मय बहार आरा, कनीज़ हुसैन बेगम साहिबा मय शाहज़ादा एक सौ बहत्तर रुपए की तनख्वाह दार। जब नवाब बूटा महल साहिबा शाहज़ादे की वाल्दा ने इन्तक़ाल किया, तो यह शाहज़ादे उन्हीं बेगम के सुपुर्द हुए। यह शाहज़ादे की ख़ाला और राक़िम की साली-ममतुआ[1] हैं।

चौबीसवीं—नवाब हज़रत बेगम साहिबा एक सौ तीन रुपए की तनख्वाहदार। यह चौबीसों इस्म राक़िम की ममतुआत हैं। कुल माहवारी सुलतानख़ाने-वालियों की दो हज़ार दो सौ चौंतीस रुपए आठ आने।

खास मंज़िलवालियां

यह चौथा जलसा हुज़ूरवालियों का जलसा के नाम से कहलाता है और यह ख़ास-मंज़िलवालियाँ भी मशहूर हैं। इसमें ग्यारह इस्म हैं जिनमें पहले नौ इस्म पैंतालिस-पैंतालिस रुपए के तनख्वाहदार हैं, और दो इस्म बीस-बीस रुपए के तनख्वाहदार हैं। इनायत ख़ां मोग़न्नी[2] और ख्वाजा बख्श तबलानवाज़ शाग़िर्दाने-मुसन्निफ़[3] उनके मुअल्लिम[4] हैं। साथ ही हैदरअली रक्क़ास[5] शाग़िर्दबंदा[6] था वह फ़ौत[7] हो गया है।

पहली—नवाब आग़ाई बेगम साहिबा ललिता सखी।

दूसरी—नवाब हुरमुज़ी बेगम साहिबा साखा सखी।

तीसरी—नवाब सुल्तानी बेगम साहिबा चैन सखी।

चौथी—नवाब ज़ैहरा बेगम साहिबा लड़वा सखी।

पांचवीं—नवाब अहमदी बेगम साहिबा।

छठी—नवाब बिस्मिल्ला बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब नौरोज़ी बेगम साहिबा।

आठवीं—नवाब खुर्शीदी बेगम साहिबा।

नवीं—नवाब मेहताबी बेगम साहिबा।

---

1. मुताही बीवी की बहन, 2. नर्तक, 3. लेखक के शागिर्द, 4. उस्ताद, 5. नर्तक, 6. लेखक के शाग़िर्द (शिष्य), 7. मर गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दसवीं—नवाब ईदी बेगम साहिबा राधा। बीस रुपए की तनख़्वाहदार हैं। सातवाँ बरस इनकी तालीमदेही[1] को मनक़ज़ी[2] होता है।

ग्यारहवीं—नवाब मासूमा बेगम साहिबा कन्हैया। बीस रुपए की तनख़्वाहदार।

चार सौ पैंसठ रुपए माहवारी हुज़ूरवालियों की हुई। सब इस्म राक़िम की ममतुआ हैं।

पांचवां जलसा

यह सुरूर मंज़िलवालियां और साहवाते ख़िलवात भी मशहूर हैं। यह साहिबात सिन-रसीदा[3] भी हैं। सोलह इस्म हैं। फ़ी[4] इस्म[5] बीस रुपए की तनख़्वाह कुल तीन सौ बीस रुपए माहवारी हुई और सब ममतुआ[6] हैं। छह बरस उनकी भी तालीमदेही को गुज़रते हैं। फ़ज़ल इमाम मुग़न्नी और मुहम्मद हुसैन रक़्क़ास मेरा शागिर्द इनका मुअल्लिम है।

पहली—रकाब पसंद कन्हैया।

दूसरी—मतलब पसंद राधा।

तीसरी—चमकपसंद अर्ग़वान परी।

चौथी—नवाब पसंद ज़ाफ़रान परी।

पांचवीं—लबपसंद ललिता सखी।

छठी—सागर पसंद साखा सखी।

सातवीं—दिलदार पसंद चैन सखी।

आठवीं—नूरपसंद लड़वा सखी।

नवीं—मशहूर पसंद सैहरा यानी जोगन।

दसवीं—सख़ावत पसंद।

---

1. शिक्षा, 2. पूरा, 3. अधिक आयु की, 4. प्रति, 5. नग, 6. मुताही।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्यारहवीं—सआदत पसंद ।

बारहवीं —मर्तबत पसंद ।

तेरहवीं—मुरव्वत पसंद ।

चौदहवीं—नजफ़ पसंद ।

पन्द्रहवीं—उम्मीद पसंद ।

सोलहवीं—सिंकंदर पसंद ।

छठा जलसा

यह शहंशाह मंज़िलवालियाँ मशहूर हैं । इनको रहस की तालीम नहीं दिलवाई और न राक़िम[1] उनकी तालीमदेही में कभी शरीक़ हुआ । मगर हैदर ख़ां मुग़न्नी मेरे शागि़र्द ताज ख़ां का हमशीरज़ादा[2] और कलन्दरबख्श रक्क़ास मेरा शागि़र्द इनके मुअल्लिम हैं । यह आठ इस्म हैं और सब मेरी ममतुआ हैं । पांचवां बरस उनकी तालीमदेही को मुनक़जी[3]होता है । फ़क़त नाचना गाना इनका काम है । बशरहमुख़तलिफ़[4] कुल ज़र[5] तनख्वाह उनका तीन सौ चालिस सिक्के बख्शीगीरी से मिलते हैं ।

पहली—नवाब हुजूर साहिबा पच्चास रुपए की तनख्वाहदार ।

दूसरी—नवाब समनवर बेगम साहिबा पैंतालिस रुपए की तनख्वाहदार ।

तीसरी—नवाब आलिया बेगम साहिबा पैंतालिस रुपए की तनख्वाहदार ।

चौथी—नवाब मुतालैया बेगम साहिबा पैंतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

पांचवीं—नवाब मख़मूरा बेगम साहिबा उनतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

छठी—नवाब वाजिदी बेगम साहिबा उनतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

सातवीं—नवाब गुलपैरहन बेगम साहिबा उनतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

आठवीं—नवाब चर्ख़ अफ़रोज़ बेगम साहिबा अड़तीस रुपयों की तनख्वाहदार ।

---

1. लेखक, 2. भाँजा, 3. पूरा, 4. विभिन्न दरों के हिसाब से, 5. पैसा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सातवाँ जलसा

यह छोटे जलसेवालियाँ मशहूर हैं। इनसे भी रहस मुताल्लिक़ नहीं। फ़क़त नाचना-गाना इनका काम है। गुलाम मुहम्मद क़ानूनबाज़ और बिशन रक्क़ास शागिर्दाने राक़िम इनके मुअल्लिम थे। दोनों हक्के शागिर्दी और नमकफ़रामोश[1] करके तारिकेरोज़गार[2] हुए। अब यह जलसा रक्स व सरोद से बिल्कुल्लिया[3] मुअत्तल व बेकार है। गाहे-बगाहे राक़िम की एक आध ध्रुवपद अपनी तसनीफ़[4] बता दिया करता है। यह सात इस्म हैं और सब राक़िम की ममतुआ हैं। फ़ी इस्म चालिस सिक्के तनख्वाह मुअय्यन हैं। दो सौ अस्सी रुपए माहवार हुए। पांचवां बरस इनके भी तालीमदेही को मुनकजी होता है।

पहली—नवाब झुमका बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब चुँदड़ी बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब सब्ज़ा बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब बंदा बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब इम्तियाज़ बेगम साहिबा।

छठी—नवाब प्रिया बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब रसिया बेगम साहिबा।

आठवाँ जलसा

यह पांच इस्म राक़िम की ममतुआ हैं। नूर मंज़िलवालियां इनका लक़ब[5] है। रहस का काम इनके मुताल्लिक़[6] नहीं। अहमद ख़ाँ मुग़न्नी और क़ायम ख़ां रक्क़ास बन्दे के शागिर्द इनके मुअल्लिम हैं। आठ-सात बरस की तालीम में ऐसा मुहावरा व मश्क व मशशाक़ी बहम पहुंचाई और ऐसा ध्रुपद, ख्याल, चतुरंग, तराना, आलाप, अर्थभाव करतियां हैं कि रुलादेतियाँ हैं। अलहक़[7] उनके दोनों मुअल्लिमों में हक्के नमक व शागिर्दी राक़िम अदा किया। राक़िम इस

---

1. नमकहरामी, 2. नौकरी छोड़कर चले गए, 3. बिलकुल, 4. लिखी हुई (कृति), 5. उपनाम, तख़ल्लुस, 6. सम्बन्धित, 7. सच ये है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जलसे से निहायत राज़ी है। इनमें नवाब महकपरी वेगम साहिवा की तनख्वाह पचहत्तर रुपए हैं। चार इस्मों की पचास-पचास रुपए। कुल दो सौ पचहत्तर रुपयों की माहवारी वहाँ जाती है।

पहली—नवाव महकपरी वेगम साहिवा।

दूसरी—नवाव जानी वेगम साहिवा।

तीसरी—नवाव जान वेगम साहिवा ।

चौथी--नवाव जनियां वेगम साहिवा।

पांचवीं—नवाब जन्नो वेगम साहिवा।

नवां जलसा

यह जलसा मुक़र्रर किए हुए तीसरा साल है। नवाव ज़ैनब वेगम साहिबा नवाव सहरनिगाह वेगम साहिवा यह दो मुमतुआ राक़िम की इस जलसे में हैं। मावकी मुतावक्तऐनो[1] में है। इसमें ग्यारह इस्म ममतुआ के फ़ी इस्म छियत्तर रुपए की तनख्वाह और नौ इस्मों के बीस-बीस रुपए की फ़ी इस्म। इनायत हुसैन ख़ां मुग़न्नी शागिर्दे राक़िम और ग़ुलाम अव्वास रक्क़ास इनके मुअल्लिम हैं। यह जवाहर मंज़िलवालियां मशहूर हैं। इस सन् में जो वारह सौ वानवे हिजरी है, यह जलसा फ़क़त रहसआमोज़ी[2] पर मुअय्यन[3] होकर हवाले किया। महताब-उद्दौला वहादुर दरवशां शायर और ख्वाजाबख्श तवला नवाज़ शागिर्द राक़िम के।

पहली—नवाव ज़ैनव वेगम साहिवा ममतुआ।

दूसरी—नवाब सहर निगाह वेगम साहिवा ममतुआ।

तीसरी—नवाव ताउसजमाल वेगम साहिवा।

चौथी—नवाव रक्क़ास वेगम साहिवा।

पांचवीं—नवाव मोती वेगम साहिवा।

छठी—नवाव अज़ीमा वेगम साहिवा।

---

1. अलावा इसके और किसी से मतलब नहीं। 2. रहस करने, 3. स्थित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सातवीं—नवाब ख़ुर्शीद जमाल बेगम साहिबा।

आठवीं—नवाब ज़ैहरा जमाल बेगम साहिबा।

नवीं—नवाब मुश्तरीक बेगम साहिबा।

दसवीं—नवाब सुरैया बेगम साहिबा।

ग्यारहवीं—नवाब अवद परवीन बेगम साहिबा।

दसवां खास जलसा

यह ख़ास जलसेवालियां मशहूर हैं। सात इस्म हैं जिनमें तीन ममतुआ हैं। मुतवक्क़ मावकी अलमुता सातों सत्तर सत्तर रुपए महीने की तनख्वाहदार ज़ेर-तालीम[1] राक़िम हैं। तीसरा साल मुनकर्ज़ा[2] होता है कि नहीफ़ ख़ुद[3] उनकी तालीम में बदिलोजान मसरूफ़ रहता है। अब माशा अल्लाह लय-सुर से बख़ूबी वाक्फ़ियत होती जाती है। नचाना-गवाना, अर्थभाव बताना टुकड़े पांव से लिवाना, गतें नचवाना सब मुझसे मुताल्लिक़ हैं। किसी साज़िन्दे नवाज़िन्दे मुग़न्नी रक्क़ास को ज़र्रा दख़ल नहीं बल्कि उनके हमराह सिवाए राक़िम और कोई नहीं होता जो कभी ऐसा ही दिलचाहा तो साज़िन्दों को हमराह बजवा दिया। दूसरे-तीसरे महीने के बाद चुटकियों पर ध्रुवपद,चतुरंग त्रिवट, तराना, धमार, रूपक, तीवरा, चौताला, धीमा तिताला, कबीर की छवि, ब्रह्मलक्ष्मी, सूलफ़ाख्ता छवताला, चाचर, ग़ज़ल, अद्धा, ख्याल, ठुमरी गा लेती हैं। ये तम्बूरे पर काम कर लेती हैं। बग़ैर तम्बूरे भी गलों के सुरों पर गा सकती हैं। जवाहर लच्छे के छहों टुकड़े पांव से निकाल लेती हैं। दो-तीन सौ चीज़ें पांव से सब तरह की आज तक बता चुका हूं और बताए चला जाता हूं। नक़लें भी मज़हक करती हैं। समझदार हो गई हैं।

सूरत[4]उसकी यह हुई कि नौ जलसे मुरत्तब किए। राधा मंज़िलवालियों और सुल्तानवालियों पर ऐसी-ऐसी मेहनतें कीं कि सुबह का खाना शाम को और शाम का सुबह को नसीब हुआ। मगर आख़िरकार उन साहबों ने बसबब-तासीर[5] सोहबत शबानारोज़ी[6] डोम-ढाड़ियों का सा तफ़रक़ा[7] पड़ा। इल्म[8]की तरफ़ तवज्जे बिल्कुल न की। मज़े की तरफ़ रूजू[9] हुई। यह हालात

1. शिक्षा में हैं, 2. पूरा, 3. मैं स्वयं, 4. नतीजा, 5. साथ-साथ रहने के प्रभाव के कारण, 6. दिन-रात, 7. मतभेद, 8. शिक्षा, 9. आकर्षित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखकर राक़िम-उल-हुरूफ़[1] निहायत[2] कबीदारख़ातिर[3] और परेशान रहता था कि बारेख़ुदा[4] क्या तदबीर करूँ। बग़ैर साज़िन्दों के एक कलमा ज़ुबान से न निकालती थी। एक दिन शाहज़माना ने मुझे रंजीदा ख़ातिर देखकर कहा–साहब तुम क्यों शबानारोज़ चुप रहा करते हो। मैंने किस्सा गुज़श्ता[5] नक़ल किया। उन्होंने सलाह दी, तुम खुद क्या कम हो जो औरों को तालीमदेही में शरीक करते हो। मैंने जवाब दिया–साहब सब जलसों की आदतें खराब हो गई। वो अब मेरी ज़ेरे तालीम नहीं आ सकती हैं। उन्होंने हँसकर जवाब दिया–एक दर बन्द करोड़ खुले हैं। मैं कोरियों छोकरियां यहां बुलवाती हूँ। कच्ची लकड़ी की तरह जिधर तोड़ो मरोड़ोगे बेतकल्लुफ़, टूटेंगी और नवाब यादगारमहल साहिबा और अहलकार ख़ाकान दारोग़ा अशफ़ाक उल सुल्तान और नवाब शहज़ादी महल साहिबा ये साहब भी ऐसे ही कलमें ज़ुबां पर लाईं। मैं भी राज़ी हो गया। अलहक़[6] यह सलाह और राय यहां तक मुफ़ीद[7] हुई कि मैंने अब अहदे-वासिक़[8] किया है कि मुद्दतउलउम्र[9] किसी डोम, धाड़ी, मिरासी, कलावंत गवैए, ध्रुवपदिए, ख्यालिए, रक्क़ास, पखावजी के हवाले एक इस्म भी न करूँगा। अभी तक उनसे रहस का काम भी नहीं लिया। वह काम अब उनसे अपने आगे पानी से ज्यादा पतला नज़र आएगा।

पहली—नवाब ख़ाना आबादी बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब माहेमुनीर बेगम साहिबा ममतुआ।

तीसरी—नवाब गुलबदन बेगम साहिबा ममतुआ।

चौथी—नवाब महरअफ़रोज़ बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब नाज़ुक बदन बेगम साहिबा।

छठी—नवाब मुमताज़ बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब माहेअफ़रोज़ बेगम साहिबा।

ग्यारहवां जलसा

यह घूंघटवालियां मशहूर हैं। ये भी सात इस्म[10] साल भर से ज़ेरेतालीम-राक़िम[11] हैं। उनमें नवाब अलमास तलत बेगम साहिबा फ़क़त ममतुआ हैं। माबकी[12] मुतवक्क़े-अलमुता छियत्तर

---

1. लेखक, 2. अत्यधिक, 3. दुख, 4. ऐखुदा, 5. बीता हुआ, 6. अल्लाह के करम से, 7. लाभदायक, 8. प्रतिज्ञा, 9. जीवनपर्यन्त नई लड़कियां 10. नग, 11. लेखक से शिक्षा ले रही हैं, 12. इसके अलावा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुपए बेगम मरक़ूमा[1] की तनख्वाह और मावकी छह इस्मों के बीस-बीस रुपए की माहवारी हैं।

पहली—नवाव अलमास तलत बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब शिकोह बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब विक़ार बेगम साहिबा।

चौथी—ख़ुसरो बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाव जहाँ अफ़रोश बेगम साहिबा।

छठी—नवाब अच्छी बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब अल्लाह जिलाए बेगम साहिबा।

बारहवां जलसा

यह पहला जलसा नथवालियाँ मशहूर हैं। यह भी सात इस्म साल भर से ज़ेरे-तालीम राक़िम हैं। इनमें नवाब मलीहा बेगम साहिबा ममतुआ छियत्तर रुपये महीने की तनख्वाहदार हैं। मावकी बीस-बीस रुपए के तनख्वाहदार हैं। एक सौ छियानवे रुपये हर माह नथवालियों को और इसी क़द्र घूंघटवालियों को भी देते हैं। मगर ख़ास सातों जलसेवालियों को चार सौ नब्बे रुपये हर माह मिलता है।

पहली—नवाब मलीहा बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब ज़मन अफ़रोज़ बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब बुतूली बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब हुसैनी बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब मुनीर बेगम साहिबा।

छठी—नवाब आमना बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब सबीहा बेगम साहिबा।

---

1. पूर्वोक्त।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेरहवां जलसा

इसमें भी सात इस्म हैं। ये गानेवालियाँ मशहूर हैं। ये भी साल भर से ज़ेरे-तालीम राक़िम हैं। नवाब ख़ुश अदा बेगम साहिबा इनमें छियत्तर रुपये की तनख्वाहदार ममतुआ राक़िम हैं। मावकी छह इस्म मुताह चाहने वाली बीस-बीस रुपयों की तनख्वाहदार हैं। कुल एक सौ छियान्नबे रुपये महीना गानेवालियों को भी मिलता है।

पहली—नवाब खुशअदा बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब अस्करी बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब खुसरो बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब नज़ीर बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब करीमुन्निसा बेगम साहिबा।

छठी—नवाब ज़निया बेगम साहिबा।

सातवी—नवाब हसन जहाँ बेगम साहिबा।

चौदहवाँ जलसा

यह लटकनवालियाँ मशहूर हैं। यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाब रश्के माह बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब कमानअबरू बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब गुलरुख्सार बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब हिलाल अबरू बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब ग़ैरतमाह बेगम साहिबा।

छठी—नवाब सर बुलंद बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब ज़ीजाह बेगम साहिबा।

पन्द्रहवां जलसा

यह झूमरवालियाँ मशहूर हैं। यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाब खुशनिगाह बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब मुश्क गेसू बेगम साहिबा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरी—नवाव जादू निगाह बेगम साहिवा ।

चौथी—नवाव आहोनिगाह बेगम साहिवा ।

पांचवीं—नवाव आलमताव बेगम साहिवा ।

छठी—नवाव ख़ैरख्वाह बेगम साहिवा ।

सातवीं—नवाव जान अफ़रोज़ बेगम साहिवा :

सोलहवां जलसा

यह झूलनेवालियाँ मशहूर हैं । ये भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाव बद्र अफ़रोज़ बेगम साहिवा ।

दूसरी—नवाव गुलवदन बेगम साहिवा ।

तीसरी—नवाव खुशअफ़रोज़ बेगम साहिवा ।

चौथी—नवाव कमर अफ़रोज़ बेगम साहिवा ।

पाँचवीं—नवाव कुवक अफ़रोज़ बेगम साहिवा ।

छठी—नवाव सई बेगम साहिवा ।

सातवीं—नवाब लालओज़ार बेगम साहिवा ।

सत्रहवां जलसा

यह बेसरवालियाँ मशहूर हैं । यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाव इश्क़नुमा बेगम साहिवा ।

दूसरी—नवाग गुलअंदाम बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब चाशनी बेगम साहिवा ।

चौथी—नवाव नमकीन बेगम साहिवा ।

पांचवीं—नवाव हीरा बेगम साहिवा ।

छठी—नवाव शम्स अफ़रोज़ बेगम साहिवा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सातवीं—नवाब कनीज़ हुसैन बेगम साहिबा ।

अट्ठारहवां जलसा

यह बिदियावालियाँ मशहूर हैं । यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाब जहाँदार बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब परीख़िसाल बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब शमशाद बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब यूसूफ़ जमाल बेगम साहिबा ।

पांचवीं—नवाब जुलेख़ा बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब बिलक़ीस बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब लैला बेगम साहिबा ।

उन्नीसवां जलसा

यह मरसिएवालियाँ हैं । यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाब ग़ुमग़ुसार बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब ग़मख़्वार बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब मातमी बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब मातमदार बेगम साहिबा ।

पांचवीं—नवाब मरसिया ख़्वान बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब नौहाख़्वान बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब ज़ाकिरा बेगम साहिबा ।

बीसवां जलसा

यह नक़लवालियाँ मशहूर हैं । यह भी सात इस्म हैं—
पहली—नवाब इलायची बेगम साहिबा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरी—नवाब दोगाना बेगम साहिबा ।
तीसरी—नवाब चारकौड़ी बेगम साहिबा ।
चौथी—नवाब सहगाना बेगम साहिबा ।
पांचवी—नवाबी ज़नाख़ी बेगम साहिबा ।
छठी—नवाब पौवारह बेगम साहिबा ।
सातवीं—नवाब तीनतेरह बेगम साहिबा ।

इक्कीसवाँ जलसा

यह तमाशावालियाँ मशहूर हैं । यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाब ज़रअन्दोह बेगम साहिबा ।
दूसरी—नवाब ज़रपसंद बेगम साहिबा ।
तीसरी—नवाब ज़रदार बेगम साहिबा ।
चौथी—नवाब ज़रनिसार बेगम साहिबा ।
पांचवीं—नवाब ज़रकशां बेगम साहिबा ।
छठी—नवाब नादिरा बेगम साहिबा ।
सातवीं—नवाब मरियम बेगम साहिबा ।

बाइसवां जलसा

ये मुसाहेबीन मशहूर हैं । यह भी सात इस्म हैं—

पहली—नवाब कजकलां बेगम साहिबा ।
दूसरी—नवाब खुर्शीदकला बेगम साहिबा ।
तीसरी—नवाब क़मरकलां बेगम साहिबा ।
चौथी—नवाब जर्रीकलां बेगम साहिबा ।
पांचवीं—नवाब नाजुककलां बेगम साहिबा ।
छठी—नवाब सिराकलां बेगम साहिबा ।
सातवीं—नवाब अंजुमकलां बेगम साहिबा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीगर ममतुआत

पहली—नवाब आबेरसां बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब आबदार बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब अबा बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब आबेकशां बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब साफ़दिल बेगम साहिबा।

छठी—नवाब तजल्ली बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब राफ्त बेगम साहिबा।

आठवीं—नवाब सलोनी बेगम साहिबा।

नवीं—नवाब मुसफ्फ़ा ख़िसाल बेगम साहिबा।

दसवीं—नवाब आईना जमाल बेगम साहिबा।

जानना चाहिए कि 'ज़ेरे-तालीम-राक़िम-ता-तहरीरे-हाजा'[1] तैंतालिस इस्म[2] हैं। सभी जलसे मिलाकर दो सौ सोलह इस्म गाने-नाचने वाली, अल्लाहुम्मा-ज़्द[3] माशाअल्लाह चश्मबद्दूर ता-तहरीर-किताब हाजा[4] राक़िम[5] के पास हर वक्त व हर सायत व हर लमहा मौजूद हैं। मगर मुलाक़ात और सोहबत और हिकायत हर रोज़ उन्हीं से होती है, जो तैंतालिस इस्म मेरे ज़ेरे तालीम हैं।

जुमला 8598 रुपए मशहिरा[6] हुए। पन्द्रह कलावन्त मुग़न्नी[7] हुए एक खमटीवाला और दो पखावजी, तेईस तबलानवाज़, छयालिस सारंगी नवाज़, बाईस मजीरा नवाज़, एक नै नवाज़, छह रक्क़ास, एक शुआबदेबाज़, दो ढोलक नवाज़, एक सुरसिंगार बाज़, उन्नीस लोग नक्क़ार ख़ाने में और छह सुरूर महफ़िल मुलाज़िम हैं। चश्मेबद्दूर तनख्वादार तीन हज़ार दो सौ इकसठ रुपया महीना के और राक़िम की सरकार में जो डोमनियाँ औरतें हैं उनके सुरूरे महफ़िल और जो उनके मर्द हैं उनको बहारे-महफ़िल कहते हैं।

---

1. इस कृति के लिखने तक लेखक की शिक्षा में, 2. नग, 3. अल्लाह की दया से, 4. प्रस्तुत पुस्तक लिखने तक, 5. लेखक, 6. तनख्वाह, 7. नर्तक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ख़िताब महलात और बेगमात और ख़िताब शहज़ादगान ज़कूरून्नास और साहबाने आलमपसन्द

राक़िम[1] की अज़वाज[2] जो माशाअल्लाह चश्मेबद्दूर इस वक्त मौजूद हैं, सिवाए उन महलात और बेगमात के कि जो अपने-अपने जलसा-ए-रक्स व ग़िना[3] और रहस के लयगईया[4] हैं और शहज़ादगान ज़कूरून्नास सिवाय उनके जो अपनी-अपनी उम्हात[5] के साथ लग गए हैं और बहुएँ और खवेश[6] और पोता-पोती, नाती-नवासा और साहिबाने आलमपसन्द जो लब्ज दौला से मुमताज़[7] हैं, मय उनके ख़िदमत मुफ़व्विज़ा के जो-जो ख़िताब इनायत हुए हैं, सब तहरीर में आते हैं।

ख़िताब महलात[8]
ख़िताब बेगमात[9]
ख़िताब ममतुआत[10]
ख़िताब शहज़ादों के[11]
ख़िताब शहज़ादियों के[12]
ख़िताब बहुओं के[13]
ख़िताब दामादों के[14]

ख़िताब मुरशिद ज़ादगान व मुरशिद ज़ादेहा

मुरशिद ज़ादगान जन्नत नशी[15]
मुरशिद जादगान जरनल साहब बहादुर[16]

---

1. लेखक, 2. पत्नियां, 3. नाच-गाने के जलसे में, 4. लग गई हैं, 5. कुटुम्ब के साथ, 6. दामाद, 7. सुशोभित, 8. सैंतालिस महलों का नामकरण किया गया है। ऐसी बेगमें जो मां बन जाती थीं उन्हें महल का खिताब दिया जाता था, 9. बत्तीस बेगमों के नाम दिए गये हैं, 10. चार ममतुआ के नाम दिए गए हैं, 11. चौबीस शहज़ादों के नाम दिए गए हैं, 12. तेईस शहज़ादियों के नाम दिए गए हैं, 13. पांच बहुओं के नाम दिए गए हैं, 14. दो दामादों के नाम दिए गए हैं, 15. चार के नाम दिए गए हैं, 16. दो के नाम दिए गए हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुरशिद जादगान मिर्ज़ा जहाँ क़द्र बहादुर[1]
मुरशिद जादगान आसमान जा[2]
मिर्ज़ा कमरक़द्र के मुर्शिदज़ादे[3]
मुरशिद ज़ादा कुराह हसन मिर्ज़ा बहादर[4]
मुर्शिदज़ादा मिर्ज़ा खुश बख्त बहादर[5]
ख़िताब साहबाने आलम पसंद जो लब्ज दुलाई से मुमताज़ हैं[6]
ख़िताब बाग के दारोगाओं के[7]

फ़सल दूसरी

इस फ़सल में जानवरों के ख़िताब में जो मेरी सरकार पुरइख्तसार[8] में ता-तहरीरे-किताबे हाज़ा[9] सन् बारह सौ बान्नवे हिजरी तक जानवरों के क़फ़स ख़िताब इनायत हुए हैं कि जिसमें सिवाए राक़िम[10] के दूसरे की फ़िक्र को दख़ल नहीं, वो भी बराए-याददाश्त[11] और जहत कैफ़ियत नाज़रीन हवालए इस्तग़ासा रक़म[12] कर दिए गए।[13]

क़िस्म पहली : (47 बुलबुलों का नामकरण)
क़िस्म दूसरी : जल खुश तकल्लुम(81 का नामकरण)
क़िस्म तीसरी : कस्तूरी (22 बुलबुलों का नामकरण)

---

1. तीन के नाम दिए गए हैं, 2. चार के नाम दिए गए हैं, 3. तीन के नाम दिए गए हैं, 4. एक का नाम दिया गया है, 5. एक का नाम दिया गया है, 6. दरबारियों के नाम दिए गए हैं, जो कि पूरा एक मंत्रिमण्डल था और नवाब के शासनकार्य के विभिन्न विभागों को सम्हाले हुए था, 7. इससे ज्ञात होता है कि उस ज़माने में आठ प्रसिद्ध बाग थे, जिनके लिए आठ दारोग़ा व्यवस्था के लिए रखे गए थे, 8. छोटी-सी, 9. प्रस्तुत किताब लिखने तक, 10. लेखक, 11. याद रखने के लिए, 12. पाठकों को सही हालात बताने के लिए लिखे गए हैं, 13. वाजिद अली शाह का शब्दकोश कितना व्यापक था, इसकी जानकारी जानवरों के ख़िताब से मिलती है। संगीत-नाट्य के साथ वे पशु-पक्षी प्रेमी भी थे और इसमें भी उनकी कलात्मक अभिरुचि का दिग्दर्शन होता है। अनेक पशु-पक्षी के नामकरण में संगीत-नाट्य की शब्दावली का प्रयोग किया गया है; जैसे—सुरदार, जलतरंग, गज़लख्वान, मुरचंग, ढोलक, आदि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क़िस्म चौथी : स्यामा (20 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म पांचवीं : पिद्दा (12 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म छठी : दहेड़ (12 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म सातवीं : चंडोल (12 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म आठवीं : अगन (8 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म नवीं : गुलाल चश्म (6 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म दसवीं : अबलक़ा (10 बुलबुलों का नामकरण)

क़िस्म ग्यारहवीं : (9 का नामकरण)

क़िस्म बारहवीं : मलागीर (7 का नामकरण)

क़िस्म तेरहवीं : पीलक (8 का नामकरण)

क़िस्म चौदहवीं : धौले (9 का नामकरण)

क़िस्म पन्द्रहवीं : तोते (8 का नामकरण)

क़िस्म सोलहवीं : कुलचड़े (10 का नामकरण)

क़िस्म सत्रहवीं : नुई (6 का नामकरण)

क़िस्म अट्ठारहवीं : मुर्ग़ फ़िरंग (6 का नामकरण)

क़िस्म उन्नीसवीं : कांगड़ा (10 का नामकरण)

क़िस्म बीसवीं : मैना (8 का नामकरण)

क़िस्म इक्कीसवीं : भिंगराज (6 का नामकरण)

क़िस्म बाईसवीं : भूकता (2 का नामकरण)

क़िस्म तेईसवीं : पपीहा (5 का नामकरण)

क़िस्म चौबीसवीं : ग़ौग़ाई (9 का नामकरण)

क़िस्म पच्चीसवीं : लाल सुर्ख़ (3 का नामकरण)

क़िस्म छब्बीसवीं : दुर्राज (7 का नामकरण)

क़िस्म सत्ताईसवीं : लोवा (6 का नामकरण)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क़िस्म अठ्ठाइसवीं : दामा (4 का नामकरण)

क़िस्म उन्तीसवीं : कोयल (दो का नामकरण)

क़िस्म तीसवीं : कनेरी (दो का नामकरण)

क़िस्म इकतीसवीं : बया (चार का नामकरण)

क़िस्म बत्तीसवीं : हवाई (दो का नामकरण)

क़िस्म तेंतीसवीं : गुलदम (आठ का नामकरण)

क़िस्म चौंतीसवीं : ख़ास अर्दली के जानवरों की (11 का नामकरण)

क़िस्म पैंतीसवीं : मुताफ़र्रिक़ात[1] (1 का नामकरण)

क़िस्म छत्तीसवीं : ख़िताब ताज़ीख़ाना अंग्रेज़ी ज़बान में (आठ का नामकरण)

क़िस्म सैंतीसवीं : ख़िताब गाऊ खाना ख़िताबे नरगावां (छह् का नामकरण)
ख़िताब मादा गाऊवां (तीन का नामकरणण)
ख़िताब मादा गाऊवां (सात का नामकरण)

इस प्रकार सोलह् ख़िताब गाऊख़ाना के हुए।

क़िस्म अड़तीसवीं : ख़िताब कबूतरख़ाना मयनाम (32 का नामकरण)

क़िस्म उन्तालिसवीं : ख़िताब मेढाख़ाना (3 का नामकरण)

क़िस्म चालीसवीं : ख़िताब मछलियों के मय क़ौम (29 का नामकरण)

क़िस्म इकतालिसवीं : संग पुश्त (तीन का नामकरण)

क़िस्म बयालिसवीं : शुतुर—नर तथा मादा (छह् का नामकरण)

क़िस्म तेंतालिसवीं : दरख़्त (333 का नामकरण)

क़िस्म चवालिसवीं : ख़िताब कोठियों और कमरों के और ख़िताब कुछ ज़िलों के, बाग़ों के, तालाबों के, आदि-आदि

---

1. विभिन्न।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कानूने अख़्तरी

हिफ़्ज़-इस्मत[1] मर्द व ज़न[2] और हिदायत बेगमात के वास्ते मुश्तमिल[3] ऊपर आठ दफ़ा के—

दफ़ा पहली

किसी ग़ैर मर्द नामहरम के मुंह पर नज़रें न डालें, ख्वाह पेशेमालिक[4] न पीठ पीछे।

दफ़ा दूसरी

ग़ैर मर्द नामहरम से बात करते वक्त अपनी नज़रें नीची रखें ख्वाह मालिक के सामने ख्वाह ग़ैबत में।

दफ़ा तीसरी

जो शख्स मालिक के रूबरू बैठता हो, किसी ज़रूरत के वक्त अगर उनके सामने भी बैठ जाए कोई हर्ज नहीं सिवाए वैसे शख्स लायक़ के और किसी नामहरम मर्द को क़रीब बैठाने की इजाज़त नहीं।

दफ़ा चौथी

किसी ग़ैर महरम मर्द को गिलौरी पान की देने की इजाज़त नहीं।

दफ़ा पांचवीं

किसी नामहरम मर्द को हुक्क़ा पिलवाने की इजाज़त नहीं।

दफ़ा छठी

किसी ग़ैर मर्द नामहरम का नाम न लो। ख्वाह पेशे[6] मालिक ख्वाह पसे मालिक बल्कि उस फ़िरक़े के नाम से उसे पुकारो यानी कोई आदमी है या कोई कबूतरबाज़ या जानवरबाज़ या दारोगा या बाग़बान या मकानदार या माही परवर वग़ैरा। यह न कहो कि नाम तो नवाब अली है प्यार से कहो कि नब्बू या फ़लाँ या बेग या ख़ान इधर आओ या मीर साहब या मिर्ज़ा साहब या शेख़ साहब इधर आइए।

---

1. याद रखने के योग्य, 2. औरत, 3. आधारित, 4. न मालिक के सामने, 5. बराबर, 6. सामने।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दफ़ा सातवीं

किसी नामहरम ग़ैर मर्द के दस्त-बदस्त[1] कोई चीज़ न लो वल्कि लाने वाला ज़मीन या उस जगह पर बआराम व हिफ़ाज़त धर दे। बाद उसके अपने हाथ से उठाकर लेने वाली अपने मसरफ़[2] में लाएं।

दफ़ा आठवीं

ग़ैर मर्द नामहरम जो रूमालों से फ़र्श को साफ़ करें ता नामहरम औरतें उनको सफ़ाई की खुद जगह दे दिया करें। ऐसा न हो कि किसी का हाथ उनके जिस्म से सफ़ाई के वक्त मस[3] हो तो बाएसे[4] नाखुशी मालिक और ग़ज़बे खुदा हो। चाहिए कि इन आठों हिदायतों को हर वक्त मद्देनज़र[5] रखें ताखाविन्द[6] और खुदावन्द[7] दोनों खुशनूद[8] हों और दुनियाँ का कार भी बंद न रहे। अगर तुम सबों को पर्दे में बिठा दिया जाए तो किसी क़द्र तुम्हारे ख़ाविन्द को अलबत्ता बेचैनी होगी और अजब नहीं कि उस बेचैनी की इ्लत से तुम लोग अपने ख़ाविन्द की मुलाक़ात से माज़ूर हो जाओ और अगर इस हिदायत पर चलोगी तो अपने ख़ाविन्द के पहलू में रहोगी बल्कि हर वक्त दिल में घर होगा। खुदा तुम औरतों का हादी[9] है।

ऊपर क़ही गई दफ़ाओं पर मुश्तमिल हर वजीह व शरीफ़ मुलाज़िमों के लिए भी कुछ हिदायत की जाती हैं। यह हिदायत छः दफ़ाओं में है—

दफ़ा पहली

अपने मालिक की औरत पर नज़र जमाके न देखे बल्कि जो कुछ कहना हो नीची नज़रों से कहे।

दफ़ा दूसरी

अगर अपने मालिक के रूबरू बैठते हो तो कभी वक्ते ज़रूरत अपने मालिक के आगे भी बैठो।

---

1. आमने-सामने हाथ से, 2. प्रयोग, 3. स्पर्श, 4. कारण, 5. ध्यान से, 6. जिससे पति, 7. अल्लाह, 8. प्रसन्न, 9. मालिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दफ़ा तीसरी

गिलौरी और हुक्क़ा नामहरम औरतों से न मांगो और ब-सबब एहतराम अपने मालिक के उनके आगे भी न खाओ पियो।

दफ़ा चौथी

किसी मालिक की औरत का नाम आधा न लो और हिक़ारत से न लो।

दफ़ा पांचवीं

कभी नामहरम औरत के दस्त बदस्त[1] कोई चीज़ न दो, न लो बल्कि कहो कि रख दीजिए मैं उठा लूंगा।

दफ़ा छठी

फ़र्श झाड़ो तो ख्याल रहे कि हाथ तुम्हारे उनके किसी अज़ो[2] से मस[3] न हो जाएं कि मौजिब[4] तुग़यान[5] और कुफ़्[6] हो।

जब इन छहों चीज़ों को बजा लाओगे—कभी धोखा न खाओगे। अगर तुम्हारा मालिक अपनी कुल औरतों को पर्दे में बिठा दे तो किसी क़दर उसे बेचैनी भी होगी और तुम ज़ियारत[7] से महरूम रहोगे। अगर उन छहों चीज़ों को हर वक्त याद रखोगे, तो ख़ाविन्द[8] और ख़ुदावन्द[9] दोनों राज़ी रहेंगे और मोरिदेजज़ाओ-आफ़रीन[10] दीन व दुनियां में होंगे। बस ख़ुदा तुम सभों को राह बताने वाला है। बस। मज़ीना हेजदहुमु (अठारह) शहर-सफ़र-उल-मुज़फ्फ़र 1294 हिजरी।

बीस दफ़ाएं बेगमात सुल्तानख़ाना मुबारक और जवाहर मंज़िल और ख़ास मंज़िल के अहकामात[11] के वास्ते—

---

1. हाथों हाथ, 2. अंग, 3. स्पर्श, 4. कारण, 5. क्रोध, 6. अधर्म, 7. देखने से, 8. पति, 9. अल्लाह, 10. परिणाम के भोगी, 11. आज्ञाओं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दफ़ा पहली

हमेशा अपने को ख़ुश रखें।

दफ़ा दूसरी

धोया हुआ, उजला कपड़ा जो कुछ सरकार से मिलता है या अपनी लियाक़त के हिसाब से जैसा बनाया हो पहना करें। ज़नहार, मैली और धब्बेदार और फटी पोशाक ख्वा पैजामा, ख्वा दुपट्टा, ख्वा छोटे कपड़े न पहना करें वरना जिनके सुपुर्द हैं और जो उनके एहतिमाम[1] वाले हैं, उनसे मुआवज़ा[2] होगा तो वही दारोग़ा लोग उसके जवाबदेह[3] होंगे।

दफ़ा तीसरी

पोशाक में और हाथों में और मुंह में हर्गिज़-हर्गिज़ किसी तरह की बदबू न आने पाये।

दफ़ा चौथी

पांव और तलवे हमेशा आइने की तरह साफ़ और चमकते रहें। किसी तरह का मैल और आख़ोर न हुआ करे।

दफ़ा पांचवीं

बालों में ख़ुशबू, रौग़न और आंखों में काजल या सुरमा, हाथों में मेंहदी पहुंचो तक हमेशा रहा करे।

दफ़ा छठी

जो क्वांरियां हैं, वो बग़ैर हुक्म अपने आप मिस्सी न मलें। जो मल चुकी हैं, उनका मुज़ाएक़ा[4] नहीं।

दफ़ा सातवीं

कोई बुलाक़[5] छेदने का क़स्द[6] न करे। कतई मनाही है।

---

1. प्रबन्ध करने वाले, 2. बदला, 3. उत्तरदायी, 4. कोई हर्ज, 5. नाक के बीच की हड्डी, 6. कोशिश।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दफ़ा आठवीं

कोई तम्बाक़ू खाने और हुक्क़ा पीने का क़स्द न करें मुमानियत हमेशा के लिए है।

दफ़ा नवीं

कोई पैरों पर उंगलियों की या पांव के नाखूनों पर या हथेली या तलवों में किसी तरह मेंहदी का नक्श व निगार, जिसे फन्दक कहते हैं, न बनाए। क़तई मनाही है।

दफ़ा दसवीं

बुलाने के वक्त कोशिश करें, जल्दी हाज़िर हुआ करें।

दफ़ा ग्यारहवीं

बेबाक और बेहिजाब हाज़िर हुआ करें।

दफ़ा बारहवीं

मिज़ाजपुर्सी[1] में एक जवाब दस को और सौ को और एक को काफ़ी है। अलबत्ता जो बाद जवाब देने के नहीं आयेंगी और मिज़ाज या हाल पूछेंगी, उसे दूसरा जवाब दिया जाएगा।

दफ़ा तेरहवीं

मैं तुम्हारे आमदोरफ्त के देखने को फ़क़त जवाहर मंज़िल और ख़ास मंज़िल में आकर बैठा करता हूं। अब तुम साहबों ने यह रवैया और शेवा अख्तियार किया कि अक्सर मेरे सामने का चलना-फिरना बचा जाती हो बल्कि अक्सर बा-नज़र-ज़रूरत[2] कोई जाए ज़रूरी जाना भी है तो वहां से फिर पलटकर मेरी दहशत[3] से अपने मकान पर नहीं आता है बल्कि वल्लाहोआलम[4] और किधर चला जाता है। जैसा कि एक दिन नवाब सबीहा बेगम साहिबा और नवाब अल्लाह जलाई बेगम साहिबा मेरे सामने से मिज़ाज पूछकर बैतुलखला गईं। शायद

---

1. कुशल पूछते समय, 2. ज़रूरत के समय, 3. डर, 4. अल्लाह जाने।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक बजा हो दिन का फिर मैं चिराग़ तले तक राह[1] देखा किया और वे अपने मकान में पलटकर न आईं और मुझे बुरा मालूम हुआ। इसीलिए सभी को लाज़िम[2] है कि अपनी आमदोरफ्त ज़रूरी से गाहे-हमारी आँखों को महरूम न रखा करें कि हमको मौजिब खुशनूदी है, न बाएसे नाराज़ी अलबत्ता दूसरे के मकान में रह जाने की मनाही है। सीधी जाओ और अपने घर को पलटकर आओ।

दफ़ा चौदहवीं

जब ख़िलवत[3] में हमारे पास आओ, चुप न बैठो। किसी न किसी तरह की बातें ज़रूर हमसे किए जाओ वरना बायसे[4] निहायत नाराज़ी का होगा और उस वक्त अपने दिल पर जब्र न करो। दिल चाहे बैठो, दिल चाहे लेटो।

दफ़ा पन्द्रहवीं

खाना पकाने के वक्त का गुल[5] हमारे दिमाग़ को इस दर्ज़ा बेचैन करता है कि दूसरी दफ़ा खाना पकवाने का हौसला नहीं पड़त। बस जो हमारा ताबेदार[6] हो वो उस वक्त गुल न किया करे।

दफ़ा सोलहवीं

गाहे नाख़ून बढ़े न हों। हर जुमा नाखून तरशवाओ।[7]

दफ़ा सत्रहवीं

हंसी की बात पर हंसा करो। बेसबब न हँसा करो।

दफ़ा अट्ठारहवीं

सबसे बड़ी उम्मीद यह है कि अपनी ख़्वाहिश-नापसंदी[8] को बेहिजाब[9] फ़ौरन हमसे कहना भेजा करो कि हमारा दिल फ़क़त इस पैग़ाम से पहाड़ हो जाएगा। ख़्वा हम बुलायें ख़्वा हम न बुलायें।

---

1. इन्तिज़ार, 2. ज़रूरी है, 3. समागम के समय, 4. कारण, 5. शोर, 6. सेवक, 7. करवाओ, 8. नापसंदी की इच्छा, 9. निःसंकोच।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दफ़ा उन्नीसवीं

जो इल्म सिखाएं, उसे बरग़बत[1] दिल से सीखो। उस वक्त बिला-ज़रूरत घड़ी-घड़ी पेशाब का बहाना न करो। अगर पेशाब को जाओ तो उसमें कोई और तरह का खाना-पीना, कूदना-उछलना न करो। पान बहुत कम खाओ। दांतों को लाल करता है और मुंह की बू को बुरा करता है। छालियां, डली आवाज़ की दुश्मन है। अगर हमारे कहने पर दारोग़ा लोग बेगमात को चलायें तो हम एहसानमन्द उन ओहदादारों के होंगे।

दफ़ा बीसवीं

दो उंगल-खड़ाऊँ ज़मीन से ऊँची हो। इसमें दारोग़ा लोग ऐहतिमाम से बनवा दिया करें। अगर इसमें ख़िलाफ़ हुआ तो एक खड़ाऊँ जुर्माना होगा।

अगर इन बातों पर अमल किया तो कुछ बेहतरी बहुत बड़ी जो उन साहिबों के वास्ते तज़वीज़ में है वो अमल में आएगी और दर सूरत ख़िलाफ़ा कुछ उम्मीद नहीं।

मरकूम हेजदहुम सफ़र-उल-मुज़फ़र 1294 हिजरी।

हिजरी सन् 1294 माह सफ़र की अट्ठारह तारीख को लिखी गई।

---

1. पूरे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट—एक

रचनाकाल लिखने और निकालने के सम्बन्ध में

अक्षरों को इस प्रकार जोड़ना कि शब्दों का अर्थ भी न बदले और शब्दों का प्रयोग इस सुन्दरता से हो कि शायरी की कला दिखाई दे और उसके वसूलों का उल्लंघन न हो, जो भाव शायर व्यक्त करना चाहता हो वह भी स्पष्ट हो, इन कठिनाइयों को नज़र में रखते हुए किसी वस्तु के काल के विषय में लिखना दुष्कर है।

किसी पुस्तक का रचनाकाल, किसी इमारत या महल का निर्माण काल, किसी बच्चे के जन्म का समय, किसी व्यक्ति विशेष की मृत्यु के समय अथवा किसी वस्तु के सन् के विषय में उर्दू में सदैव ही कहा जाता रहा है। उर्दू शायरी की इस कला को 'तारीख़-कहना' कहा जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तुत पुस्तक के अन्त में लगभग पन्द्रह पृष्ठों पर इसी का बखान है। इन पन्द्रह पृष्ठों में कलकत्ता के मटियाबुर्ज में बनने वाले महलों, भवनों, तालाबों, विभिन्न मंज़िलों—जैसे जवाहर मंज़िल, शारदा मंज़िल, सुरूर मंज़िल, शहंशाह मंज़िल, सुल्तान खाना आदि—की सन् तारीख़ विभिन्न शायरों ने अपने-अपने अन्दाज़ में कही है।

अनेक स्थानों पर चार-चार पंक्तियाँ, जिसे उर्दू में क़ता कहते हैं, इस प्रकार कही गयी हैं कि उसकी एक पंक्ति से हिजरी सन्, दूसरी से बंगला, तीसरी पंक्ति से ईसवी और चौथी से विक्रमी सन् निकलते हैं। इस प्रकार के संकेत भी उनमें दिये हैं कि किस प्रकार किस पंक्ति से कौन संवत् निकाला जा सकता है।

जवाहर मंज़िल के सन् के विषय में भी चार पंक्तियां कही गयी हैं जिससे उसकी सन् तारीख़ 1283 फसली, 1283 बंगला, 1875 ईस्वी, संवत् 1933 विक्रमी और 1293 हिजरी निकलती है।

इसी प्रकार इस पुस्तक के रचनाकाल के विषय में भी अनेक शायरों ने सन् तारीख़ कही है जिसकी एक लम्बी सूची भूमिका में दी जा चुकी है। उन सब शायरों के कहे हुए शेर (दो पंक्तियां), क़ता (चार पंक्तियां) या चौमिसरा (चारं पंक्तियों) से एक ही सन् तारीख निकलती है—पहली पंक्ति से 1875 ई०, दूसरी पंक्ति से 1877 ई० और तीसरी पंक्ति से 1878 ई०।

इन तीन विभिन्न सन् तारीख से स्पष्ट होता है कि बनी 1875 ई० में लिखना आरम्भ की गयी तथा 1877 ई० में यह पूर्ण हो गयी। इसका रचना काल 1875 ई० से 1877 ई० तक दो वर्ष का है। 1877 ई० में ही इसकी प्रेस कापी तैयार हुई और 1878 ई० में प्रकाशित हुई एवं जनता में प्रसारित की गयी।

सन् तारीख निकालने की विधि

उर्दू में कुल 36 अक्षर हैं जिनमें 28 मूलक और 8 उपमूलक कहे जाते हैं। मूल अक्षरों की अपनी वास्तविक संख्याएँ हैं। जहाँ भी शब्दों की सांख्यिकी निकालनी होती है इन अक्षरों की इन्हीं संख्याओं का उपयोग किया जाता है। वे मूल अक्षर और उनकी संख्यायें निम्नवत् हैं—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अलिफ़	—1	सीन	—60
बे	—2	ऐन	—70
जीम	—3	फ़े	—80
दाल	—4	सुआद	—90
छोटी हे	—5	क़ाफ़	—100
वाओ	—6	रे	—200
ज़े	—7	शीन	—300
बड़ी हे	—8	ते	—400
तोय	—9	से	—500
ये	—10	ख़े	—600
काफ	—20	ज़ाल	—700
लाम	—30	ज़ुआद	—800
मीम	—40	ज़ोए	—900
नून	—50	ग़ैन	—1000

दिये हुये शेर, क़ता या विभिन्न पंक्तियों से किस प्रकार सन् निकाला जाता है, इसे निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। रहस मंज़िल के सन्-तारीख़ के विषय में एक क़ता इस प्रकार है—

हुज्जाब क़सरे अनवर किसरा तवार व क़ैसर।
आईना दार सुलतान दार ओश व सिकन्दर।
मेअमार क़सरे गरदूँ ख़ल्लाक अर्शे आज़म।
मोहकम ज़कोह दार व बुनियाद उम्र अख्तर।

पहली पंक्ति

पहली पंक्ति को ध्यान से पढ़ने पर उसमें निम्नलिखित अक्षर प्राप्त होते हैं—

हे, जीम, अलिफ़, बे, क़ाफ़, सुआद, रे, अलिफ़, नून, वाओ, रे, क़ाफ़, सीन, रे, ये, ते, बे, अलिफ़, रे, वाओ, क़ाफ़, ये, सुआद, रे। इन अक्षरों में वे अक्षर जिन पर नुक़ते लगते हैं वे यह हैं—जीम, बे, क़ाफ़, नून, ये, ते, बे, क़ाफ़, ये। यदि इन अक्षरों को ऊपर दिये अक्षरों में से निकाल दिया जाए, तो हमारे पास कितने अक्षर शेष रह जाते हैं—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वड़ी हे, अलिफ़, सुआद, रे, अलिफ़, वाओ, रे, काफ़ [सीन, रे, वे, अलिफ़, रे,[वाओ, सुआद, रे ।

इन सारे अक्षरों की अलग-अलग संख्या पिछली सूची में दी हुई है । इन दी हुई संख्याओं के आधार पर जोड़ने पर—

बड़ी हे	— 8
अलिफ़	— 1
सुआद	— 90
रे	—200
अलिफ़	— 1
वाओ	— 6
रे	—200
क़ाफ़	— 20
सीन	— 60
रे	—200
अलिफ़	— 1
रे	—200
वाओ	— 6
सुआद	— 90
रे	—200
कुल	1283

अत: ये सन् 1283 फसली निकला । इसी प्रकार दूसरी पंक्ति की गणित से 1283 बंगला निकलता है ।

तीसरी पंक्ति

तीसरी पंक्ति में निम्नलिखित अक्षर हैं—

मीम, ऐन, मीम, अलिफ़, रे, फ़े, सुआद, रे, काफ़, रे, दाल, वाओ, नून, ख़े, लाम, अलिफ़, क़ाफ़, ऐन, रे, शीन, अलिफ़, ऐन, ज़ोए, मीम ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पंक्ति में ऐसे अक्षर जिनमें नुक़ता है उनकी संख्या छः है—फे, नून, ख़े, क़ाफ़, शीन, ज़ोए । इन छह अक्षरों को इस पंक्ति के कुल अक्षरों से निकाल देने पर शेष अक्षर इस प्रकार है : मीम, ऐन, मीम, अलिफ़, रे, सुआद, रे, क़ाफ़, रे, दाल, वाओ, लाम, अलिफ़, ऐन, रे, अलिफ़, ऐन, मीम । प्रत्येक अक्षर की दी हुई संख्या जोड़ने पर—

मीम	— 40
ऐन	— 70
मीम	— 40
अलिफ़	— 1
रे	—200
सुआद	— 90
रे	—200
क़ाफ़	— 20
रे	— 200
दाल	— 4
वाओ	— 6
लाम	— 30
अलिफ़	— 1
ऐन	— 70
रे	—200
अलिफ़	— 1
ऐन	— 70
मीम	— 40
कुल	1283

इस पंक्ति द्वारा भी सन् 1283 फसली की संख्या निकलती है । इसी प्रकार चौथी पंक्ति से संवत् 1933 वि० निकाली जा सकती है ।

अनेक दिलचस्प विधियों से सन् तारीख निकालने की यह सबसे सरल विधि है । इसके अतिरिक्त अनेक अन्य विधियां भी हैं जिनके विषय में यहाँ बहस करना उचित न होगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट--दो

फारसी शेरों के अर्थ या भावार्थ के सम्बन्ध में

पाँचवें अध्याय में अनेक नक़लें उच्च स्तरीय संगीत व नृत्य का पुट लिये और साहित्यिक हैं। पर एक नक़ल जिसका पूरे अध्याय में ही नहीं वरन् नक़ल कला के क्षेत्र में भी अत्यधिक महत्व है, वह है शायरों की नक़ल।

किसी सामाजिक चरित्र की नक़ल करना और उसके माध्यम से व्यंग्य करना ही नक़ल कला का रूप रहा है और शायर का भी समाज से कोई पृथक अस्तित्व नहीं है। उसकी नक़ल करना बहुत सरल और हास्यात्मक है। पर यह नक़ल उन सारी नक़लों से कुछ अलग हटकर है। यह एक ऐसी नक़ल है जिसका साहित्य में भी अपना स्थान है।

इस नक़ल में 52 शायर हैं—26 उर्दू के और 26 फ़ारसी के। पूरे के पूरे 52 शायर वास्तविक चरित्र हैं, एक भी काल्पनिक नहीं और सबके अपने अलग-अलग शेर हैं। एक शायर के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पढ़ने का तर्ज़ दूसरे से भिन्न है। उनका वैठने का तरीका एक है पर आंखे चलाने का सलीका एक नहीं। अनेक ऐसी बातें हैं जो एक शायर के चरित्र को दूसरे शायर के चरित्र से स्पष्टतया अलग करती हैं। इसलिये इस नक़ल का महत्व और भी अधिक है।

26 शायरों के शेर फ़ारसी में हैं और उनमें से हर शेर में कोई न कोई दर्शन है। इसके भावार्थ या अर्थ बताने के लिये अधिक पृष्ठों की आवश्यकता होगी, किन्तु पुस्तक के सीमित कलेवर को देखते हुये उन शेरों का भावार्थ दे पाना सम्भव नहीं है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संदर्भ

1. कर्नल स्लीमैन के पत्र —हेनरी एलियट, सचिव गवर्नर जनरल के नाम
—सर जेम्स के नाम
—कर्नल लू के नाम
2. अवध, इट्स प्रिसेज एण्ड इट्स गवर्नमेन्ट विनडिक्टेड —मौलवी मसीहुउद्दीन काकोरवी
3. अवध अण्डर वाजिद अली शाह —जी० डी० भटनागर
4. अवध ब्लू बुक
5. एटीन फ़िफ्टी सेवेन —सुरेन्द्रनाथ सेन
6. ए जर्नी थ्रू दी किंगडम ऑफ अवध —कर्नल स्लीमैन
7. ब्रिटिश एग्रेशन इन अवध —सफ़ी अहमद
8. वर्ड्स आई व्यू ऑफ इण्डिया —सर अर्सकिन पेरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

9. डकैती इन इक्सेलसिज़ —मेजर आर० डब्लू० वर्ड
10. रिप्लाई टू दी चार्जेज़ अगेन्स्ट दी किंग ऑफ अवध —वाजिद अली शाह
11. हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया —जे० सी० मार्शमैन
12. वाजिद अली शाह एण्ड दी किंगडम ऑफ अवध —मिर्ज़ा अली अजहर बिरलास
13. दी प्राइवेट लाईफ़ ऑफ ऐन ईस्टर्न किंग —विलियम नाइटन
14. दी प्राइवेट लाईफ ऑफ़ ऐन ईस्टर्न कुइन —विलियम नाइटन
15. ए० कनसाइज़ हिस्ट्री ऑफ़ इण्डियन प्यूपिल —एच० जी० रॉबिन्सन
16. आउट लाइन ऑफ़ दी इंग्लिश हिस्ट्री —सैम्वेल आर० गारडेनर
17. ब्रिटिश रेज़ोडेन्स ऐट दी कोर्ट ऑफ अवध —सफ़ी अहमद

उर्दू

18. सुलताने आलम वाजिद अली शाह —प्रो० मसूद हसन अदीब
19. हुज्ने अख्तर—मूल वाजिद अली शाह —संकलन: अमजद अली खां
20. चमनिस्ताने मुजफ्फ़र
21. वाजिद अली शाह और उनका अहद —रईस अहमद जाफ़री
22. इसरारे वाजिदी —वाजिद अली शाह
23. आफ़तावे अवध —मिर्ज़ा मोहम्मद तक़ी
24. लखनऊ का शाही स्टेज —प्रो० मसूद हसन अदीब
25. लखनऊ का अवामी स्टेज —प्रो० मसूद हसन अदीब
26. तारीखे इक्तिदारिया —इक्तिदार-उद्-दौला
27. मौसीक़ी —प्रो० असद उल्ला खां कौकब
28. मदानुल मौसीकी —हकीम करम इमाम
29. बोस्ताने अवध —राजा दुर्गा प्रसाद संदेलवी
30. इन्द्रसभा —आग़ा हसन 'अमानत'
31. अफ़ज़ल-उल-तवारीख —मुन्शी राम सहाय 'तमन्ना'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संदर्भ

32. जाने आलम —अब्दुल हलीम 'शरर'
33. दस्तूरे वाजिदी —वाजिद अली शाह
34. क़ैसरुल तवारीख (दूसरा भाग) —सैय्यद कमालउद्दीन हैदर
35. गुज़श्ता —अब्दुल हलीम शरर
36. मसनवी दरयाए ताश्शुक़ —वाजिद अली शाह
37. मसनवी अफ़साना-ए-इश्क़ —वाजिद अली शाह
38. मुल्के अख्तर —वाजिद अली शाह
39. नाजो —वाजिद अली शाह

हिन्दी

40. वाजिद अली शाह —आनन्द सागर श्रेष्ठ
41. सन् सत्तावन —पंडित सुन्दर लाल
42. सिंहासन बत्तीसी
43. सांगीत : एक लोकनाट्य-परम्परा —रामनारायण अग्रवाल
44. वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन —परिपूर्णानन्द वर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	ग़लत	सही
3	अन्तिम	अम्या मेरा	अय्याम रा
5	20वीं	झूमरी	झूमरा
11	पहली	बहारे उल्फ़त	बहरे उल्फ़त
12	15वीं	नहीं	यहीं
16	दूसरी	मुसबिफ़	मुसन्निफ़
17	छठी	सोमे जना	सोम ज़ना
27	21वीं	असमाई	अस्रमाई
33	10वीं	मैरवी	भैरवी
34	अन्तिम	तिसल	तिसूल
46	18वीं	राग व ताल ऐज़न	राग ऐज़न
49	8वीं	डाला	डाला रे
50	13वीं	भी हो	भय हो
55	फ़ुटनोट	1	2
		2	1
57	21वीं	बैरा	बांरा
60	छठी	से	सा
77	—	तीसरी ठग गत	ठेंगा गत
81	10वीं	उस्ताद	उफ्तादा
86	5वीं	मरकमा	मरक़ूमा
93	14वीं	नहीं वे	नक़ीवे
96	7वीं	ये	पे
109	12वीं	नजोदिया	नज़रिया
131	8वीं	अशिमाए नौ	अशिभाए नौ
138	छ़ठी	ग़ुसश्ता	गुज़श्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाजिद अली शाह

संगीत, नृत्य और नाट्य-कलाओं में पारंगत अवध के आख़िरी नवाब वाजिद अली शाह का जीवन कलाओं के लिए ही समर्पित रहा। साहित्य और ललित कलाओं के विकास में उनकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। गद्य और पद्य दोनों पर उनका अच्छा अधिकार था और वे अपनी रचनायें 'अख़्तर' के नाम से करते थे। जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुये उन्होंने सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनमें से लगभग 40 उपलब्ध हैं। उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं—हुज्ने अख़्तर, परीख़ाना, मसनवी अफ़साना-ए-इश्क़, कुल्लियात-ए-अख़्तर, बहार-ए-उल्फ़त, दरिया-ए-ताश्शुक़, सौतुल मुबारिक़, नसाइहे अख़्तरी, चंचल नाज़नीन, रिसालदार बयान, अहले बैत, जौहरी उरूज, बनी, नाजो, दुल्हन आदि। इनमें उनकी आत्मकथा है, संगीत है, शेर-ओ-शायरी है, रहस व नाटक भी हैं। संगीत के क्षेत्र में 'बनी', 'दुल्हन', 'नाजो' तथा 'सौतुल मुबारिक़' महत्वपूर्ण हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi